RNI No. – UTTHIN/2019/78500

Azim Premji Foundation

उम्मीद जगाते शिक्षक

अर्द्धवार्षिक, देहरादून, वर्ष–1, अंक–2, फरवरी 2020

बरगद, मध्यप्रदेश

साल, छत्तीसगढ़

बुरांस, उत्तराखण्ड

खेजड़ी, राजस्थान

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का प्रकाशन

उम्मीद जगाते शिक्षक

Ummeed Jagate Shikshak

अर्द्धवार्षिक, देहरादून, वर्ष–1, अंक–2, फरवरी 2020

सम्पादक

कैलाश चन्द्र काण्डपाल

सम्पादकीय सहयोग

सिद्धार्थ जैन, मध्यप्रदेश
पुरूसोत्तम ठाकुर, छत्तीसगढ़
वीरेन्द्र शर्मा, राजस्थान
अशोक कुमार मिश्र, उत्तराखण्ड
मदन मोहन पाण्डेय, उत्तराखण्ड
प्रतिभा कटियार, उत्तराखण्ड
प्रदीप चन्द्र डिमरी, उत्तराखण्ड

डिजाइन

बिजेन्द्र बलोनी

प्रकाशक

Azim Premji Foundation

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
134, डोडाकन्नेली, निकट विप्रो कॉरपोरेट कार्यालय,
सरजापुर रोड, बंगलौर 560035

प्रकाशन स्थल

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
आनंद टावर, द्वितीय तल, 2 सहस्रधारा रोड, देहरादून–248001, फोन/फैक्स– 0135–2782864
ई–मेल : ujs@azimpremjifoundation.org

पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार और मत लेखकों के अपने हैं। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का शैक्षणिक और गैर व्यवसायिक कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसके लिए लेखक एवं प्रकाशक से अनुमति लेना एवं स्रोत का उल्लेख अनिवार्य है।

विषय सूची

1.	सम्पादकीय		4
2.	ये पेड़ उगाने वाले शिक्षक	अनुराग बेहार	6
3.	स्कूल से जाने का मन नहीं करता	जगदीश दफौटी	9
4.	हर बच्चा सीख सकता है	ओमपाल प्रजापति	16
5.	प्रयोग जो प्रेरणा देते हैं	प्रेरणा सनाढ्य	20
6.	अपनी भाषा में अभिव्यक्ति के जरिए ही शिक्षा का सफर आसान किया जा सकता है	गणेश चौहान	24
7.	बदलाव संभव है	दयाराम साहू	29
8.	सीखने-सिखाने के लिये जरूरी है कई विकल्पों का होना	इंदु पंवार	33
9.	शिक्षक होने के असल मायने	राकेश वैरवा	38
10.	बच्चों के साथ काम करके भी सीखते हैं शिक्षक	रामेश्वर प्रसाद लोधी	42
11.	सपनों को लगाए पंख	गीता नौटियाल	50
12.	आसान नहीं था पढ़ाई का सफर	रीता माहेश्वरी	55
13.	आनन्ददायी शिक्षण	रेखा शर्मा	61
14.	आदिवासी बच्चों को अंग्रेजी सिखाने का सफर	अंजली गर्ग	64
15.	शिक्षण एक सामाजिक जिम्मेदारी भी है	रेखा पुरोहित	69
16.	मुश्किल जैसा कुछ भी नहीं	विजय प्रकाश जैन	75
17.	बालजीवन संवारता शिक्षक	हेमंत चौकियाल	81
18.	बच्चों के नामांकन बढ़ाने की पहल करता एक स्कूल	विश्वजीत सिंह कुशवाह	86
19.	जैसे कोई सपना जी रहा था मैं	वंशीधर जोशी	92

सम्पादकीय...

असरकारी शिक्षक....

हम सभी जानते हैं कि अधिकांश शासकीय स्कूलों में एक या दो शिक्षिकाएं या शिक्षक ही पदस्थ होते हैं और वे आपस में मिलकर सभी कक्षाओं एवं सभी विषयों पर बच्चों के साथ कार्य करते हैं। कई बार ऐसी भी स्थिति आती है जिसमें एक ही शिक्षक को कुछ दिनों के लिए सभी कक्षाओं एवं विषयों पर कार्य करना होता है। ऐसी स्थितियों में एक शिक्षक सीखने–सिखाने की तैयारी कैसे करते हैं या बच्चों के साथ कार्य करने हेतु किस प्रकार योजना बनाते हैं। 'उम्मीद जगाते शिक्षक' के इस अंक की विषय वस्तु इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित है।

हमारे साथियों को 'उम्मीद जगाते शिक्षक' की कहानियां लिखने में स्कूल के उन पूर्व छात्रों ने भी मदद की है जो अपने शिक्षक की कहानी सुनाने स्कूल आये और बोले कि "ये वो भगवान हैं जिनमें हम भरोसा करते हैं और हम यह आपको बताने के लिए यहां आये हैं"। जब हमारे साथी स्कूल से जाने लगे तो फिर वे शांत शिक्षक अपने विद्यार्थियों के बारे में बोले कि– "उनका विश्वास मत करिए, ये सब कुछ बढ़ा–चढ़ा कर बताते हैं, वे बस बहुत अच्छे बच्चे हैं"।

शिक्षकों का मानना है कि हर कोई बच्चा कक्षा में सीखने की प्रक्रिया से जुड़कर सीख सकता है। वे अपनी बातचीत में विमर्श करते हैं कि बच्चों को क्या सिखाना है? क्यों सिखाना है? और कैसे सिखाना है? वे बच्चों के साथ ऐसे तालमेल से काम करते हैं कि वे बिना डरे अपनी बात कह पाते हैं। वे शिक्षण को एक पेशे से भी ऊपर एक सामाजिक उत्तरदायित्व समझते हैं और बच्चों से भी सीखते हैं। वे अपने स्कूल का संचालन बच्चों, पालकों, पंचायत, आमजन के साथ मिलकर करते हैं और जब वे स्कूल के बाद घर जा

इस दौरान....

कोविड–19 के दौरान स्कूल बंद हैं और बच्चों का सीखना प्रभावित हो रहा है। इस दौरान बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं और शिक्षक साथी इस चुनौतीपूर्ण माहौल में अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा के साथ निभा रहे हैं। ऐसे ही एक शिक्षक हैं श्री रामेश्वर प्रसाद लोधी जो शासकीय प्राथमिक शाला कल्याणपुर, राहतगढ़, सागर, मध्यप्रदेश में शिक्षक हैं। रामेश्वर जी ने कोविड–19 के समय में अपनी सूझ–बूझ और परिजनों के सहयोग से गाँव में पुस्तकालयों को स्थापित किया है। फिलहाल गाँव के 3 क्षेत्रों में पुस्तकालय चलाए जा रहे हैं। शिक्षक रामेश्वर जी के यह प्रयास इन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में बच्चों के बेहतर सीखने को सुनिश्चित करने की उम्मीद जगा रहे हैं।

उनके काम की झलक देखने के लिए इस लिंक को क्लिक करें

https://youtu.be/G9rRS-Azcx4

रहे होते हैं तो अभिवावक घर के द्वार पर उनकी बाट जोहते हैं और अपने बच्चों की पढ़ाई पर बात करते हैं। वे विषयों की बीच की दूरी कम करने के लिए घंटी बजाते ही नहीं है, बच्चों को पूछते हैं कि 'आज क्या पढ़ें? उन्होंने स्कूल को एक कार्यशाला का रूप दिया है जहां बच्चे विषयों को प्रयोग द्वारा सीखते हैं।

उनका मानना है कि जब बच्चे अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं तो उनके सीखने का सफर आसान हो जाता है। वे बिना रोक–टोक के बच्चों को पढ़ने के लिए किताबों से दोस्ती करने के खूब मौके देते हैं और चित्रों पर घर की भाषा में बातचीत करने के लिए प्रेरित करते हैं तब बच्चे हिन्दी ही नहीं अंग्रेजी को भी चाव के साथ सीखते हैं। वे बच्चों के साथ सुर मिलाकर गीत गाते हैं। गणित सिखाने के लिए वे परिवेश के ठोस अनुभवों से बच्चों के जुड़ाव के साथ अभ्यास करते हैं जिसमें गणितीय तर्क की ओर बच्चों को बढाने का प्रयास रहता है। वे अपने स्कूल के आहते में ईवीएस सिखाने के लिए 'पक्षी दर्शन' शुरू करते हैं और डा. सालिम अली की पुस्तकें स्कूल में मंगाते हैं। वे बच्चों को तैयार करते हैं कि वे अपनी रूचि और मर्जी से आगे पढ़ें और विषय चुनें।

'उम्मीद जगाते शिक्षक' के अभी तक प्रकाशित अंकों के माध्यम से हमने हमेशा यह बात रखने की कोशिश की है कि ऐसे शिक्षकों की संख्या सीमित नहीं है। हम अपनी पत्रिका के अंकों में कुछ ही शिक्षक साथियों को स्थान दे पाते हैं लेकिन साथ ही उन सभी शिक्षकों के प्रति सम्मान का भाव रखते हैं जो अपने कर्तव्य पथ पर डटकर सार्वजनिक शिक्षा के प्रति आशा के भाव को जीवित रखे हुए हैं।

आपसे अपेक्षा रहेगी कि आप इस अंक के बारे में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजेंगे तथा अपने सुझावों से हमें अवगत कराते रहेंगे।

आपका साथी

कैलाश चन्द्र कांडपाल

नजरिया

ये पेड़ उगाने वाले शिक्षक !

– अनुराग बेहार

सीईओ, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन तथा वॉइस चांसलर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

ये तीन बड़े से पेड़ हर चीज पर छाए हुए थे। उनकी ऊंचाई के बराबर इस पथरीले सपाट मैदान में और कोई भी चीज नहीं थी। जैसे ही हम स्कूल के पास पहुंचते जा रहे थे, वे पेड़ कई किलोमीटर दूर से ही दिखाई देना शुरू हो गए थे। वे लगभग साठ फीट ऊंचे थे और स्कूल के मैदान के किनारे पर एक कतार में खड़े हुए थे। हम स्कूल की इमारत के पहले तल पर पेड़ों की छाया में बैठ गए। नीचे के तल पर दो कमरे थे, जिनमें एक से लेकर आठवीं तक कक्षाएं चल रही थीं। उन सभी आठ कक्षाओं के 53 बच्चों के इकलौते शिक्षक हमारे साथ कमरे के एक कोने में चुपचाप बैठे हुए थे। उन्होंने बच्चों को कुछ कार्य दिया हुआ था, ताकि वे हमारे साथ इस संक्षिप्त बातचीत में हिस्सा ले सकें।

वह छोटा सा कमरा स्कूल के पूर्व छात्रों से भरा हुआ था, जिनकी संख्या 17 थी। जिनमें से लगभग तीन, दस घंटे की रात भर की बस यात्रा करके स्कूल पहुंचे थे। बाकी के सभी एक या दो घंटे की यात्रा सार्वजनिक बसों या अपने दोपहिया वाहन से करके पहुंचे थे। उनमें से बस दो ही अब इस गांव में रहते थे। जैसे–जैसे परिचय का दौर बढ़ा वैसे–वैसे मेरी उलझन भी बढ़ती गई। ये सभी नौजवान यहां क्यों आए? वो भी घंटों की यात्रा करके। जैसे मैं हर महीने कई स्कूल विजिट करता हूं वैसे ही मेरे लिए तो यह एक साधारण स्कूल यात्रा ही थी। मेरी अपेक्षा में तो शिक्षक, बच्चों और बहुत हुआ तो समुदाय के कुछ लोगों से बात करना शामिल था। यह किसी तरह का कोई समारोह तो था नहीं।

इस बात का उत्तर बेहद आसान था। शिक्षा में रूचि रखने वाला, उनके इलाके से बाहर का कोई व्यक्ति, बरसों बाद उनके स्कूल में पहुंचा था। वे चाहते थे कि उनके स्कूल की कहानी भलीभांति सुनाई जाए। वे इस बात के लिए इस शिक्षक, जो उनके भी शिक्षक रह चुके थे, पर यकीन नहीं करते थे। इसलिए वे सब खुद यहां आए ताकि अपने स्कूल के बारे में बता सकें।

बहुत पुरानी बात है जब वे सब बच्चे थे, तब स्कूल में कोई और शिक्षक पढ़ाया करते थे। वे बच्चों का ध्यान रखने वाले और दयालु थे। जब वे थे उन दिनों स्कूल की जिन्दगी उत्साह और खुशी से भरी हुई थी। वे उन्हें अच्छे से पढ़ाते थे और बच्चों का ध्यान भी रखते थे। वे न सिर्फ उनकी शिक्षा का बल्कि उनके स्वास्थ्य और उनके परिवार के बारे में भी चिन्तित रहते थे। एक दिन शिक्षक और

उनके बच्चों ने तीन पौधे रोपने का फैसला किया। उन्होंने बादाम का पेड़ चुना। यह तो याद नहीं कि क्यों, शायद इसलिए क्योंकि इतने पथरीले, गर्म और सूखे वातावरण में कोई बादाम के पेड़ों की कल्पना नहीं कर सकता। स्कूल में जिंदगी मजे और व्यस्तता में निकलती रही। वे पेड़ों की देखभाल करते रहे जो हरे बैंगनी और फिर सलेटी हो गए जैसा कि बादाम के पेड़ों के साथ होता है। लेकिन अगले ही वर्ष उन्होंने एक तूफान का सामना किया। उनके शिक्षक का तबादला दूसरे सरकारी स्कूल में कर दिया गया और उनकी जगह लेने के लिए दो नए शिक्षक इस स्कूल में लाए गए। एक शिक्षक को किसी बात से कोई मतलब नहीं था दूसरे क्रूर स्वभाव के थे। इन दोनों ने इसके बाद की उनकी सभी स्मृतियों को मिटा दिया था। सिर्फ एक साल में ही तीस में दो के अलावा सभी बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया, कुछ ने पास के गांव के सरकारी स्कूल में दाखिला ले लिया और कुछ स्कूल से ड्राप आउट हो गए।

बहुत पुरानी बात है जब वे सब बच्चे थे, तब स्कूल में कोई और शिक्षक पढ़ाया करते थे। वे बच्चों का ध्यान रखने वाले और दयालु थे। उन दिनों स्कूल की जिन्दगी उत्साह और खुशी से भरी हुई थी। वे उन्हें अच्छे से पढ़ाते थे और बच्चों का ध्यान भी रखते थे। वे न सिर्फ उनकी शिक्षा का बल्कि उनके स्वास्थ्य और उनके परिवार के बारे में भी चिन्तित रहते थे। एक दिन शिक्षक और उनके बच्चों ने तीन पौधे रोपने का फैसला किया। उन्होंने बादाम का पेड़ चुना। यह तो याद नहीं कि क्यों, शायद इसलिए क्योंकि इतने पथरीले गर्म और सूखे वातावरण में कोई बादाम के पेड़ों की कल्पना नहीं कर सकता। स्कूल में जिंदगी मजे और व्यस्तता में निकलती रही।

उन्होंने स्कूल तो छोड़ दिया था, लेकिन पेड़ों को नहीं छोड़ा था। वे उनकी देखभाल करते रहे उन्हें पानी देते रहे, छंटाई करते रहे और उन्हें बचाते रहे और पेड़ बढ़ते रहे।

साल निकला और गर्मियों में उन दोनों शिक्षकों का तबादला कर दिया गया। उनकी जगह ये शांत शिक्षक आए जो अभी हमारे साथ कमरे के कोने में बैठे हुए थे। उन्होंने अपने दो बच्चों और तीन पेड़ों की सुध ली। ये दो बच्चे हर दिन उनके बारे में गांव में चर्चा करते थे। वे बच्चे जो पेड़ों की देखभाल करते थे उन्होंने देखा कि उनके पेड़ों की देखभाल की जा रही है। तब शिक्षक ने उन बच्चों से जाकर बात की जो सारा दिन खेतों में घूमते थे, बकरियां चराते थे या यूं ही घुमक्कड़ी किया करते थे। उनसे भी जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया था। शिक्षक ने उन्हें स्कूल आने के लिए मनाया।

एक के बाद एक वे सभी वापस आ गए। उनके पीछे वे भी वापिस आए जिन्होंने दूसरे स्कूलों में नाम लिखवा लिया था। इस शांत आदमी के बारे में यह सुनकर, जो किसी बच्चे जितना ही दयालु था और किसी भी बच्चे को सब कुछ सिखा सकता था, एक साल के भीतर पास के गांवों से बच्चे वापिस आए। जब सबसे बड़े बच्चों का समूह कक्षा पांचवी में पहुंचा तब सरकार ने स्कूल को आठवीं कक्षा

तक बढ़ा दिया ताकि बच्चे उसी स्कूल में उसी शिक्षक के साथ रहें। किसी भी अतिरिक्त शिक्षक की पदस्थापना नहीं की गई।

यह शिक्षक हफ्ते के सातों दिन स्कूल को जारी रखते थे और आठों कक्षाओं को पढ़ाते थे। समय के साथ सबसे बड़े बच्चे आठवीं कक्षा से उत्तीर्ण होकर पास के हाई स्कूल में दाखिला ले चुके थे। हालांकि उन्होंने सचमुच स्कूल नहीं छोड़ा था। वे सभी रविवार को शाम को और छुट्टियों के दिनों में वापिस आते थे ताकि उनके शिक्षक उन्हें पढ़ा सकें। एक दशक से ज्यादा समय बीत गया, इस शांत आदमी ने अपना काम हर दिन जारी रखा जैसा कि इतने वर्षों से होता आया था। स्कूल में जिन्दगी लगभग वैसी ही चल रही थी।

लेकिन उनके वह छात्र जो यहां इकठ्ठा हुए थे, उनके लिए जिन्दगी वैसी नहीं थी, और न ही उनके लिए जो यहां नहीं थे। अब जो उनका जीवन है वे उसकी कल्पना इस छोटे गरीब से त्रस्त गांव में कर भी नहीं सकते थे। उनमें दो, जो यहां दस घंटों की यात्रा करके पहुंचे थे, एक वैश्विक आई.टी. कंपनी में काम करते थे। तीसरा डॉक्टर था, बाकी सत्रह में से पुलिस इंस्पेक्टर, सफल व्यापारी, शिक्षक, लोक सेवक यहां तक कि एक उभरता हुआ नेता भी थे।

हम यहां आपको यह कहानी सुनाने के लिए ही आए हैं। यह वह भगवान हैं जिनमें हम भरोसा करते हैं। और हम ही यह आपको बता सकते हैं इसलिए हम यहां हैं। वे (शिक्षक) अपनी कुर्सी पर बैठे हुए बैचैनी से छटपटा रहे थे और मौका मिलते ही उन्होंने बातचीत के बीच में कक्षा में जाने का बहाना किया।

जब हम वापिस जाने लगे तो वे (शिक्षक) हमें छोड़ने कार तक आए और अपनी कोमल और उज्जवल मुस्कान फैलाई जैसे वे अपने बच्चों के साथ हों, और कहा– उनका विश्वास मत कीजिए सर, वे सब कुछ बढ़ा–चढ़ा कर बताते हैं। वे बस बहुत अच्छे बच्चे हैं। जैसे–जैसे हमारी कार ने गति पकड़ी पीछे देखने पर सब कुछ धुंधला पड़ने लगा लेकिन वे तीनों पेड़ नहीं धुंधलाए। कुछ भी एक महान ऊंचाई तक पहुंच सकता है अगर आप बस भरपूर देखभाल करें तो।

साभार– सुबह–सवेरे, 27 मार्च 2020

स्कूल से जाने का मन नहीं करता

जगदीश दफौटी
प्रधानाध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
घिंघारतोला, बागेश्वर, उत्तराखण्ड

भोजन माता – हेमा नगरकोटी
नामांकन – 23

सड़क से थोड़ी दूर चलने पर एक गेट खुलता है, एक विशाल प्रांगण व सुंदर सी बगिया झाँकती दिखाई देती है। विद्यालय के चारों ओर सुंदर फूल मुस्कुराते हैं और एक सुंदर सी बगिया लहलाती है। यहाँ पहुंचते ही सकारात्मकता का अहसास छूने लगता है, विद्यालय का माहौल इतना उन्मुक्त है और बच्चों का आत्मविश्वास इस कदर छलकता है कि बच्चों को आप कक्षा–कक्ष में या कक्षा के बाहर भी मजे से नाचते–गाते, गीत बनाते देख सकते हैं। ये बच्चे अपने भीतर की तमाम सृजनात्मकता बिखेरने को व्याकुल नजर आते हैं। प्राथमिक विद्यालय घिंघारतोला जिला मुख्यालय से 21 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। विद्यालय में बच्चों को खेलने के लिए एक विशाल खेल का मैदान है, जहां चारों ओर से विभिन्न पौधे लगे हुए हैं जो विद्यालय की सुंदरता को बढ़ाने के साथ–साथ बच्चों के पढ़ने–लिखने मे सहायक होते हैं। प्रत्यके बच्चे की जिम्मेदारी होती है कि वह पौधों की देखभाल करे, उनका रख–रखाव करे। यहाँ पर तीन कमरे, एक ऑफिस व एक बरामदा है। एक कमरे में बच्चों के लिए पुस्तकालय स्थापित किया गया है जहां पर बच्चे अपनी मन पसंद की पुस्तकें पढ़ते हैं। बच्चों ने कौन–कौन सी पुस्तकें पढ़ी हैं इसका विवरण दीवार पर लगे चार्ट से देखा जा सकता है।

यहाँ पर बच्चे प्रोजेक्टर के माध्यम से विभिन्न प्रकार की बाल फिल्म, व दृश्य सामग्री का आनंद लेते हैं जो उनके सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में मदद करती हैं। विद्यालय का वातावरण काफी आनंददायक है। बच्चे समूह में काम करते हैं, कुछ बच्चे कलात्मक सामग्री का निर्माण करते हैं, कुछ कहानी–कविता पढ़ते हैं, कुछ दीवार पत्रिका के लिए लेख लिखते हैं। यदि विद्यालय की सम्पूर्ण दिनचर्या का अवलोकन किया जाए तो देखा जा सकता है कि यहाँ पर बाल केन्द्रित वातावरण का निर्माण होता दिखाई देता है। बच्चे शिक्षक के साथ सवाल–जवाब करते हैं किसी विषय पर अपनी राय रखते हैं। विद्यालय को सुचारू रूप से व्यवस्थित करने के लिए जो नियम बनाए जाते हैं उनमें बच्चों की महत्वपूर्ण भागीदारी होती हैं। नियम बनाने व उनका पालन करने में शिक्षक व बच्चे दोनों की जिम्मेदारी होती है जैसे– खाना खाने से पहले जूते चप्पल उतारना आदि। यह नियम जितना बच्चों के लिए अनिवार्य है उतना ही शिक्षक के लिए भी। यदि कभी किसी नियम का पालन नही किया जाता है तो उस पर बच्चों के साथ फिर से बातचीत की जाती है और उनको ध्यान दिलाया जाता है कि जो नियम हमने बनाए हैं वह विद्यालय को बेहतर बनाने में किस प्रकार से सहायक होते

हैं। बच्चे इतने उत्साह के साथ विद्यालय में रहते हैं कि यदि उन से पूछा जाए कि आप घर क्यों नही जा रहे हो तो वह कहते हैं कि हमें अपना स्कूल अच्छा लगता है यहाँ से जाने का मन नहीं करता है।

सर ने बताया कि जब से वह इस विद्यालय में आए हैं तब से वे एकल शिक्षक रहे हैं। उन्होंने 2001 से शिक्षा मित्र के माध्यम से शिक्षा में अपना योगदान देना शुरू कर दिया था। इससे पहले उन्होंने दिल्ली महानगर में अपनी सेवा दी थी। वे 2001 से 2010 तक राजकीय प्राथमिक विद्यालय नायल में कार्यरत रहे। इसके बाद 3 महीने प्राथमिक विद्यालय सिरोली में कार्य किया। वे प्राथमिक विद्यालय घिंघारतोला में चार साल से बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में संलग्न हैं, उन्होंने बताया कि जब वह इस विद्यालय में आए तब यहाँ पर 16 बच्चे थे और वर्तमान में इस विद्यालय में 23 बच्चे हैं। जब से शिक्षा में काम किया है तब से अपने काम में आनंद आने लगा है। मैं शिक्षक के पद को सम्मान की दृष्टि से देखता हूँ, और मुझे लगता है कि मैं इसी के लिए बना हूँ।

वर्तमान में हम सरकारी शिक्षकों के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं, एक तरफ तो हमें इन चुनौतियों का सामना करना है, दूसरी तरफ समाज को अच्छा परिणाम चाहिए ताकि लोगों का सरकारी शिक्षा पर विश्वास कायम रहे। इन चुनौतियों को फेस करना उन से जूझना मुझे अच्छा लगता है क्योंकि उसका परिणाम काफी सुखद होता है। यदि हम मन लगाकर काम करते हैं तो कोई भी विषय कठिन नहीं होता है। शिक्षा में जो भी चुनौतियाँ आती हैं वह मुझे आगे बढ़ने में सहायता करती हैं। हमेशा सीखने की इच्छा मन में रहती है। जब भी कहीं कुछ नया मिलता है तो सोचता हूँ इसे मैं अपने विद्यालय में बच्चों के साथ कर सकता हूँ। किताबों के प्रयोग करके खुद भी सीखा और इसी सीखने की इच्छा ने मुझे फिर से पढ़ने के लिए प्रेरित किया और मैंने अपने शिक्षण कार्य के साथ–साथ M.A. 'शिक्षा' एवं बी.एड. किया। हमें अपनी शिक्षा को या अपने सीखे हुए ज्ञान को निरंतर अपडेट करते रहना चाहिए, क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसी जगह है जंहा यदि हम खुद को अपडेट नहीं कर पाए तो हम बहुत पीछे हो जाएंगे और हम बहुत पीछे हो गए तो हमारे साथ–साथ वह बच्चे भी पीछे हो जाएंगे जो भारत का भविष्य हैं।

अपने बचपन के बारे में सर ने बताया कि मैं पढ़ने वाला बच्चा नहीं था, किताबें कम पढ़ता था किन्तु कक्षा में ध्यान से सुनता था। यह मेरी प्रवृत्ति रही है। पारिवारिक जीवन ग्रामीण परिवेश में बीता, गाँव के पास सरकारी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। उनका मानना है कि विद्यालय में बच्चों के मानसिक विकास के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण महत्वपूर्ण है, ताकि बच्चे खुद करके सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में आगे पढ़ पाएँ। एकल शिक्षक होने के कारण वे विभागीय प्रशिक्षण में प्रतिभाग नहीं कर पाते हैं। मन में एक चिंता भी रहती थी कि कैसे खुद को अपडेट रखूँ? इस चिंता ने मेरे लिए बहुत सारे रास्ते खोले और मैं विभिन्न संस्थानों से जुड़ा, उनके संपर्क में रहा, उसके बाद मन की हलचल थोड़ी कम हुई। मैंने स्वैछिक प्रशिक्षण अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन अल्मोड़ा में प्रतिभाग किया, 'आर्ट इन एजुकेशन' प्रशिक्षण के माध्यम से मैंने सीखा कि संगीत एवं कला का शिक्षा में होना कितना जरूरी है। शिक्षा में ही नहीं अपितु हमारे जीवन में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

इस कार्यशाला के बाद मैंने अपने विद्यालय में संगीत एवं कला को महत्वपूर्ण स्थान दिया। इसके माध्यम से बच्चों की रुचियों को जानने में आसानी हुई इससे बच्चे खुलकर प्रतिभाग कर पा रहे थे। लगभग चार साल से ग्रीष्मकालीन व शीतकालीन कार्यशाला में प्रतिभाग करते हुए अपने शिक्षण को और बेहतर बनाने के लिए बहुत सारी चीजें सीखीं। पढ़ने से ही पढ़ना आता है यह बात मन व दिमाग मे बैठ गई थी। अब इसके लिए जद्दोजहद शुरू कर दी। विद्यालय में बच्चों के साथ मिलकर सफाई की। बक्से मे बंद पड़ी किताबों को खोला और पढ़ने की घंटी पर बच्चों के साथ काम शुरू कर दिया। यह भी एक प्रक्रिया है कि कैसे बच्चे शब्दों को पढ़ते हैं, वाक्य कैसे बनाते हैं, कैसे वह अपने संसार में भाषा को गढ़ते हैं। मेरे लिए यह समझना किसी आश्चर्य से कम नहीं था। एकल अध्यापक के लिए अपने काम को आसान और रोचक बनाने के लिए पुस्तकालय काफी महत्वपूर्ण हैं। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों मे पढ़ने का विकास हुआ आज मेरे विद्यालय के सारे बच्चे पढ़ पाते हैं। इस गतिविधि को करने के बाद महसूस हुआ कि हम क्यों अपनी किताबों तक ही सीमित रहते हैं, यदि हमारा उद्देश्य बच्चों को पढ़ना सिखाना है तो उसके लिए माध्यम कोई भी हो सकता है जिससे बच्चे आसानी से सीख जाएँ और उनका सीखा हुआ ज्ञान स्थायी रहे। इस गतिविधि के माध्यम से बहुत सारे मूल्यों का विकास होता है और इसे मैंने बच्चों के साथ काम करते हुए महसूस किया है, जैसे– समूह में काम करना, एक दूसरे की मदद करना, किताबों को सुरक्षित रखना, जिम्मेदारी लेना व उसका पालन करना। आज हमारे विद्यालय में प्रत्येक माह दीवार पत्रिका निकलती है जिसमें अलग–अलग अंक होते हैं जैसे– हिन्दी भाषा विशेषांक, इंग्लिश भाषा विशेषांक (त्रैमासिक), चित्र, कहानी, कविता आदि।

तीन साल लगातार पुस्तकालय पर काम करने के बाद आज मेरे विद्यालय में स्थिति इस प्रकार से है कि बच्चे कहानियां, यात्रा वृतांत, अपने आस–पास के अनुभव लिखना और किताबों में लिखी कहानियों को आगे बढ़ाते हैं। एक शिक्षक होने के नाते हमें लगता है कि बच्चे ने कहानी शुद्ध नहीं लिखी है किन्तु जिस दिन हमारा नजरिया बदल जाता है उस दिन हम काफी आगे बढ़ जाते हैं। यह मेरे साथ भी हुआ। शुरुआत में मैंने बच्चों की गलतियों को नजरअंदाज किया और आज बच्चे अपने अनुभव लिखते हैं। जब हम शिक्षा में काम करते हैं तो हमारे उद्देश्य काफी बड़े होने चाहिए। हम शिक्षा में काम करते हैं तो हमारा उद्देश्य है संविधान में लिखे मूल्यों का पालन करना व उन मूल्यों को जीना, उनकी रक्षा करना। और यह मूल्य हमारी शिक्षा व्यवस्था में विषय के माध्यम से बुने हुए होते हैं। मेरा उद्देश्य होता है कि मैं इन मूल्यों को जीना सीखूँ और बच्चों को समझा सकूँ कि हमारे मूल्य कितने महत्वपूर्ण होते हैं। अपने दैनिक क्रियाकलाप के माध्यम से मुझे एक दिन इन मूल्यों पर सोचने की आवश्यकता पड़ी। विद्यालय की छुट्टी होने ही वाली थी और हमें नजदीक के अन्य विद्यालय में किसी कार्यक्रम में प्रतिभाग करना था। इस बीच मैंने बच्चों से कहा कि आप उस विद्यालय में जाओ और मैं भोजन माता के साथ मिलकर विद्यालय बंदकर दूंगा। मेरे लिए यह बोलना तो आसान था किन्तु इस पर कार्य करना कठिन था। उस दिन मुझे अहसास हुआ कि विद्यालय का

सामान समेटना और उसे व्यवस्थित करना कितना कठिन काम है। बच्चे इसे आसानी से कर लेते हैं। हम बच्चों को निर्देश देते हैं कि ये सामान रख दो किन्तु बच्चों को इस कार्य को करने मे कितना कठिन परिश्रम करना पड़ता है। मैंने सोचा कि हमारा चरित्र दोहरा है। एक तरफ तो हम बच्चों को मूल्य सिखाने वाले हैं और दूसरी तरफ हम उन मूल्यों को जीते ही नही हैं।

शिक्षक एक रोल मॉडल है बच्चों के लिए। बच्चे शिक्षक की गतिविधियों से सीखते हैं और हमारी गतिविधियां इस प्रकार की होती हैं कि बच्चे सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि जो हमें सिखा रहे हैं वही इस पर काम नही करते हैं। इसके बाद मैंने निर्णय लिया कि बच्चों के साथ मिलकर कार्य करूंगा व जिन मूल्यों का पालन बच्चों को करने के लिए कहूँगा पहले स्वयं उस पर काम करूंगा। हम अक्सर बच्चों को रटा देते हैं कि 'सदा सत्य बोलना चाहिए', किन्तु हमें यह देखना पड़ेगा कि बच्चे ने इसे याद कर लिया या उसे अपने जीवन में प्रयोग कर रहे हैं। जिस समाज में हम रह रहे हैं वहाँ पर इन मूल्यों को देख पाना थोड़ा कठिन है। बचपन से ही हम ऐसे समाज मे जीते हैं जहां पर हमारा दोहरा चरित्र होता है हमें समझ मे नही आता है कि आखिर सही क्या है। हालांकि बचपन से बने विश्वास जब टूटते हैं तो उनके टूटने का थोड़ा दर्द तो होता है किन्तु इन पर काम करना मेरे शिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विद्यालय समुदाय का है और इसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी भी समुदाय की है इसका विश्वास दिलाने के लिए मैंने समुदाय के साथ संपर्क बनाना शुरू किया। बच्चों की गतिविधि को अभिभावक देखें, शिक्षक को फीडबैक दें इसके लिए अभिभावक निरंतर विद्यालय में आते हैं, विद्यालय की गतिविधियों में प्रतिभाग करते हैं। समुदाय मिलकर विद्यालय के रख–रखाव के लिए नियम बनाते हैं। जैसे– यदि विद्यालय मे लंबा अवकाश है तो गमलों के रख–रखाव की जिम्मेदारी समुदाय की होती है। प्रत्येक अभिभावक कुछ–कुछ गमलों को अपने घर मे रखते हैं और उसके बाद विद्यालय खुलने पर इन गमलों को यहीं रख लेते हैं।

समुदाय किस प्रकार से बच्चों के पढ़ने–लिखने में मदद करता है इसका उदाहरण यहाँ पर देखने को मिला है। समुदाय की मदद के माध्यम से बच्चों ने विभिन्न विषयों पर जानकारी एकत्र की, उसके बाद विद्यालय में आकर शिक्षक के साथ उस सामग्री पर चर्चा–परिचर्चा की और उसे चार्ट पर लिखा। इस जानकारी को कैसे समुदाय के साथ साझा किया जाए कि बच्चों के सीखने सिखाने

की प्रक्रिया मे आपका कितना अधिक योगदान है। इसके लिए विद्यालय में एक कार्यक्रम रखा गया जिसे 'बाल शोध मेला' कहा गया जहां पर समुदाय को आमंत्रित किया गया और बच्चों ने विभिन्न विषयों पर प्राप्त जानकारी को अभिभावकों के साथ साझा किया। इस प्रक्रिया मे अभिभावकों ने बच्चों का पूर्णरूप से सहयोग किया। शिक्षक ने बताया कि विद्यालय में विभिन्न गतिविधियां होती हैं। बच्चे श्रम के महत्व को जानें और श्रम करने वाले लोगों के प्रति सम्मान की भावना रखें इसके लिए बच्चों को विभिन्न समूहों में विभिन्न कार्य करने होते हैं जैसे– पौधों की देखभाल करना, क्यारी बनाना आदि।

यहाँ पर घंटी की कोई व्यवस्था नही है, विद्यालय में छुट्टी के समय के बाद भी कक्षाएं संचालित होती हैं। शिक्षक ने बताया कि इस समय उन बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाता है जो कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं में पीछे छूट जाते हैं। किन्तु विद्यालय में सारे बच्चे रहते हैं। इस पर काफी लोगों ने शिक्षक से सवाल किया कि यदि आप छुट्टी के बाद भी बच्चों को स्कूल में रखते हैं तो आपको नही लगता कि सरकार ने जो समय दिया है उससे अतिरिक्त आप बच्चों को विद्यालय मे रखते हैं? जो बच्चे पढ़ने में ठीक हैं उन्हें भी आप विद्यालय मे रोक कर रखते हैं? इस पर शिक्षक ने बताया कि यदि मैं उन बच्चों को, जो बच्चे कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं मे पीछे छूट गए हैं, अतिरिक्त समय के लिए रखता हूँ तो उन्हें यह अहसास होने लग जाता है कि हम अन्य बच्चों कि अपेक्षा थोड़ा कमजोर हैं या अलग हैं। इससे उनमें हीन भावना पैदा हो जाती है। तो वह उनके सीखने पर असर डालती और बच्चे का सीखना अवरुद्ध हो जाता है। कुछ बच्चों को अलग करना समानता के मूल्य के खिलाफ है और मैं इस प्रक्रिया पर काम नही करता हूँ। 2019 शैक्षिक सत्र में इस विद्यालय में कुछ बच्चे नजदीक के प्राइवेट स्कूल से आए हैं, उन बच्चों की दिनचर्या इस विद्यालय की दिनचर्या से थोड़ी अलग रही है। इनको समझना शिक्षक के लिए एक चुनौती है। उनमें से एक बच्चा ऐसा है जिसको पढ़ना–लिखना नहीं आता है वह बच्चा कक्षा चार में पढ़ता है। शिक्षक ने बताया कि मैं इसे एक समस्या के रूप में नहीं देखता हूँ। यह मेरे लिए एक चुनौती है, कि मुझे इस बच्चे को पढ़ना–लिखना सिखाना है। यह अच्छा हुआ कि यह बच्चा मेरे विद्यालय में आया। वरना मुझे इस प्रकार से सोचने का मौका नहीं मिलता। शिक्षक निरंतर सीखते रहते हैं अपने सीखे हुए को अपडेट करते रहते हैं। अपने अनुभवों को लिखने की कोशिश करते हैं। उनके लिखे हुए अनुभव पत्रिकाओं के माध्यम से भी साझा किए गए जैसे– प्रवाह, संदर्भ आदि।

बी.आर.पी. हेम लोहानी – शिक्षक जगदीश दफौटी अपने शिक्षण कार्य मे इतने संलग्न रहते हैं कि वह समय देखना भूल जाते हैं। शिक्षा व बच्चों के प्रति उनका समर्पण काफी सराहनीय है। छुट्टी के बाद व विद्यालय अवकाश के दौरान बच्चों को अतिरिक्त समय देना उनकी प्रक्रिया का हिस्सा बन गया है। बच्चों के साथ उनके स्तर पर जाकर पढ़ाते हैं, वह ऐसे शिक्षक नहीं हैं जो कुर्सी में बैठकर पढ़ाते हैं। वह बच्चों के साथ जमीन में बैठकर पढ़ाते हैं। भाषा पढ़ाने के विभिन्न तरीकों को अपनाते हैं। बच्चों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाते हैं।

संसाधन जुटाने के लिए उनके व्यक्तिगत प्रयास बहुत रहते हैं, अपने व्यक्तिगत प्रयास से बच्चों के लिए प्रोजेक्टर खरीदा ताकि बच्चे आनंद के साथ पढ़ें। यदि वह बी.आर.सी. में आते हैं तो उनकी उम्मीद रहती है कि यहाँ से बच्चों के लिए कुछ सामग्री मिल जाए, हमने उन्हें विभिन्न प्रकार की सी. डी. उपलब्ध कराई हैं और वह उनका उपयोग बच्चों के साथ करते हैं। उनका एक नवाचार है– किताबों का कोना, जिसमें बच्चे अपने मन पसंद की किताबें पढ़ते हैं और किताब पर अपने अनुभव भी लिखते हैं। दीवार पत्रिका पर शिक्षक ने काफी काम किया और करते रहते हैं। शिक्षक सीखने व संसाधन जुटाने को लेकर काफी आगे रहते हैं। शिक्षक के इन प्रयासों से एवं समुदाय का विश्वास जीतने के कारण ही इस विद्यालय में नजदीक के प्राइवेट विद्यालय से 8 बच्चों ने अपना नामांकन करवाया है। शिक्षा विभाग को ऐसे ही शिक्षक की जरूरत है।

(जगदीश दफौटी की मीमांशा गोदियाल से हुई बातचीत पर आधारित)

हर बच्चा सीख सकता है

ओमपाल प्रजापति
प्रधानाध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, नयागांव, (पंवालिया)
टोडारायसिंह टोंक, राजस्थान

सहायक अध्यापिका – माया चौधरी
भोजन माता – रोशन देवी शर्मा
नामांकन – 34

विद्यालय की भौगोलिक स्थिति

टोडारायसिंह ब्लॉक के उत्तर पश्चिम दिशा में मांदौलाई रोड पर स्थित है नयागांव विद्यालय। ब्लॉक मुख्यालय से विद्यालय की दूरी 27 किलोमीटर है। विद्यालय तक पहुंचने के लिए 2 किलोमीटर तक मुख्य मार्ग से पक्की रोड जाती है। गांव में लगभग 45 परिवार हैं। नयागांव में जाट, ब्राहाण, बैरवा समुदाय के परिवारों की लगभग 700 जनसंख्या है, जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। विद्यालय परिसर काफी बड़ा है और स्वच्छ रहता है। विद्यालय में 2 शिक्षक कार्यरत हैं। 23 बच्चों के नामाकंन के साथ लगभग 10 अनामांकित बच्चे विद्यालय से जुड़े हुए हैं ये बच्चे अपने भाई बहिनों के साथ विद्यालय आ जाते हैं और कक्षा 1 के बच्चों के साथ बैठकर ही पढ़ाई–लिखाई का कार्य करते हैं।

विद्यालय में सीखने-सिखाने का माहौल और गतिविधियां

ओमपाल जी अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की गतिविधियों से विगत 2 साल से जुड़कर, सीखने–सिखाने के लिए विभिन्न कार्यशाला व अनौपचारिक मंच का उपयोग करते हैं। वे काफी मेहनती एवं ऊर्जावान हैं। विद्यालय की प्रतिदिन की दिनचर्या में उनके द्वारा बच्चों के साथ किया गया कार्य उनकी इस ऊर्जा को बनाये रखता है। विद्यालय में बच्चों के साथ वे मित्रवत व्यवहार के साथ कार्य करते हैं। यही कारण है कि बच्चे उनसे खुलकर बातचीत कर पाते हैं और शिक्षण में आने वाली समस्याओं को पूछते हैं जिससे यह शिक्षण और सहज दिखाई देता है।

ओमपाल जी प्रार्थना सभा को रोचक बनाने और बच्चों में अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु एक मंच देने के उद्देश्य से कुछ नयी गतिविधियों का समावेश भी कर रहे हैं। इस प्रार्थना सभा में बच्चों को बालगीत, कविता, कहानी सुनने–सुनाने का अवसर दिया जाता है जिससे बच्चों व शिक्षकों के मध्य आपसी रिश्ते सहज बन पाये हैं। इस सभा में की जाने वाली गतिविधियों से बच्चों का सुबह के सत्र में काफी उत्साह बनता है जो निश्चित तौर पर उनके शिक्षण को और प्रभावी बनाता है। विद्यालय में बच्चे स्वअनुशासन की ओर उन्मुख हों इसके लिए शिक्षक समय–समय पर बच्चों के साथ बातचीत कर आम राय से व्यवस्था बनाने में सहयोग लेते हैं। उदाहरणस्वरूप पहले बच्चे कक्षा के बाहर जूते–चप्पलों को ऐसे ही खोल देते थे, इस पर शिक्षक द्वारा प्रार्थना सभा और कालांश में सतत बातचीत कर एक व्यवस्था बनाई गयी कि सभी बच्चे और शिक्षक चप्पल–जूते पंक्ति में उतारें। शुरू में इस कार्य में थोड़ी चुनौती आई पर अब सभी बच्चे इस कार्य में सहयोग करते हैं। विद्यालय की साफ–सफाई में भी यह सहयोग दिखाई देता है।

कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य की प्रकियायें

विद्यालय में बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में दोनों शिक्षक बच्चों के साथ अन्तर्क्रिया करते हुए शिक्षण कार्य करते हैं। शिक्षक ओमपाल जी कक्षा 1 से 5 तक बच्चों के साथ अंग्रेजी व गणित विषय पर कार्य करते हैं। शिक्षक बच्चों के साथ शिक्षण कार्य में अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए पाठयपुस्तक और इसके इतर गतिविधियों का शिक्षण में समावेश करते हैं। शिक्षक के कक्षा अवलोकन में देखा गया कि बच्चो के साथ गणित में संक्रियाओं पर कार्य करने हेतु बच्चों को पहले गोल घेरे में बैठाकर सहज करने की गतिविधि की गई। इसके बाद जोड़ सिखाने के लिए कुछ उदाहरण लेते हुए संवाद किया गया। इस प्रक्रिया में बच्चों के पूर्वज्ञान को जोड़ते हुए संख्या पहचान, स्थानीयमान, संख्या में स्थान के बदलाव की समझ, और फिर साधारण जोड़ से हासिल के जोड़ सिखाने की प्रकिया को समझना था। इसके लिए जहां जरूरत लगती है वहां सहायक शिक्षण सामग्री का भी उपयोग किया जाता है। शिक्षक ने बातचीत में बताया कि आमतौर पर बच्चे संख्याओं को रट लेते हैं जिससे बच्चों में मात्रात्मक समझ नहीं बन पाती। इसके लिए जरूरी है पहले ठोस चीजों से बच्चों के साथ कार्य किया जाये और जब यह अभ्यास ठीक दिशा में हो जाये तब अमूर्त अवधारणाओं की और बढ़ना चाहिये जिससे बच्चे गणित को ठीक से समझ पाते हैं। कक्षा में बच्चों के स्तर को ध्यान में रखते हुए उपसमूह में शिक्षण और तद्नुरूप शिक्षण सामग्री का उपयोग करना जरूरी होता है।

कक्षा में बच्चों के साथ संवाद के दौरान स्थानीय भाषा का उपयोग करते हुए स्थानीय उदाहरण के साथ समझ बनाने का प्रयास किया जाता है। इससे बच्चे काफी सहज हो जाते हैं और उदाहरणों के साथ बातचीत करने से अवधारणा को सही रूप में समझने में भी मदद मिलती है। कक्षा में कार्य के दौरान बच्चों की भागीदारी सीखने–सिखाने में बेहतर बन पाती है।

इसी संदर्भ में विद्यालय में शिक्षिका माया जी द्वारा हिन्दी और पर्यावरण विषय पर कार्य किया जाता है। माया जी बच्चों के साथ भाषा–शिक्षण में स्थानीय भाषा में कहानी सुनाना और बच्चों से कहानी सुनने तथा बच्चों की मन की बात को सुनकर समझती हैं। शिक्षिका ने बताया कि एक शिक्षक के लिए यह जरूरी है कि शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को लिखने–पढ़ने के लिए तैयार करने से पहले इससे जुड़े पक्षों पर कार्य करना जरूरी है जिससे बच्चों का मानसिक रूप से लगाव बन पाता है। कक्षा में भाषा शिक्षण पुस्तकालय का, चित्र व संदर्भ और रंगीन पृष्ठ युक्त पुस्तक का उपयोग करके, कहानी सुनाना और चित्र पर चर्चा करने से बच्चों का जुड़ाव बातचीत से बन पाता है। माया जी बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर शैक्षिक कार्य करती हैं जिससे हर बच्चे का जुड़ाव बन पाता है। विद्यालय में परम्परागत शिक्षण व्यवस्था के स्थान पर सृजनात्मक व रचनात्मक कार्य पर जोर दिया जाता है। विद्यालय के वातावरण में शिक्षक और बच्चों के मध्य मिलकर, सीखने–सिखाने का माहौल बन पाया है।

सीखने-सिखाने को लेकर शिक्षक की मान्यताएं

विद्यालय में दोनों शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के सीखने को लेकर यह मानते हैं कि हर कोई बच्चा कक्षा में सीखने की प्रक्रिया से जुड़कर सीख सकता है। यह बात शिक्षक के काम करने की प्रक्रिया और अवधारणात्मक समझ पर निर्भर करती है। बच्चे को हम क्या सिखाने जा रहे हैं, क्यों और कैसे सिखाने की बात करते हैं? अगर बच्चे को कक्षा में सीखने के उचित अवसर और माहौल दिया जाये तो हर बच्चा सीख सकता है। ओमपाल जी अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथ अकादमिक कार्यशाला व संवाद से जुडकर स्वयं की क्षमताओं का संवर्धन कर पाये हैं। ओमपाल जी कक्षा–कक्ष की समस्याओं को पढ़ने–लिखने के साथ हल कर पाते है।

समुदाय व विद्यालय के रिश्ते

विद्यालय से स्थानीय गांव में निवास करने वाले समुदायों के बच्चे शिक्षण के लिए जुड़े हुए हैं। विद्यालय में समुदाय व अभिभावकों का जुड़ाव बच्चों के सीखने–सिखाने को लेकर सजगता युक्त माहौल बनाता है। विद्यालय की विविध गतिविधियों में समुदाय का निरन्तर जुडाव विद्यालय को बेहतर बनाने में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर रहा है। जब भी विद्यालय में कोई उत्सव होता है तो शिक्षक गांव में जाकर लोगों से संवाद करते हैं इस कार्य में भी बच्चों का अपेक्षित सहयोग लिया जाता है। विद्यालय में होने वाली सामुदायिक बैठकों में बच्चों के अकादमिक कार्य को साझा किया जाता है। शिक्षक, समुदाय के बीच, औपचारिक व अनौपचारिक मंचों पर बच्चों के सीखने को लेकर संवाद कर पाते हैं। विद्यालय के शिक्षकों का इस प्रकार का समर्पण भाव, विद्यालय को जीवंत व सीखने के लिए उपयुक्त माहौल अन्य विद्यालयों के लिए भी प्रेरणा बनता है।

(ओमपाल प्रजापति की उमाकांत शर्मा से हुई बातचीत पर आधारित)

प्रयोग जो प्रेरणा देते हैं

प्रेरणा सनाढ्य
सहायक अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय
नाथूवास, खमनोर, राजसमन्द, राजस्थान

प्रधानाध्यापक – **ओमप्रकाश वसीटा**
नामांकन – **248**
मध्याह्न भोजन व्यवस्था – **अक्षय पात्र**

"बच्चों के मन से स्कूल के प्रति भय को निकालना ही मेरा पहला उद्देश्य है।" यह मानना है राजकीय माध्यमिक बालिका विद्यालय, नाथूवास में पर्यावरण शिक्षिका प्रेरणा सनाढ्य का। प्रेरणा जी से मेरी पहली मुलाकात एक फोरम के दौरान हुई जिसके बाद उन्हीं के न्योते पर उनके स्कूल में जाने का अवसर मिला। उस दिन उन्होंने बच्चों के साथ मिलकर झोला पुस्तकालय की एक कहानी का नाटक तैयार किया था। बच्चे एक–एक कर के अपने मन से अपना किरदार चुनते और अपनी पसंदीदा कहानी 'सो जाओ टिंकू' का नाटकीकरण करते। इसके बाद प्रेरणा जी ने हमें उनके और बच्चों के द्वारा बनाए गए टी.एल.एम. दिखाए। इस एक मुलाकात के बाद प्रेरणा जी से मिलने के कई अवसर मिले और उनके काम के प्रति मेरी सराहना बढ़ती गयी।

प्रेरणा जी ने बतौर शिक्षिका अपना सफर 1999 में संस्कृत की शिक्षिका के तौर पर शुरू किआ। तभी से वे हिंदी की मास्टर ट्रेनर (MT) भी रही हैं। नाथूवास में वे 2016 से पर्यावरण की शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। पर उनका कार्य केवल पर्यावरण पढ़ाने तक ही सीमित नहीं है, वे हिंदी विषय भी पढ़ाती हैं। कुछ बच्चे तीसरी कक्षा में आने के बाद भी पढ़ना–लिखना नहीं जानते थे जिसकी वजह से उन्हें पर्यावरण पढ़ने में भी मुश्किल का सामना करना पड़ता था। इसीलिए उन्होंने बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने पर भी ध्यान देना शुरू किया। पर चुनौती उनके सामने यह भी थी कि बच्चों का स्कूल में ठहराव नहीं था। भय के कारण बच्चे स्कूल में आने से कतराते थे। कभी वर्दी न होने का भय तो कभी पढ़ना न आने पर कॉपी में काम न पूरा होने का भय। वहीं कुछ बच्चे घर की परेशानियों के चलते स्कूल नहीं आ पाते थे।

अनियमित रहने की वजह से भी वे पढ़ने–लिखने में बाकी बच्चों से पीछे रह जाते थे। प्रेरणा जी ने बच्चों का स्कूल में ठहराव सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करना शुरू किया। जो बच्चे भय के कारण नहीं आ पाते थे, उनसे बातचीत कर उन्हें सहज करने का प्रयास किया ताकि वे बिना डरे स्कूल आ पाएं। वहीं जो बच्चे घर की परेशानियों, जैसे– छोटे भाई–बहनों की जिम्मेदारी के चलते स्कूल नहीं आ पाते थे, उन्हें भी किसी तरह स्कूल लाने का प्रयास किया। अब बच्चे नियमित रूप से स्कूल आने लगे हैं। तीसरी कक्षा के दो बच्चे मुकेश और प्रकाश की अटेंडेंस दिखाते हुए वे बताती हैं के ये दोनों बच्चे जबसे स्कूल शुरू हुआ तबसे ही लगातार अनुपस्थित रहते थे। जहां मुकेश वर्दी न होने के कारण तो प्रकाश माता–पिता के बीमार होने के चलते अपनी छोटी बहनों की जिम्मेदारी की वजह से स्कूल नहीं आ पा रहा था। प्रेरणा जी उनके घर गईं तो उन्हें ये सब मालूम हुआ। उन्होंने जहां मुकेश को स्कूल में एक शिक्षिका द्वारा लाई गई वर्दी देकर उसे आश्वासन दिया कि उसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है वहीं प्रकाश को अपनी बहनों के साथ स्कूल आने को कहा। जब प्रकाश कक्षा में होता है तब उसकी बहनें आंगनबाड़ी में रहती हैं। अक्टूबर से इन दोनों बच्चों की नियमितता स्कूल में बढ़ी है। प्रेरणा जी बच्चों के अभिभावकों से भी मिलने का प्रयास करती हैं खासकर उन अभिभावकों से जिनके बच्चे अनियमित रूप से स्कूल आते हैं, जिससे बच्चों की नियमितता सुनिश्चित की जा सके। वे मानती हैं कि बच्चों के सामाजिक परिवेश का उनकी मनः स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है जिसका सीधा असर उनकी सीखने की प्रक्रिया पर भी दिखाई देता

है जिसका ध्यान हमें बतौर शिक्षक होना चाहिए।

बच्चों का उनकी प्रेरणा मैम के साथ तालमेल सराहनीय है। बच्चे उनके साथ सहज तो हैं ही, बिना भय के अपनी बात रख भी पाते हैं। प्रेरणा जी मानती हैं कि हर बच्चे की क्षमताएं अलग होती हैं तो यह मान लेना कि सिखाने का तरीका भी एक ही हो यह गलत है। वे अपने अध्यापन में सीखने–सिखाने के विभिन्न तरीकों को शामिल करती हैं जिनमें कहानियां, आर्ट एंड क्राफ्ट, चित्र बनाना, नाटक, आदि शामिल हैं। वे कोशिश करती हैं कि पर्यावरण इस तरह पढ़ाएं कि बच्चे साथ–साथ पढ़ना लिखना तो सीखें ही साथ ही में उनकी मौखिक अभिव्यक्ति का भी विकास हो। वे नियमित रूप से पाठ्य योजना बनाती हैं और अपनी बनाई गयी योजना पर दूसरों की राय भी लेती हैं ताकि वे अपनी योजना को और बेहतर बना पाएं।

किताबों और कहानियों द्वारा शिक्षण

प्रेरणा जी झोला पुस्तकालय में सम्मिलित विभिन्न किताबों का इस्तेमाल कक्षा में बच्चों को पढ़ाने के लिए करती रहीं हैं। कभी किताब में से कहानी पढ़कर बच्चों को सुनातीं, कभी उनको पढ़ने को देती हैं, तो कभी उसका नाटय रूपांतर कराती हैं। पर्यावरण पढ़ाने में किताबें बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे कहती हैं कि किताबों के जरिए वे पर्यावरण में आने वाले विषय जैसे जल, जानवर, पक्षी, मौसम आदि पर भी काम कर पाती हैं। झोला पुस्तकालय उनके पास आने से पहले भी वे अपने बच्चों की पुरानी किताबें स्कूल ले आया करती थीं और उनको अपने अध्यापन में शामिल करती थीं। बच्चे भी किताबों से काफी जल्दी जुड़ जाते हैं। कभी वे अपनी पसंदीदा कहानी पढ़ते हैं, कभी किताबों से देखकर अपने पसंदीदा किरदार का चित्र बनाते हैं तो कभी मुखौटे बनाकर नाटक प्रस्तुत करते हैं। इस तरह किताबें उनकी पाठयचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

पढ़ना–लिखना सीखने का प्रयास

प्रेरणा जी बच्चों में पढ़ने लिखने का कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न प्रयास करती आई हैं। पिछली दिवाली की छुट्टियों के दौरान उन्होंने भाषा सिखाने के लिए एक 8 दिवसीय कैम्प का आयोजन किया जिसमें विशेष रूप से उन बच्चों को शामिल किया जो पढ़ना–लिखना नहीं जानते थे। कैम्प के दौरान उन्होंने किताबों, फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स आदि टी.एल.एम. का उपयोग कर बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने का प्रयास किया। जहाँ छुट्टियों में बच्चों का स्कूल आना सुनिश्चित

करना एक कठिन कार्य है वहां पहले ही दिन 18 बच्चे कैंप में आए जिनकी संख्या अगले दिन 30 हो गयी और ये संख्या अंत तक बनी भी रही। कैम्प में बच्चों के साथ जो काम हुआ उसका प्रतिफल ये रहा कि कुछ बच्चे पढ़ने–लिखने की ओर बढ़ पाए।

इस सत्र में तीसरी से पांचवी कक्षा तक करीब तीस बच्चे ऐसे थे जो पढ़ना–लिखना नहीं जानते थे जिनके साथ सितम्बर से शिक्षिका के प्रयास जारी हैं। अब कईं बच्चे पढ़ना–लिखना सीख गए हैं और बाकी सरल शब्दों को पढ़ना–लिखना सीखने लगे हैं। अब उन्होंने बी.एड की ट्रेनिंग लेने वाली एक शिक्षिका के साथ तालमेल बैठा कर बच्चों के पढ़ने–लिखने पर अतिरिक्त काम करना शुरू किया है जिससे उन्हें भी थोड़ी आसानी होने लगी है। वे जब खुद कक्षा में काम नहीं कर पातीं तो नीता मैम के साथ तालमेल बैठाकर ये सुनिश्चित करती हैं कि बच्चों के साथ नियमित रूप से काम हो पाए।

कम्प्यूटर तकनीक और टी.एल.एम. का उपयोग

प्रेरणा जी चित्र, फ्लैश कार्ड्स, मास्क, कार्यपत्रक, किताबें, चार्ट्स आदि जैसे टी.एल.एम. का उपयोग तो करती ही रहीं हैं, साथ ही उन्होंने आई.सी.टी. को भी अपनी पाठयचर्या हिस्सा बनाया है। वे समय–समय पर प्रोजेक्टर का इस्तेमाल कर बच्चों को अलग–अलग वीडियो दिखाती हैं जिनमें कहानी, कविताएं आदि शामिल हैं। उनके अनुसार बच्चों की रुचि वीडियो देखने में ज्यादा रहती है जिसकी मदद से वे कक्षा में विभिन्न विषयों पर काम कर सकती हैं। पहले वे प्रोजेक्टर के उपयोग के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की सहायता लेती थीं। अब स्कूल में सरकार द्वारा प्रोजेक्टर व कुछ कंप्यूटर लगाए गए हैं जिसके चलते उन्हें काफी सुविधा महसूस हो रही है।

प्रेरणा जी बच्चों के लिए विभिन्न पाठ्य सामग्री बनाती हैं और बच्चों से बनवाती भी रहती हैं जिससे बच्चों की रूचि पढ़ने में बनी रहे। उन्होंने शादी के कार्ड्स का उपयोग कर फ्लैश कार्ड्स बनाए जो स्थाई रहें और बार–बार उपयोग किए जा सकें। वे समय–समय पर किताब पढ़ कर बच्चों के कार्यपत्रक बनाती हैं तथा पढ़ाने के नए तरीकों की खोज में रहती हैं। एक शिक्षिका के रूप में प्रेरणा जी एक अच्छे उदाहरण के रूप में हमें नजर आती हैं जिनका मूल उद्देश्य है बच्चों की सीखने में मदद करना। उनके निरन्तर प्रयासों का बच्चों के सीखने पर भी प्रभाव दिखता है। उनके शिष्य आत्मविश्वास, अनुशासन तथा मौखिक अभिव्यक्ति से परिपूर्ण नजर आते हैं।

'प्रेरणा जी एक अच्छी शिक्षिका हैं, जो बच्चों के साथ जुड़कर उनके परिवेश को ध्यान में रखते हुए पढ़ाती हैं। समय का पालन करना उनके स्वभाव में है। वे स्कूल में मौजूद सामग्री का उपयोग तो करती हैं ही, साथ ही अपने घर से अतिरिक्त किताबें व सामग्री लाकर भी अपनी कक्षा में प्रयोग करती हैं। उनके प्रयास से बच्चे भी सीख रहे हैं।'

– ओमप्रकाश वसीटा

(प्रेरणा सनाढ्य की गरिमा शर्मा की हुई बातचीत पर आधारित)

अपनी भाषा में अभिव्यक्ति के जरिए ही शिक्षा का सफर आसान किया जा सकता है

गणेश चौहान
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डोंगरगांव, कसरावद
खरगोन, मध्यप्रदेश

प्रधानाध्यापक – फकीरा पंवार
भोजन माता – सत्यधाम स्वयं सहायता समूह
नामांकन – 37

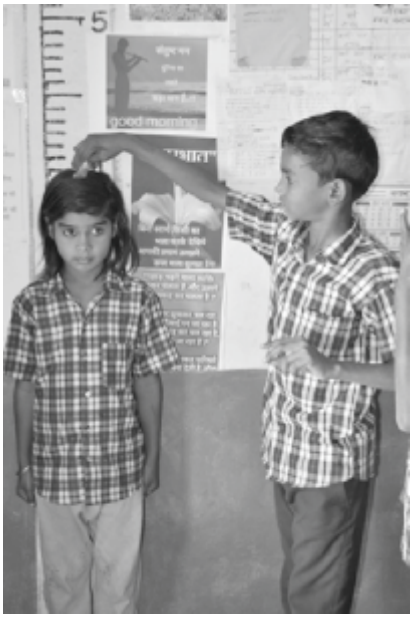

''मेरा मानना है कि जब बच्चे अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं तो उनके सीखने का सफर आसान हो जाता है। यह तभी संभव है जब बच्चों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने का मौका मिले। और मैं यही करता हूं।'' यह बात एक प्राथमिक स्कूल के शिक्षक गणेश चौहान ने बताई। जब उनसे पूछा गया कि फिर बच्चे हिंदी और अंग्रेजी कैसे सीखेंगे? इसके जवाब में गणेश चौहान कहते हैं कि बच्चों को हिंदी नहीं आती इसका मतलब यह तो नहीं कि उन्हें कुछ आता नहीं है। अपनी बात को बच्चे अपनी भाषा में बेहतरी से रख पाते हैं। गणेश चौहान, प्राथमिक स्कूल डोंगरगाव में सन् 2010 से पदस्थ हैं। डोंगरगाव, मध्यप्रदेश के पश्चिमी निमाड़ के खरगोन जिले के कसरावद विकास खंड में स्थित है। कसरावद विकास खंड मुख्यालय से डोंगरगांव, इंदौर रोड़ पर लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर बसा एक गांव है। इस गांव की जनसंख्या लगभग 1100 के आसपास है। यहां अहीर, यादव व जनजाति के लोग निवास करते हैं। सरकारी स्कूल डोंगरगांव में 37 बच्चे अध्ययनरत हैं। पहली कक्षा में 8, दूसरी में 7, तीसरी में 8, चौथी में 5 और पांचवी में 9 बच्चे दर्ज हैं। अधिकांश बच्चे पिछड़ी जाति के हैं।

इस स्कूल में दो शिक्षक हैं। गणेश चौहान मानते हैं कि शिक्षा हर बच्चे का हक़ है और हर बच्चा सीखने की क्षमता रखता है। वे कहते हैं कि यह मैं अपने स्कूल के बच्चों के साथ किए गए कामों के आधार पर कह रहा हूं। दरअसल, सीखना तभी संभव होता है जब बच्चों के साथ शिक्षक प्रेम व स्नेह के साथ पेश आएं। बच्चों को इंसान के रूप में देखना व उन्हें बराबरी का दर्जा देना, सीखने की धार को तेज करता है।

गणेश चौहान अपने लहजे में बताते हैं कि ''छोटे बच्चों के साथ काम करने के लिए यह बात समझना जरूरी है कि पहले उनके विश्वास को जीता जाय और यही मैं करने की कोशिश करता हूं। यह एक बड़ी चुनौती है जिस पर विजय पाने से आगे का रास्ता आसान हो जाता है।'' गणेश चौहान ने इस बात को अच्छे से न केवल समझा है बल्कि इसे कक्षाओं में अपनाया भी।

डोंगरगांव स्कूल की प्रीति व दुर्गा नामक बच्चियों से बातचीत की गई, उन्होंने बताया कि शिक्षक उनके साथ घर से भी ज्यादा अच्छा व्यवहार करते हैं। बच्चों ने बताया कि सर हमें घुमाने ले जाते हैं। गणेश कहते हैं कि बच्चों ने जिद की कि वे मेले में जाना चाहते हैं तो बच्चों की जिद को शिक्षक ने स्वीकार किया और मेले में जाने की योजना बनाई और उन्हें लेकर गये। यह दिलचस्प है कि बच्चे शिक्षक के साथ जिद करते हैं। जिद करना तो अपनों के साथ ही संभव है।

इस वर्ष शिक्षक बच्चों को कसरावद में मेले में ले गए और वहां बच्चों ने झूला झूला। आगे बच्चे बताते हैं कि मेले में सर ने उन्हें जलेबी और आइस्क्रीम खिलाई व खूब मजे किए।

गणेश बताते हैं कि वे बच्चों को कसरावद कस्बे में स्थित पुरातत्व संग्रहालय में ले गए जहां बच्चों ने यहां के इतिहास को जाना–समझा। बच्चों को बाहर की दुनिया में अच्छा लगता है।

जब उनसे पूछा कि बच्चों को बाहर ले जाने के पीछे आपकी मंशा क्या है, इस पर शिक्षक बताते हैं कि बच्चों को कक्षा की चहारदीवारी से बाहर की दुनिया का अनुभव जरूर देना चाहिए।

नई चीज़ों को देखना–समझना भी तो शिक्षा का अहम हिस्सा है। पुरातात्विक धरोहर को दिखाना भी शिक्षा का हिस्सा है। इसे कैसे हम संजो सकते हैं, इसकी समझ बचपन से ही बच्चों में डालनी चाहिए। हमारे आसपास की दुनिया को समझना तभी संभव है जब उन्हें उसका अनुभव दिया जाए।

मेले में बच्चे तो जाते ही हैं लेकिन स्कूल के बच्चों के साथ जाना एक अलग तरह का आनंद व अनुभव देता है। मैं बच्चों को ऐसे मौके भरपूर देने की कोशिश करता हूं। गणेश बताते हैं कि बच्चों को नर्मदा किनारे ले जाया गया। यह कोई कम दिलचस्प नहीं कि शिक्षक अपने बच्चों के साथ अपने निजी अनुभव भी साझा करते हैं। गणेश ने बताया कि पिछले दिनों मेरी बेटी की सगाई का आयोजन मेरे गांव में निवास स्थान से किया था। मैंने उस दौरान अवकाश लिया था। बच्चों को मैंने बताया तो उन्होंने कहा कि हम भी आपके घर आना चाहते हैं। शिक्षक और बच्चों के बीच लगाव की यह एक मिसाल कही जानी चाहिए। बच्चे, शिक्षक के घर सगाई के कार्यक्रम में शिरकत करने गए। यह भी उल्लेखनीय है कि बच्चों के लिए शिक्षक ने वाहन की व्यवस्था स्वयं की।

मामला, प्रेम और लगाव से आगे का भी दिलचस्प है। लगभग तीन बरस पहले गणेश चौहान, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से जुड़े। टीएलसी खुलने के पहले कसरावद विकासखंड मुख्यालय पर शाम के सत्रों का आयोजन प्रारंभ हो चुका था। इन सत्रों में गणेश चौहान ने भागीदारी प्रारंभ की। गणेश स्वीकार करते हैं कि शिक्षा व समाज के प्रति उनके नजरिए में भारी बदलाव फाउंडेशन से जुड़ने के बाद आया। शिक्षा के मूल मसलों पर समझ बनी और उसे वे अपनी कक्षाओं में रोपने में जुट गए।

स्कूल की कक्षाओं में उन्होंने रीडिंग कार्नर की स्थापना की। बाल साहित्य की किताबें तो पहले से थीं ही लेकिन अब उनका इस्तेमाल बच्चों को पढ़ना सिखाने में किया जाने लगा। कक्षाओं की

दीवारों पर कविताओं, कहानियों के पोस्टर्स लगाए और उन पर काम किया जाने लगा।

कक्षा में टीचिंग–लर्निंग मटेरियल बच्चों के साथ मिलकर बनाया गया। भाषा शिक्षण में शब्द कार्ड बनाए, महीनों के कार्ड बनाए, दिनों व अक्षरों के कार्ड बनाए। कार्ड्स इतने बनाए कि प्रत्येक बच्चे के लिए उपलब्ध हो सकें। इसी प्रकार से गणित की बुनियादी समझ बनाने के लिए तीली बंडल, गिनमाला, मोती तार व गणक (एबेकस) इत्यादि बनाए व उनका इस्तेमाल कक्षा शिक्षण में किया जाने लगा। इसका सकारात्मक असर बच्चों के सीखने में देखने को मिला। कक्षा शिक्षण के अवलोकन से हमें समझ में आया कि बच्चे बेबाकी से कक्षा में बोलते हैं। उनकी कक्षा का एक नजारा कुछ यूं है :

''मैं और मेरे साथी कालू राम शर्मा डोंगरगांव स्कूल पहुंचे तो देखा कि कक्षा में शिक्षक गणेश चौहान गणित पढ़ा रहे हैं। दीवारों पर आकर्षक पोस्टर्स लगे हुए हैं। शिक्षक गिनमाला के जरिए बच्चों को गिनती सिखा रहे हैं। कक्षा में दो कुर्सियों के बीच एक पतली रस्सी को बांधा गया है जिसमें गिनमाला के मोती पिरोए हुए हैं। यही गिनमाला है। इसमें बच्चों को मोती गिनने को कहा जा रहा है। बारी–बारी से बच्चे आकर मोतियों को गिन पा रहे हैं। इसी दौरान हमने बच्चों से उल्टी गिनती के लिए कहा। बच्चों से ऊपर से नीचे अर्थात 60 के पहले 59, 58, 57 गिनने को कहा गया। यह दिलचस्प था कि बच्चों में गिनती की समझ पुख्ता थी। इसके बाद ही गिनमाला के जरिए जोड़ और घटाव की अवधारणा पर काम किया गया। पतली रस्सी में पिरोए मोतियों में कितने मोती मिलाएंगे कि अमुक संख्या बन जाएगी। कितनी कम करेंगे तो अमुक संख्या बन जाएगी। बच्चे कर पा रहे थे। न केवल गिनमाला पर बल्कि वे लिखित रूप से भी कर व समझ पा रहे थे। हमने समझा कि शिक्षक केवल गतिविधि करवाने के लिए गतिविधि नहीं करवाते। गतिविधि का मकसद किसी अवधारणा को समझना है और ऐसा ही कक्षा में हो पा रहा था।''

शिक्षक बच्चों को कहानी सुनाते हैं। यह पूछने पर कि भाषा शिक्षण में कहानी का क्या महत्व है? उन्होंने बताया कि बच्चों को कहानियां सुनना पसंद है। कहानी में उन्हें रस आता है। कहानियां बच्चों के ध्यान को केंद्रित करने में मददगार होती है। कहानियों में क्रमबद्धता होती है। यह उनके विचार को पैना करती है। कक्षाओं में बच्चे स्वतंत्र होते हैं। बच्चे की मर्जी का अधिक से अधिक ख्याल रखा जाता है। बच्चों के बीच ही शिक्षक बैठते हैं और कक्षा शिक्षण करते हैं। गणेश चौहान की कक्षा अपने आप में एक उदाहरण है जिसमें बच्चे आनंद से सीखते हैं। शिक्षक बच्चों के साथ अधिकतर (स्थानीय बोली) निमाड़ी में बातचीत करते हैं। इसका असर यह हुआ कि बच्चे जो हिंदी की कमजोर समझ के चलते बोलते नहीं थे, अब बोलने लगे हैं। वे कहते हैं कि मेरे लिए बच्चों का बोलना अहम है। इसलिए उनके साथ निमाड़ी में बातचीत करना जरूरी समझता हूं।

शिक्षक कहते हैं कि पहले मैं बच्चों से हिंदी में ही बातचीत करता था। पिछले वर्ष मुझे फाउंडेशन द्वारा शिक्षकों के लिए सेंधवा के पास आधारशिला स्कूल जाने का मौका मिला। यहां सीखने को मिला कि आधारशिला के बच्चों को वहां की स्थानीय भाषा बारेली में अभिव्यक्ति के मौके दिए जाते

हैं। मैंने वहां से यह सीख ली और तय किया कि मैं भी अपने बच्चों के साथ निमाड़ी (स्थानीय बोली) में ही बातचीत करूंगा।

तो फिर बच्चे हिंदी कब सीखेंगे? इसके जवाब में वे कहते हैं कि बच्चे जब हिंदी में बोल ही नहीं पाते हैं तो कोई मतलब नहीं रह जाता। निमाड़ी भाषा के कंधे पर सवार होकर बच्चे हिंदी भी सीख जाएंगे। वे कहते हैं कि ऐसा नहीं कि निमाड़ी भाषा के इस्तेमाल से बच्चे हिंदी नहीं सीख पा रहे हैं। बच्चों के साथ हिंदी में भी काम होता है और वे सीख पा रहे हैं। लेकिन एक बेगानी भाषा को अपनी भाषा को आधार बनाकर ही सीखा जा सकता है। शिक्षक उल्लेख करते हैं कि मध्यप्रदेश में फाउंडेशन द्वारा आयोजित कैंप में जाने का मौका मिला जहां मैंने जो कुछ भी सीखा उसे कक्षा में आजमाने की कोशिश करता हूं।

हमने बच्चों से पूछा कि क्या आपके शिक्षक कक्षा में मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं?इस पर बच्चों ने कहां– हां। हमने कहा कि क्या करते हैं?बच्चों ने बताया कि सर का मोबाइल तो हम ही चलाते हैं। यह दिलचस्प बात लगी कि शिक्षक ने बताया कि जब उन्हें कोई प्रशासनिक काम करना होता है तो बच्चे मोबाइल में यूट्यूब खोलकर कहानियां देखते–सुनते हैं।

शिक्षक कहते हैं कि– 'स्कूल में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। मैं अभी अपने काम से संतुष्ट नहीं हूं। कहते हैं कि मुझे और सीखना है और कक्षा के लिए नए–नए टीएलएम बनाना है। वे बताते हैं कि सबसे बड़ी चुनौती है बच्चों की अनियमितता। परिवार की माली हालत कमजोर होने से माता–पिताओं को अन्य जगहों पर अपनी रोजी–रोटी के लिए जाना पड़ता है। इसी तरह बच्चों को अन्य काम करने होते हैं इसलिए वे नियमित नहीं आ पाते। स्कूल में आने के बाद शिक्षक समुदाय में जाते हैं और बच्चों को स्कूल में लेकर आते हैं। जो बच्चे नियमित रूप से स्कूल आते हैं वे भाषा व गणित में अच्छा सीख पाते हैं। इसके लिए हम कोशिश कर रहे हैं।

उन्होंने अन्त में फिर से जोर देकर कहा कि "प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाना बड़ी चुनौती है। बच्चों को विश्वास में लेना उनके सीखने को आसान बनाता है"।

(गणेश चौहान की शफ़ीक़ शेख व कालूराम शर्मा की हुई बातचीत पर आधारित)

बदलाव संभव है

दयाराम साहू
प्रधानाध्यापक
शासकीय माध्यमिक शाला, शकरवार भोयना, धमतरी, छत्तीसगढ़

सहायक अध्यापक/ अध्यापिका	–	**हेमलता चंद्राकर, श्रीमती अनीता सोरी प्रमोद कुमार साहू**
भोजन माता	–	**देववती साहू, गायत्री बाई ध्रुव**
नामांकन	–	**35**

एक बेहतर स्कूल कैसा होना चाहिए? यह देखना हो तो आपको छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के शकरवार गाँव के शासकीय माध्यमिक स्कूल में एक बार जरूर आना चाहिए। यहाँ आपको एक बेहतर स्कूल की पूरी न सही कुछ झलकियां तो मिल ही जायेंगी। यह इसलिए भी क्योंकि यहाँ पढाई–लिखाई के साथ–साथ दूसरी गतिविधियों को भी प्रमुखता

दी जा रही है और इन तमाम गतिविधियों में स्कूल यानी शिक्षकों, छात्र–छात्राओं और पालकों, ग्रामीणों व पंचायत सभी की साझेदारी है। जैसे कि सब को पता है, कहीं भी एक बेहतर स्कूल तभी संभव है जब स्कूल से जुड़े तमाम लोग और संस्था इसके लिए प्रयासरत होंगे और इस स्कूल में आने से इन सब प्रयासों के सबूत साफ नजर आते हैं।

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में स्थित यह शासकीय माध्यमिक शाला धमतरी से 10 किमी. की दूरी पर गंगरेल जलाशय के नीचे महानदी के किनारे बसे गाँव शकरवार में है। यहाँ ज्यादातर परिवार गरीब किसान और मजदूर हैं। जाहिर है लोग शहर में और पास के गोदामों में हमाली का काम और खेतों में खेतिहर मजदूरी करते हैं। स्कूल में कुल 35 बच्चे हैं जिनमें बालकों से ज्यादा बालिकायें हैं। लेकिन इस स्कूल की बात करें तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा की इस स्कूल में एक स्मार्ट क्लास है, पानी की व्यवस्था के लिए मोटर लगी है और स्कूल के मध्याह्न भोजन में स्कूल की बागवानी की सब्जियों का उपयोग होता है। "इस गाँव में आदिवासी और पिछड़े समुदाय के लोग रहते हैं। पर गाँव के सभी लोगों का और खास करके महिलाओं का स्कूल से काफी लगाव है। अभी जो आप स्कूल में बदलाव देख रहे हैं यह सब इन लोगों की सहयोग की वजह से है। यह कहना है स्कूल के प्रधान पाठक दयाराम साहू का। इस स्कूल में दो बदलाव काफी प्रमुखता से दिखाई देते हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। एक है पठन–पाठन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए स्मार्ट कक्षा की स्थापना और दूसरा बदलाव है शाला सौन्दर्यीकरण और बागवानी। प्रधान पाठक दयाराम जी इसके बारे में आगे जानकारी देते हुए कहते हैं– "शाला प्रबंधन समिति एवं पालक संघ की बैठक में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव रखा गया कि स्कूल में शैक्षणिक वातावरण निर्माण एवं बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा व्यवस्था हेतु कंप्यूटर एवं प्रोजेक्टर खरीदे जाएं सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सामुदायिक सहभागिता के अंतर्गत शाला प्रबंधन समिति, पालक संघ, स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से यह कार्य किया जाए। इसी बैठक में शामिल कई ग्रामीण जैसे बलराम यादव, पीके ध्रुव, राममिलन कुंजाम (सचिव, ग्राम पंचायत मुडपार), सुकनाथ ध्रुव, गोपाल

उइके, सुश्री मीना सुरेश यादव (सरपंच, ग्राम पंचायत, मुडपार), एमएल सिन्हा, सुश्री अनीता सोनी (शिक्षिका), सुश्री हेमलता चंद्राकर (शिक्षिका), सुश्री कान्ति नेताम (शिक्षिका), सुश्री सुरेखा ध्रुव, पीलाराम निषाद आदि कई लोगों ने आर्थिक योगदान दिया जिस से लगभग 60 हजार रुपये जमा हो गये। इस पैसे से इस गाँव के स्कूल के लिए एक कंप्यूटर, एक प्रोजेक्टर लिया गया और इस तरह से स्कूल की स्मार्ट क्लास तैयार हो गयी। आज बच्चे इस क्लास के जरिये पढ़ाई करते हैं और स्मार्ट क्लास में बैठने के लिए काफी उत्साहित रहते हैं। हमने ऐसे ही एक स्मार्ट क्लास देखी जो प्रधान पाठक के कक्ष में ही लगी है, जहाँ छात्र–छात्राएं प्रोजेक्टर के जरिये सुनते–पढ़ते हुए काफी खुश नजर आ रहे थे। इस बारे में चर्चा करते हुए छात्र–छात्राओं का कहना था कि शिक्षक जब अपने–अपने विषयों को प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाते हैं तो विषय वस्तु की अवधारणा की स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है।

इसी तरह यहाँ के सभी शिक्षक और शिक्षिका भी छात्र–छात्राओं को समझने और समझाने के लिए अपने–अपने स्तर से और सामूहिक रूप से भी प्रयास करते रहते हैं। इसके अलावा स्कूल के भौतिक विकास के लिए भी सभी का सामूहिक प्रयास लाजवाब है। सबसे पहले स्कूल की एक मासिक बैठक में शाला प्रबंधन समिति एवं पालक संघ द्वारा स्कूल में सौन्दर्यीकरण एवं बागवानी हेतु तथा क्यारी निर्माण हेतु प्रस्ताव रखा गया। प्रधान पाठक दयाराम साहू ने इस बारे में चर्चा करते हुए कहा कि– "इस प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सामुदायिक सहभागिता द्वारा बागवानी की क्यारी निर्माण के लिए ईंट, सीमेंट, रेती और मिट्टी की व्यवस्था की जायेगी। मिट्टी इसलिए कि हमारा स्कूल एक पहाड़ी से लगा हुआ है इसलिए इसके नीचे जमीन पथरीली है। इन सब कार्य के लिए जमना चक्रधारी, सुकुल चक्रधारी, शिवकुमार चक्रधारी ने ईंट दिए, मैंने 6 बोरी सीमेंट दी। निर्माण कार्य में गाँव के राजमिस्त्री तोरण लाल साहू, ओमप्रकाश ध्रुव, अजित ध्रुव, नरेन्द्र ध्रुव, शोभाराम यादव, गंगा प्रसाद ध्रुव, अक्षय कुमार ध्रुव, पवन कुमार मानिकपुरी एवं सीतेश कुमार ध्रुव, ने अपना एक एक दिन का श्रमदान दिया।" उन्होंने आगे कहा– "उसी तरह बागवानी हेतु पेड़–पौधे खरीदने एवं क्यारी में मिटटी डालने हेतु बलराम यादव, सुकनाथ ध्रुव एवं झूमकलाल उइके ने रुपयों के साथ–साथ कई ट्रैक्टर मिटटी डलवायी। मिट्टी आने के बाद क्यारियों में मिटटी डालने का काम पालक संघ की माताओं ने किया जबकि पेड़ लगाने का काम शाला प्रबंधन समिति एवं पालक संघ ने किया।"

इस तरह से उस जगह पर 25x50 फीट का एक किचन गार्डन विकसित किया गया है। अब उस किचन गार्डन में मेथी, पालक, लालभाजी, बैंगन, लौकी, तरोई, करेला, मूली, भिन्डी से लेकर प्याज तक उगाया जा रहा है। जिसका उपयोग ना केवल स्कूल के मध्यान्ह भोजन में किया जा रहा है बल्कि जो उस से ज्यादा हो रहा है उसे बेचकर स्कूल के विकास के काम में उपयोग किया जा रहा है। यह निश्चित तौर पर स्वावलंबन एक बेहतरीन उदाहरण है। किचन गार्डन का काम बहुत मेहनत का भी काम है जो स्कूल के छात्र–छात्राएं, शिक्षक और पालक एवं ग्रामीण मिलकर कर लेते हैं। स्कूल के इन कार्यों के लिए यह स्कूल जिलास्तर पर कई बार पुरुस्कृत भी हो चुका है। जैसे माध्यमिक शाला शकरवारा की शाला प्रबंधन समिति को बंजर भूमि को उपजाऊ बनाकर किचन गार्डन के रूप में विकसित करने के लिए गणतंत्र दिवस 2018 में सम्मानित किया गया।

इसी तरह सामुदायिक सहभागिता के अंतर्गत शाला में कंप्यूटर और प्रोजेक्टर की व्यवस्था कर स्मार्ट कक्ष संचालन करने हेतु 2018 में जिलास्तर पर 'मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण पुरस्कार' के अंतर्गत 'ज्ञानदीप पुरुस्कार' प्रदान किया गया। स्कूल के बच्चों के लिये किताबी ज्ञान के अलावा सामूहिक तौर पर और कई गतिविधियों का आयोजन होता है। जैसे शिक्षक, पालक–बालक/बालिका एवं माता उन्मुखी कार्यक्रम, बालमेला, बाल रचनात्मक ग्रीष्मकालीन शिविर और बाल कैबिनेट का गठन आदि। इस कार्यक्रम में आमंत्रित माताओं का अभिनन्दन किया जाता है एवं माताओं से शाला से जुड़ने के महत्व पर विस्तार पूर्वक चर्चा की जाती है। जिस से गाँव की महिलायें स्कूल से दिल से जुड़ जाती हैं और स्कूल को अपने जीवन का हिस्सा मानते हुए इसके विकास में जो भी मदद हो, जैसे आवश्यकता पड़ने पर श्रमदान से पीछे नहीं हटती हैं।

इन कार्यक्रमों से छात्र–छात्राओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अवसर मिलता है जो बहुत जरूरी है। इस ग्रामीण विद्यालय के छात्र–छात्राएं आज जिला और राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना और अपने स्कूल का नाम रोशन कर रहे हैं। विद्यालय की छात्रा कुमारी प्रीति का मॉडल "मक्के की ठूंठ से हार्डबोर्ड या प्लाईबोर्ड बनाना" राष्ट्रीय स्पर्धा इंस्पायर अवार्ड नामक प्रदर्शनी आईआईटी नई दिल्ली में 14 व 15 फरवरी 2019 को प्रर्दशित हुआ। जिसमें प्रीति का मॉडल अन्तराष्ट्रीय स्पर्धा के लिए चयनित हुआ। यह निश्चित तौर पर विद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है।

(दयाराम साहू की पुरुसोत्तम सिंह ठाकुर से हुई बातचीत पर आधारित)

सीखने–सिखाने के लिए जरूरी है कई विकल्पों का होना

इंदु पंवार
प्रधानाध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिरगांव
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सहायक अध्यापिका – मंजू रावत
भोजन माता – रजनी देवी
नामांकन – 17

श्रीनगर गढ़वाल से 14 किमी दूर स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिरगांव अपनी शैक्षिक गतिविधियों के कारण अलग पहचान बनाये हुए है। गाँव के बीच में बने इस स्कूल में प्रवेश करते ही वहां की सजीव दीवारें आपका मन सहज ही अपनी ओर खींच लेती हैं। यहाँ दीवारों का प्रयोग बेहतर शिक्षण सामग्री के रूप में होता है। स्कूल जाने पर स्वभाव से मिलनसार यहाँ की प्रधानाध्यापिका इंदु जी स्निग्ध मुस्कान के साथ स्वागत करती हैं।

इंदु पंवार नयी–नयी शिक्षण गतिविधियों को स्वयं सीखने के लिए उत्सुक रहती हैं और उन्हें बच्चों के साथ साझा करने के लिए प्रयासरत रहती हैं। वे बातचीत में बताती हैं कि बचपन से पढने–लिखने का शौक था पढ़ने–लिखने का वातावरण घर से ही मिला।

उन्होंने अपने अध्यापन की शुरुआत 1997 में पौड़ी जनपद के कोट ब्लॉक के राजकीय प्राथमिक विद्यालय वीरसनी से की। संयोग से उस विद्यालय के प्रधानाध्यापक उनके प्राथमिक के अध्यापक रहे थे अर्थात गुरु और शिष्या एक ही विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे थे। वहां से कुछ और विद्यालयों में अध्यापन के पश्चात् 2010 में वे गिरगांव स्थानांतरित होकर आयीं। तब से अब तक ये स्कूल इनकी कर्मस्थली बना हुआ है।

गिरगांव स्कूल में अपने शुरूआती दिनों को याद करते हुए इंदु जी कहती हैं कि जब मैं स्कूल में आई तो विद्यालय व्यवस्थित नहीं था। कुछ पुरानी किताबें थीं, शौचालय की व्यवस्था नहीं थी। धीरे–धीरे विद्यालय के साथी अध्यापिका के साथ मिलकर चीजों को व्यवस्थित करने का कार्य शुरू किया। पुस्तकालय की स्थापना की और बच्चों को इसके इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया। आज विद्यालय में तीन शौचालय हैं। अभिभावकों को भी बच्चों की स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य शुरू किया।

विद्यालय जाने पर बाल साहित्य की आकर्षक किताबें अलमारी के बाहर मेज पर रखी दिख जाती हैं। बच्चे अपनी रुचि के अनुसार उन्हें पढ़ते रहते हैं। बच्चों का भाषा एवं अभिव्यक्ति का बेहतरीन कौशल इस बात की पुष्टि करता है कि विद्यालय में पाठयक्रम से इत्र पढ़ने–लिखने के अवसर बच्चों को उपलब्ध करवाये जाते हैं। बच्चे पूरे आत्मविश्वास के साथ कहानियां सुनाने में निपुण होने के साथ उनकी विवेचना करने में सक्षम हैं। बच्चों में भाषाई कौशल की दक्षता के लिए अपनाए जा रहे प्रयासों की बाबत वे बताती हैं कि–"यदि बच्चों को पढ़ने और अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जायें तो उनकी भाषाई दक्षता बढ़ जाती है। बिना रोक–टोक के बच्चों को पढ़ने के लिए किताबों से दोस्ती करने के खूब मौके देती हूँ। इस बात का भी ध्यान रखती हूँ कि वे क्या पढ़ रहे हैं और पढ़े को कितना समझ रहे हैं। इसके लिए उनके साथ खुद भी पढ़ती हूँ और उनसे पढ़ी हुई कहानी को सुनती भी हूँ। बच्चे कहानी सुना सकें इसके लिए बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करना बहुत जरूरी है। शुरूआती कक्षाओं में पढ़ने वाले छोटे बच्चे भी चित्रों को देखकर कहानी को खूबसूरत तरीके से सुनाते हैं"। यहाँ बच्चे केवल हिंदी ही नहीं अंग्रेजी विषय को भी चाव के साथ पढ़ते हैं।

इंदु जी समाज को स्कूल का एक अहम् हिस्सा समझती हैं। उनका मानना है कि ये दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। समुदाय का सक्रिय सहयोग और समर्थन विद्यालय के लिए वे महत्वपूर्ण मानती हैं। वह नियमित अन्तराल पर विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक का आयोजन कराती हैं। विद्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में गाँव के लोगों का सक्रिय प्रतिभाग होता है। वे अपनी साथी अध्यापिका के साथ मिलकर गांव का नियमित रूप से भ्रमण कर अभिभावकों से भी संपर्क और संवाद कायम करने का प्रयास करती हैं। इंदु जी ने अपनी बातचीत में यह भी बताया कि जब कोई बच्चा विद्यालय नहीं आता तो वे इसका कारण पता करती हैं और कई बार घर भी जाती हैं।

कब आपको शिक्षिका होने पर अधिक गर्व महसूस हुआ? ये प्रश्न पूछने पर उनकी मुस्कान हंसी में तब्दील हो गयी। कहने लगीं हर दिन बच्चों के साथ रहते हुए एक नयी सुखानुभूति होती है। फिर कुछ क्षण चुप रहकर कहा कि एक स्नेहिल क्षण जो मुझे शिक्षिका होने पर ही मिल सकता था, विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ की एक घटना का है जब मैंने अपनी शादी की वर्षगांठ पर बच्चों के अभिभावकों को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया। जब सब लोग वापस घर जाने लगे तो एक महिला ने मेरे हाथ में कुछ पैसे रखकर मेरी मुट्ठी बंद कर दी। बहुत स्नेह के साथ कहा "मैडम जी मना मत करना और मेरी हथेली में कभी न भूलने वाला उपहार दे गयीं। मेरी मुट्ठी में बंद उन तीस रूपयों में उस महिला का प्रेम और सम्मान उमड़ा हुआ था। इस बात को कहते हुए इंदु जी भावुक हो गयीं। इस एक वाकये से ही उनके गाँव वालों से संबंधों की प्रगाढ़ता को समझा जा सकता है। शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति उनकी सोच बहुत सकारात्मक है। वे कहती हैं शिक्षा और शिक्षक को नयी सकारात्मक परिवर्तनशीलता को स्वीकार करना चाहिए। शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है इसके लिए मात्र स्कूल ही पर्याप्त नहीं बच्चे अपने दैनिक जीवन की हर सामान्य घटना से कुछ सीखते हैं। बच्चों को अभिव्यक्ति के भरपूर मौके मिलने चाहिए जिससे वह अपने आसपास की जानकारियों को अपने अनुभव का हिस्सा बना सकें। यही बात अध्यापकों पर भी लागू होती है। इंदु जी अपनी बात पर जोर देते हुए कहती हैं कि शिक्षक को भी हमेशा अपने पेशेवर विकास के प्रति सजग होना चाहिये। एक शिक्षक में आत्मविश्वास का होना बहुत जरुरी है। साथ ही विविध तरीकों का शिक्षण में इस्तेमाल, कक्षा को रोचक और सीखने को सरल बनाता है।

शिक्षा में नवाचारों के लिए उत्सुक इंदु जी से जब उनकी प्रेरणा के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया– हम बहुत बार सही दिशा में कार्य करते हैं लेकिन हमें अपने आपको अपने काम को समझने का नजरिया नहीं होता। इसलिए हम शिक्षकों का आपस में संवाद होना जरूरी है। शुरूआती कक्षाओं के बच्चों के पढ़ने–लिखने के लिए उन्होंने बहुत से नए प्रयोग किये जिसे उन्हें पौड़ी विकास क्षेत्र के शिक्षकों के साथ साझा करने का अवसर मिला, जहाँ इंदु जी ने बखूबी अपने अनुभवों, गतिविधियों को साझा किया। इसे वे अपने आत्मविश्वास के लिए अपने कार्य को समझने का सुनहरा समय मानती हैं। वे अपने विद्यालय के बच्चों की कहानी सुनाने आदि गतिविधियों को फेसबुक पर साझा करती हैं और प्राप्त प्रतिक्रियाओं और टिप्पणियों पर भी गौर करती हैं।

पिछले साल से, इंदु जी, श्रीनगर में संयुक्त चिकित्सालय के सामने झोंपड़ पट्टियों में रहकर लोहे के औजार बनाने वाले परिवारों के बच्चों को अपने विद्यालय मे नामांकन करवा कर पढ़ा रही हैं। पूछने पर उन्होंने बताया कि चूंकि मेरे विद्यालय जाने का भी ये ही मार्ग है अतः यहाँ से गुजरने पर इन बच्चों को अपने माता–पिता के साथ काम में हाथ बँटाते देखकर बुरा लगता था कि पढ़ने लिखने की उम्र में ये पेट के लिए काम करने के लिए मजबूर हैं। इस से व्यथित होकर मैंने निश्चय किया कि इन बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना चाहिये। इस क्रम में सबसे पहले मैंने इनके माता–पिता से बात की। लेकिन बच्चों को स्कूल न भेजने के उनके कई व्यावहारिक तर्क थे। काफी मान–मनोवल और बच्चों की सुरक्षा और पूरा ध्यान रखने आदि का आश्वासन देने के बाद आखिरकार सफलता मिल सकी। फिर बच्चों के आने जाने के लिए सहायक अध्यापिका से विमर्श कर वाहन व्यवस्था की और उनके लिए स्टेशनरी, बैग, ड्रेस आदि का इंतजाम भी खुद के संसाधनों से किया। उन्होंने महसूस किया कि ये बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं, आवश्यकता है उनको अवसर दिए जाने की।

समुदाय के साथ उनके अच्छे रिश्ते हैं और गाँव के सभी सामाजिक कार्यों में उनको अवश्य ही आमन्त्रण होता है और वे भी समय निकालकर उनमें प्रतिभाग करती हैं। आगे उन्होंने बताया कि कुछ अभिभावकों द्वारा उनसे कहा गया कि वे बच्चों को यदा–कदा डाँटे–पीटें भी। लेकिन उनका स्पष्ट मत है कि डांटने, फटकारने और पिटाई का सीखने से कोई संबंध नहीं है। वो बताती हैं कि वे सभी बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि से व्यक्तिगत रूप से परिचित हैं और मानती हैं कि अधिकांश अभिभावक कई कारणों से अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। उनका मानना है कि प्रत्येक बच्चा

सीख सकता है यद्यपि सीखने की सबकी अपनी अपनी गतियाँ होती हैं। और सबके सीखने के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं को अपनाना पड़ता है। इंदु जी बच्चों की बातों को गहनता से सुनती हैं। उनकी बातों को पूरा स्थान देती हैं। विद्यालय जाने पर इस बात की पुष्टि भी हो जाती है। वहां के बच्चे एक बार आपके साथ घुल–मिल जाने के बाद जिस तरह के प्रश्न पूछते हैं, स्पष्ट हो जाता है कि इसके पीछे शिक्षक का कठिन श्रम छुपा है।

इंदु जी को अपने पेशे से प्यार है और अपने दायित्वों का पालन पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करती हैं। इस बात की पुष्टि अभिभावक और उनको जानने वाले भी करते हैं। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उनके नवाचारों को खूब सराहना मिलती है। उनके पढ़ाने का पूरा तरीका बाल केंद्रित है और बच्चों को अभिव्यक्ति के पूरे अवसर उनकी कक्षा में मिलते होते हैं। इस बात की पुष्टि सुबह प्रार्थना सभा से लेकर दिन भर की होने वाली विभिन्न गतिविधियों यथा– योग, डिबेट, खेल आदि से हो जाती है। उनकी कक्षाओं में पियर लर्निंग के पूरे मौके उपलब्ध होते हैं। प्रायः कक्षा तीन से पाँच तक के सभी विषयों को वे पढ़ाती हैं। अपने शिक्षण में एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों को आधार बनाती हैं। इसके अलावा वे शिक्षण में वर्कशीटों का इस्तेमाल करती हैं और बच्चों को टी.एल.एम. निर्माण प्रक्रिया में भी शामिल करती हैं। उन्होंने अंग्रेजी में बिग बुक के लिए काफी टी.एल.एम. बनाए हैं। उनकी शिक्षण प्रक्रियाओं में ज्यॉमिति और आकृति के लिए वर्कशीटों के विभिन्न उपयोग भी कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में देखे जा सकते हैं। इसके अलावा उनका मानना है कि बच्चों के साथ अंग्रेजी भाषा पर मेहनत की जाये तो वे अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त पर्यावरण अध्ययन में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं और इसके लिये वे खूब मेहनत भी करती हैं। वे प्रत्येक बच्चे का लर्निंग स्तर जानती हैं और प्रत्येक बच्चे के लर्निंग स्तर को सुधारने के लिए उनके पास पृथक योजना होती है। इस बात की पुष्टि उनकी डायरी से स्पष्टता होती है। इसके अलावा वे कुछ समय पाठों को फिर से देखने में भी लगाती हैं। इससे उन्हें पता लग जाता है कि बच्चे का प्रदर्शन कहाँ पर संतोषप्रद है और किन जगहों पर कुछ अंतराल रह गये हैं। उनका प्रयास रहता है कि कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं से ऐसे वातावरण को बनाया जाए जो बच्चों को अधिकाधिक प्रश्न पूछने को प्रेरित कर सकें।

''इंदु जी एक मेहनती शिक्षिका हैं और जो भी बेहतरी के लिए उन्हें सलाह दी जाती है वे उसे करने का पूरा प्रयास करती हैं। प्रशिक्षणों से प्राप्त अनुभवों को बच्चों के साथ कक्षा में प्रयुक्त करती हैं, जिसका प्रभाव बच्चों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।''

– जे.पी. काला, बी.ई.ओ, पौड़ी

(इंदु पंवार की गणेश बलोनी व अमरदीप पॉल से हुई बातचीत पर आधारित)

शिक्षक होने के असल मायने

राकेश वैरवा
सहायक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
रेलवे स्टेशन, निवाई, टोंक, राजस्थान

प्रधानाध्यापक – पारसमल जैन
भोजन माता – लीला देवी
नामांकन – 31

लगभग 25 परिवारों की एक छोटी सी वैरवा ढाणी रेलवे स्टेशन के उस पार स्थित है गांव में कुछ कच्चे तो कुछ पक्के घर हैं। ग्रीष्मकालीन पुस्तकालय की याद करते हुए शिक्षक राकेश बताते हैं कि गर्मी की छुट्टियों में गांव में ही एक छोटा सा पुस्तकालय अपने घर के बाहर चबूतरे पर चला रखा है जहां सुबह–शाम के वक्त ढाणी के बच्चे और युवा आकर बैठते हैं और अपनी इच्छानुसार कहानी की पुस्तकें पढ़ना, चित्रों में रंग भरना और कहानी लिखने का कार्य करते हैं। चबूतरे पर बच्चों को बड़ी दिलचस्पी से कार्य करते हुए देखकर सामने से गुजरते ढाणी के लोगों का ध्यान इन चबूतरों की ओर जाते ही कुछ पल उन्हें वहां रूककर देखने को विवश कर देता है।

राकेश ने बताया कि आमतौर पर राजस्थान में भीषण गर्मी के कारण लगभग डेढ़ महीने बच्चों की छुट्टियां हो जाती हैं और गांव में उस तरह के मनोरंजन के साधन भी नहीं होते हैं। लाइट का अभाव रहता है अत बच्चे कड़ी धूप में पेड़ के नीचे अपने स्थानीय खेल खेलने और घर परिवार के कामों में ही अपना समय व्यतीत करते हैं। जैसा आज मैं अपने परिवेश में देखता हूं ठीक ऐसे ही मेरा भी बचपन बीता। मुझे लगता है कि एक शिक्षक होने के नाते मुझे बच्चों के लिए इन गर्मी की छुट्टियों में कुछ खास करना चाहिये और इसी के तहत अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के अनिल गुप्ता से मेरी मुलाकात हुई और उन्होंने मुझे इन छुट्टियों में एक पुस्तकालय संचालन हेतु प्रेरित किया। जब मैंने ये पुस्तकालय शुरू किया तो गांव के लोग उपहास में मुझसे कहते कि माटसाब गर्मी की छुट्टियों में तो थोड़ा आराम कर लिया करो। बच्चों को इस समय भी पढ़ाते रहते हो, पर जब बच्चे सुबह के वक्त पुस्तकालय से जुड़ने लगे और घर पर पुस्तकें पढ़ने लगे तो फिर इन अभिवावकों का यह उपहास प्रशंसा में बदल गया। अब उनका कहना होता कि माटसाब आपने ये बढ़िया काम किया। दिन भर कहां तो बच्चे इतनी शैतानी किया करते थे अब किताबें पढ़ते रहते हैं। आपस में अपनी–अपनी पढ़ी किताबों और चित्रों पर बातचीत करते हैं। हमारे दादा–दादी बड़े चाव से इन बच्चों की बातें सुनते रहते हैं। कुछ बुजुर्ग लोग भी जिन्हें पढ़ना नहीं आता बच्चों से कहानी सुनते हैं और किताब को उलट–पलट कर चित्र ही देखते रहते हैं।

शिक्षक राकेश ग्रीष्मकालीन पुस्तकालय के अनुभवों को विद्यालय में भी उसी रूप में अपनाने का प्रयास करते हैं। वे राजकीय प्राथमिक विद्यालय रेलवे स्टेशन निवाई में 2001 से नियुक्त हैं। स्थानीय शिक्षक होने के कारण विद्यालय के लगभग सभी बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आते हैं।

जब भी कोई बच्चा अनुपस्थित रहता है तो वे घर जाकर सम्पर्क कर बच्चे के नहीं आने का कारण पता करते हैं। बच्चे भी उनके साथ बहुत आत्मीय व्यवहार रखते हैं। उनका कहना था कि वैसे तो प्राथमिक कक्षाओं के लिए दो शिक्षक होते हैं। एक शिक्षक के पास दो विषय पढ़ाने के लिए निर्धारित हैं, परन्तु मैं सभी विषयों में बच्चों के साथ काम करता हूं। गणित शिक्षण पर आज उनके द्वारा कक्षा 3 में कार्य किया गया। जिसमें सींक झाड़ू से छोटी–छोटी तीलियों को तोड़कर बच्चों ने दस–दस के बंडल बनाये थे और उन्हें धागे से बांधा था। ये सामग्री बच्चों की संख्या के अनुपात में पर्याप्त थी। बच्चों को घटाव की अवधारणा सिखाने में इसका उपयोग किया गया। इसके लिए पहले उन्होंने बोर्ड पर प्रक्रिया को गणित का एक सवाल करते हुए समझाया, जिसमें तीली ओर बंडल से उधार लेने की अवधारणा को बच्चों से अंतःक्रिया करते हुए समझाया। तीन उधार के और बाकी के अलग–अलग सवाल लेते हुए तीली बडंल की मदद से इसे बोर्ड पर समझाया गया। फिर एक–एक बच्चे को यह सामग्री दी गयी और बोर्ड पर लिखे सवाल को हल करने का अभ्यास दिया। लगभग सभी बच्चों ने सहजता से इसे हल किया। नीरज नाम के बच्चे को इस सवाल को करने में थोड़ी कठिनाई आयी अतः उसे बोर्ड पर बुलाकर एक और सवाल हल करवाया गया ताकि बच्चों ने जहां गलती की उसे ठीक करते हुए उसकी घटाव पर सही समझ बनाई जा सके। इसके बाद घटाव के कुछ अभ्यास कार्य बच्चों को दिये गये।

शिक्षक राकेश से मैंने सवाल पूछा कि आमतौर पर विद्यालयों में घटाव के सवाल के लिए बोर्ड पर ही अवधारणा को सिखाया जाता है इस सामग्री से कैसे बच्चों को मदद मिलती है? उनका कहना था कि ठोस चीजों से यदि अवधारणा पर कार्य की शुरुआत की जाती है तो यह बच्चों को अवधारणा को ठीक से समझने और मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाने में काफी सहायक होती है। मैंने बच्चों को संख्याओं पर कार्य के दौरान, ठोस सामग्री को खूब काम में लिया। अक्सर बरसात के मौसम में गांव में काली मिट्टी आसानी से मिल जाती है। मैंने बच्चों से पचास–पचास मिट्टी की गोलियों को बनवाया और कक्षा में एक टोकरी में भर दिया। संख्या सिखाने के दौरान बच्चों को इन गोलियों की मदद से संख्या नाम, चीजों को गिनना और जोड़ और घटाव का अभ्यास करवाया। कक्षा 1 के बच्चे भी इसी प्रकार का ठोस चीजों से अभ्यास करते हैं। बच्चों की कापियां देखने में बच्चे संख्याओं के साथ ठोस चीजों का जुड़ाव लेते हुए अभ्यास करते हैं जिसमें गणितीय तर्क की ओर बढ़ने का बच्चों का प्रयास रहता है। जो आगे गणितीय अवधारणाओं पर समझ के साथ ही परिवेशीय गणित को सीखने में भी मदद करता है। चूंकि प्राथमिक विद्यालय में सीमित संसाधनों से ही कार्य करना होता है। अतः आसपास मौजूद सामग्री का शिक्षण में कैसे उपयोग हो, ये कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में और बेहतर सीखने में मदद करता है। राकेश का कहना है कि अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के पुस्तकालय से मैं बच्चों के लिए नयी–नयी किताबें और सामग्री को लेकर आता हूं साथ ही नियमित तौर पर कुछ न कुछ पढ़ता रहता हूं ताकि शिक्षा में कहां क्या प्रयास हो रहे हैं उनसे अवगत रहूं। एक दिवसीय गणित की कार्यशालाओं में भी मुझे यह सीखने को मिला कि बच्चों के साथ कार्य करने हेतु आपको नित नये प्रयोग करते रहने चाहिये इससे शिक्षण में जीवंतता बनी रहती है।

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों का अंग्रेजी में स्तर अपेक्षाकृत कम होता है, आप इसे किस तरह देखते हैं? राकेश जी का कहना था कि बच्चों का स्तर कम नही होता दरअसल हमारे सीखने–सिखाने के तौर–तरीके आज भी रूढ़िवादी ही हैं। अपने प्रयासों का जिक्र करते हुए राकेश जी बताते हैं कि मैं बच्चों को बात ही बात में अंग्रेजी सीखने के लिए प्रेरित करता हूं। निर्देश अंग्रेजी में देता हूं। बच्चों से अग्रेजी में ही छोटे–छोटे वाक्यों में सवाल–जबाव करता हूं। रोजमर्रा इस तरह से संवाद करने से धीरे–धीरे बच्चे प्रश्नों की भाषा को समझकर टूटे–फूटे वाक्यों में उत्तर देने का प्रयास करते हैं। परिवेश में अपने आसपास दिखाई दे रही चीजों के बारे में अंग्रेजी में संवाद करने के खूब मौके होते हैं उनका शिक्षण में उपयोग करता हूं। राकेश जी ने कक्षा 4 व 5 के बच्चों से उनकी कक्षास्तर की पुस्तक से पढने का कार्य करवाया जिसमें अधिकांश बच्चे ठीक अंग्रेजी वाक्यों का उच्चारण कर पा रहे थे। राकेश का कहना था कि जब यहां के बच्चे उच्च प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने जाते हैं तो वहां के शिक्षक मुझसे कहते हैं कि आपके विद्यालय से आये बच्चों का स्तर काफी अच्छा है। उनका ये कथन मेरे प्रयासों को थोड़ा सुकून भी देता है और अच्छा भी लगता है।

''राजकीय प्राथमिक विद्यालय रेलवे स्टेशन में विजिट के दौरान मैंने बच्चों का स्तर देखा जो शिक्षक के बेहतरीन प्रयासों को दिखाता है। हमारी वर्तमान शिक्षा में ऐसे कम अवसर हैं जब शिक्षक के अच्छे प्रयासों को सम्मान की नजर से देखा जाये। शिक्षक राकेश बच्चों के साथ बहुत मेहनत करते हैं जो हमारे विभाग और अन्य शिक्षकों के लिए गर्व की बात है।''

– सविता शर्मा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, निवाई, टोंक

(शिक्षक राकेश की अनिल गुप्ता से हुई बातचीत पर आधारित

बच्चों के साथ काम करके भी सीखते हैं शिक्षक

रामेश्वर प्रसाद लोधी
प्राथमिक शिक्षक
शासकीय प्राथमिक शाला कल्याणपुर
राहतगढ़, सागर, मध्यप्रदेश

प्रधानाध्यापिका – वीणा राय
भोजन माता – श्यामरानी, सुमितरानी
नामांकन – 47

रामेश्वर जी मूलतः सागर जिले के राहतगढ़ ब्लॉक के रजौली गाँव के रहने वाले हैं। उन्होंने सागर में रहकर अपनी बी.एससी. की पढ़ाई की और उसके बाद वे कम्प्यूटर का कोर्स (पी.जी.डी.सी.ए.) करने भोपाल चले गए। लेकिन उसी दौरान पैतृक संपत्ति का बंटवारा होने से उनके घर में आर्थिक संकट पैदा हो गया और वे अपने परिवार की मदद करने के लिए

पढ़ाई छोड़कर गाँव लौट आए और खेती करने लगे। अगले चार वर्षों में उन्होंने खेती करके अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को धीरे–धीरे बेहतर किया। लेकिन पढ़ने की ललक अब भी मन में थी। वे आगे पढ़ना और पढ़ाना चाहते थे। इसी दौरान 2005 में उन्होंने संविदा शिक्षक वर्ग–3 की परीक्षा भी पास कर ली लेकिन डी.एड. न होने की वजह से उनकी नियुक्ति होना संभव नहीं हो सका। आर्थिक स्थिति की वजह से वे डी.एड. नहीं कर पा रहे थे लेकिन उनका जुनून इन बाधाओं से कहीं बड़ा था। उन्होंने 2008 में अतिथि शिक्षक के रूप में शासकीय माध्यमिक शाला रजवांस में पढ़ाना शुरू कर दिया। इसी साल संविदा शिक्षकों के पद फिर निकले और डी.एड. न होने के बावजूद उन्होंने वह परीक्षा फिर से दी। वे एक बार फिर पास भी हो गए। इस सफलता से उन्होंने तय किया कि वे अब डी.एड. कोर्स में एडमिशन जरूर लेंगे और भविष्य में शासकीय शिक्षक ही बनेंगे।

वे 2009 में शासकीय माध्यमिक शाला पचौहा, 2011 में शासकीय हाई स्कूल मीरखेड़ी और 2012 में शासकीय माध्यमिक शाला मुरली बासौदा में अतिथि शिक्षक के रूप में पढ़ाते रहे। राहतगढ़ में डी.एड.करने की सुविधा नहीं थी, इसलिए अतिथि शिक्षक होने के दौरान उन्होंने सागर में रहकर पढ़ने के लिए पैसा जमा किया। इस साल उन्होंने सागर के ज्ञानवीर कॉलेज में डी.एड. में एडमिशन लेकर 2011 में डी.एड. पास किया। 2011 में उन्होंने संविदा शिक्षक भर्ती परीक्षा एक बार फिर दी। इस बार उन्होंने वर्ग–3 में प्रदेश में 26 वां स्थान प्राप्त किया। राहतगढ़ ब्लॉक की सूची में उनके सबसे ज्यादा अंक थे। इसी परीक्षा में वर्ग दो में भी उनका चयन हो गया था लेकिन वे अपने माता–पिता की सेवा करने के लिए राहतगढ़ में ही रहना चाहते थे। अतः उन्होंने राहतगढ़ शहर से 2 किलोमीटर दूर शासकीय प्राथमिक शाला कल्याणपुर में 2013 से संविदा शिक्षक वर्ग–3 के रूप में काम करना शुरू कर दिया।

शिक्षण कार्य की शुरूआत

रामेश्वर जी बताते हैं कि अतिथि शिक्षक के रूप में काम करते हुए उन्होंने अपनी शालाओं को समय से खोलना और पूरे समय उसके संचालन को सुनिश्चित किया। उनके आने के पहले ऐसा नहीं

होता था। उन्होंने स्कूल में प्रार्थना सभा की भी शुरूआत की। उनके इन कामों को देखकर पालक और ग्रामीण भी और सहयोग करने लगे। रामेश्वर जी का मानना है कि पढ़ाई के लिए सबसे पहले विद्यालय में अच्छा माहौल बनाना जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होने शासकीय प्राथमिक शाला कल्याणपुर में सबसे पहला काम कक्षा कक्ष को पोस्टर्स और टी.एल.एम. से सजाने का किया। कक्षा कक्ष को सुन्दर बनाने के बाद उन्होंने शाला परिसर को हरा भरा और जीवंत बनाने के लिए विविध प्रकार के पेड़–पौधे लगाना शुरू किया। उनके साथ ऐसे काम करने में बच्चों को भी मजा आने लगा। वे स्कूल खुलने के एक घंटा पहले ही स्कूल पहुँच जाते और काम में जुट जाते। स्कूल बंद होने के आधे घंटे बाद तक वे बच्चों के साथ काम और बातचीत करते रहते। उनके काम और लगन को देखकर पालक भी उनके साथ स्कूल समय के पहले और बाद में काम करने लगे। रामेश्वर जी चाहते हैं कि उनके स्कूल के बच्चे आगे नवोदय विद्यालय में पढ़ें। इसके लिये बच्चों और रामेश्वर जी के मिले–जुले प्रयासों से जल्द ही कल्याणपुर स्कूल परिसर रंग–बिरंगे फूलों, पत्तों और पक्षियों से खिल उठा। स्कूल परिसर को देखने के बाद उनके इन कामों की प्रशंसा तत्कालीन बी.आर.सी.सी. प्रशांत तिवारी, बी.ई.ओ. पी.एल. तिवारी, सी.ई.ओ. और कई अधिकारियों ने की। हाल ही में उनके स्कूल में आयोजित बाल मेले में फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर कृष्ण कुमार नामदेव और एस.डी.एम. पवन बारिया भी शामिल हुए। उन्होंने भी रामेश्वर जी के कामों की खुलकर सराहना की। बच्चों द्वारा इन अतिथियों से पूछे गए सवालों को सुनकर एस.डी.एम. पवन बारिया ने कहा कि बच्चों में प्रश्न और तर्क करने का कौशल सराहनीय है, इससे रामेश्वर जी का उत्साह बढ़ा।

ऐसे बना हरा भरा स्कूल परिसर

स्कूल परिसर के पेड़–पौधों को सालभर हरा–भरा रखने के लिए रामेश्वर जी को कई महीनों तक स्कूल के बाहर लगे हैंडपंप से बाल्टियों में भरकर पानी लाना पड़ता था। इसमें उनकी काफी ऊर्जा लग जाती थी। एक बार तत्कालीन ए.पी.सी. एवं वर्तमान संकुल प्राचार्य आर. के. मिश्रा उनके स्कूल में आए। उन्हें शाला परिसर का बगीचा बहुत अच्छा लगा। उन्होंने रामेश्वर जी की सराहना की और उनसे उनकी समस्याओं के बारे में पूछा। रामेश्वर जी ने सिंचाई के पानी की समस्या के बारे में उन्हें बताया। उन्होंने इसके समाधान के बारे में रामेश्वर जी से ही सुझाव माँगा। रामेश्वर जी ने सुझाया कि राहतगढ़ के समाजसेवी निर्मल जैन का वेयर हाऊस स्कूल के पास ही है। यदि वे चाहें तो उनके वेयर हाऊस के बोरवेल से सिंचाई के लिए पानी मिल सकता है। मिश्रा जी ने तरकीब बताई कि शाला के प्रतिभा पर्व कार्यक्रम में निर्मल जी को आमंत्रित किया जाए और फिर उनके सामने यह प्रस्ताव रखा जाए। रामेश्वर जी ने ऐसा ही किया। निर्मल जी को भी यह हराभरा सुन्दर शाला परिसर अच्छा लगा। उन्होंने सहर्ष बोरवेल की मोटर से सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध करवाने की सहमति दे दी। ग्राम पंचायत के सचिव ने भी स्कूल तक पानी पहुँचाने के लिए पाइप लाइन बिछवाने में सहयोग किया। सिंचाई के लिए पानी की सुविधा होने से रामेश्वर जी और स्कूल के बच्चों का उत्साह और बढ़ गया। उन्होंने अपने स्कूल में फूलों के पेड़–पौधों के साथ ही फलदार पेड़ जैसे– आँवला, आम, बिही (अमरूद), कपास भी लगा दिए। अब वे रबी के मौसम में पाये जाने वाली फसलों

के नमूने (डेमो फार्म) भी अपने स्कूल परिसर में तैयार करते हैं। इनके पास लगाई गई तख्तियों को पढ़ने से बच्चों को अनाज, दालों, सब्जियों और उनसे शरीर को मिलने वाले पोषक तत्वों की जानकारी भी मिलने लगी है। उनके स्कूल में कई औषधीय वनस्पतियाँ भी लगी हैं। कई तरह के पेड़–पौधों, फसलों को लगाने और उनकी देखभाल करने से बच्चों को इनके बारे में बहुत सारी बातें पता चली हैं। अब वे स्कूल में आने वाले अतिथियों को शाला भ्रमण के दौरान, इनके बारे में, मौखिक जानकारियाँ देते हैं और स्कूल परिसर को और सुन्दर बनाने के लिए उनसे सुझाव भी माँगते हैं। इससे उनकी शाला का परिसर दिन–ब–दिन और सुन्दर बनता जा रहा है साथ ही बच्चों की जानकारियाँ और कौशल भी विकसित हो रहे हैं।

प्रेरणादायी स्कूल

रामेश्वर जी के स्कूल में कलेक्टर, डी.पी.सी., न्यूज चैनल्स के रिपोर्टर्स, क्षेत्रीय विधायक, कई अधिकारी और शिक्षक अब तक आ चुके हैं। कई स्कूलों के बच्चे भी शिक्षकों के साथ इस सुन्दर स्कूल परिसर को देखने आते हैं। राहतगढ़ के एक पूर्व एस.डी.एम. ने तो उनके स्कूल के बगीचे से प्रेरणा लेकर अपने कार्यालय में भी बगीचा तैयार करवाया। पूर्व विधायक पारूल साहू ने इस स्कूल में चल रही शैक्षणिक गतिविधियों को देखते हुए इस शाला को एक लाख रूपए कीमत का सौर ऊर्जा से चलने वाला ऑडियो–विडियो सिस्टम भेंट किया। बच्चे अब इसकी वॉल स्क्रीन और साऊंस सिस्टम पर शैक्षणिक वीडियो और फिल्में देखते हैं। कई चैनल्स ने उनके स्कूल पर न्यूज रिपोर्ट तैयार कर टी.वी. पर दिखाई है। जब पूर्व विधायक पारुल साहू दूसरी बार स्कूल आईं तो उन्होंने कक्षा कक्ष में टाइल्स लगवाने के लिए भी 80 हजार रूपए स्वीकृत किए। रामेश्वर जी ने अपने स्कूल परिसर में एक सुन्दर फव्वारा भी बनवाया है। इसके चारों ओर अशोक चक्र बना है। शहरों में जल प्रदूषण को दिखाने वाला एक सुन्दर मॉडल भी बच्चों ने उनके साथ मिलकर स्कूल परिसर में बनाया है। राज्य शिक्षा केन्द्र में पर्यावरण अध्ययन विषय की समन्वयक मीता गुप्ता भी 2015 में उनके स्कूल में आई थीं। उन्हें इस स्कूल में चल रही पर्यावरण अध्ययन की गतिविधियाँ बहुत प्रभावशाली लगीं। उन्होंने रामेश्वर जी को राज्य स्तरीय मूल्यांकन समिति में शामिल कर लिया। 2019 में राज्य स्तरीय असेसमेंट सेल के गठन के दौरान पर्यावरण अध्ययन विषय के विशेषज्ञों के पाँच सदस्यीय राज्य स्तरीय समूह में उन्हें विषय विशेषज्ञ शिक्षक के रूप में शामिल किया गया है।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथ जुड़ाव और पक्षी दर्शन की शुरूआत

राहतगढ़ के कन्या हाई स्कूल में 2017 में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का टीचर लर्निंग सेन्टर शुरू होने के बाद रामेश्वर जी यहाँ आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में नियमित रूप से शामिल होने लगे। फाउंडेशन के सदस्य भी उनके स्कूल में जाने लगे। रामेश्वर जी सेन्टर से कुछ किताबें लेकर पढ़ने लगे। वे 2018 में होशंगाबाद के केसला ब्लॉक में आयोजित ग्रीष्मकालीन आवासीय प्रशिक्षण में शामिल हुए। वहाँ सुबह–सवेरे घूमने के दौरान पक्षी दर्शन करना उन्हें बहुत अच्छा लगा। फाउंडेशन के सदस्य के. आर. शर्मा से उन्होंने इस बारे में बातचीत की जिससे उनका उत्साह बढ़ा। रामेश्वर जी ने तय किया कि वे अपने स्कूल में भी ऐसा कुछ करेंगे कि बच्चों को भी पक्षियों के अवलोकन का मौका मिल सके। लेकिन प्रश्नपत्र तैयार करने वाली समिति के प्रशिक्षण और स्कूल के अन्य कामों की वजह से उन्हें पर्याप्त समय नहीं मिल पाया। दिसम्बर 2018 में इन्दौर में आयोजित शीतकालीन आवासीय प्रशिक्षण में वे फिर शामिल हुए। के.आर.शर्मा से उनकी एक बार फिर बातचीत हुई। उन्होंने विचार मंथन शुरू कर दिया और कैम्प से लौटने के तुरंत बाद पक्षी दर्शन के नाम से एक अभिनव प्रोजेक्ट अपने स्कूल परिसर में शुरू किया। इसके तहत उन्होंने अपने स्कूल परिसर में लगे एक बबूल के पेड़ के नीचे पक्षियों के लिए दाना और पानी रखना शुरू किया। ऐसा करने से कुछ नए पक्षी भी वहाँ आने लगे। बच्चों के साथ मिलकर उन्होंने पक्षियों के बैठने के लिए झूले और छोटी मचान भी बनाई। इस क्षेत्र को और आकर्षक बनाने के लिए उन्होंने फाउंडेशन के सदस्य हिमांशु खोले से पक्षी विशेषज्ञ डॉ.सालिम अली की पुस्तक लेकर, उससे कई चित्र और जानकारियों के प्रिंटआऊट निकलवाकर वहाँ लगा दिए। स्कूल के कक्षा–कक्षों में टाइल्स लगने का काम चालू होने और ठंड का मौसम होने की वजह से रामेश्वर जी पक्षी दर्शन के पास ही तीसरी से पाँचवी तक की कक्षाएँ लगाकर पर्यावरण अध्ययन विषय पढ़ाने लगे। इस दौरान आसपास ज्यों ही कोई नया पक्षी दिखता है बच्चे एक–दूसरे को दिखाना शुरू कर देते थे। वे आसपास लगे चित्रों और जानकारियों की मदद से पक्षियों की पहचान करने लगे हैं। उनकी शरीर रचना और गतिविधियों का अवलोकन करने लगे हैं। बच्चे पक्षियों को लेकर अब बहुत उत्साहित हो गए हैं। वे चित्र, कविताओं, पाठ्यपुस्तक, पत्रिकाओं और प्रश्नों की मदद से पक्षियों के बारे में जानकारियों का आदान–प्रदान करने लगे हैं। रामेश्वर जी बताते हैं कि अब बच्चे रोजाना पक्षियों से जुड़ी नई–नई बातें और गतिविधियां करने लगे हैं।

फाउंडेशन के सदस्य हिमांशु खोले को खुरई से राहतगढ़ के रास्ते पर गाड़ियों से टकराकर या कुचलकर मरे कई पक्षी दिखा करते थे। उन्होंने स्कूल के बच्चों से इस विषय पर चर्चा की। इसके बाद बच्चे भी गाँव के आसपास पक्षियों के मरने की सूचनाएं रामेश्वर जी को देने लगे। एक दिन स्कूल की भोजन माता ने बताया कि गाँव की गौशाला के पीछे एक गिद्ध मरा पड़ा है। रामेश्वर जी अपने स्कूल के बच्चों के साथ उसे देखने गए। गिद्ध बिजली के तार के नीचे पड़ा था। उसकी गर्दन भी हरी–नीली पड़ गई थी। गाँव वालों का कहना था कि गिद्ध करेंट से मरा है। इसके बाद बच्चों ने फाख्ता, बुलबुल और गौरैया जैसे पक्षियों के मरने की सूचनाएं दर्ज कीं। बच्चे पक्षियों के मरने के

कारणों के बारे में स्कूल और घर पर चर्चा करने लगे। बच्चों को गाँव के लोगों ने जो कारण बताए वे उन्हें दर्ज करने लगे हैं। वे पक्षियों के पंख और पुराने घोंसले भी जमा करने लगे हैं। बच्चों ने अपने इन सभी कामों को बाल मेले में प्रदर्शित किया था। बाल मेले में बच्चों ने पक्षियों के बारे में रेंजर कृष्ण कुमार नामदेव से कई सवाल पूछे। बच्चों के कुछ सवालों पर तो वे भी निरूत्तर हो गए थे। उन्होंने कहा कि बड़ी कक्षाओं में आपको इनमें से कुछ सवालों के जवाब मिल जाएंगे और कुछ सवालों के जवाब आपको जीवन में खोजते रहने होंगे।

विश्वविद्यालय ने बच्चों के कामों को पुरस्कृत किया

स्कूल के दो बच्चों ने रामेश्वर जी के साथ जाकर अपने स्कूल में पक्षियों को लेकर किए गए कामों को सागर के विवेकानन्द विश्वविद्यालय के ज्ञानोत्सव में भी प्रस्तुत किया। वहां इन बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। फॉरेस्ट रेंजर कृष्ण कुमार नामदेव के सहयोग से स्कूल ने 3 मार्च विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस के अवसर पर पक्षियों को बचाने के लिए एक रैली भी निकाली। इस दिन समाजसेवी निर्मल जैन के आर्थिक सहयोग से स्कूल और गाँव में पक्षियों को गर्मियों में पानी उपलब्ध करवाने के लिए 50 सकोरे लगाए गए। उन्होंने पक्षियों के लिए 25 किलो दाना देने की पेशकश भी की।

पक्षी संरक्षण के लिए नाटक का मंचन

बच्चों ने पक्षियों के संरक्षण का संदेश देने के लिए रामेश्वर जी की मदद से एक नाटक भी तैयार किया है। रामेश्वर जी ने अपनी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति करते हुए रंगीन कागजों से नाटक के पात्रों के सुन्दर रंग–बिरंगे वस्त्र तैयार किए थे। फाउंडेशन के सदस्य हिमांशु खोले ने खुरई के एक शिक्षक नीरज वर्मा को इस नाटक को मोबाइल में शूट और एडिट करने के लिए तैयार किया। नीरज जी की मदद से इस नाटक को तैयार कर बाल मेले में प्रोजेक्टर पर दिखाया गया। नीरज जी ने भी अपने स्कूल के बच्चों के साथ मिलकर अंधेर नगरी चौपट राजा नाटक तैयार किया है।

तोते की आजादी के लिए प्रयास

एक दिन स्कूल के एक बच्चे ने बताया कि उसके घर में पिंजरे में एक तोता है। वह उसे मुक्त करना चाहता है। रामेश्वर जी ने पूछा कि क्या उसके माता–पिता इसकी अनुमति देंगे? उसने कहा कि यदि वे साथ चलें तो वह अपने माता–पिता को मना लेगा। रामेश्वर जी ने उसके माता–पिता को

समझाया कि पक्षियों को भी स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार है। बच्चे और रामेश्वर जी के तर्कों से माता–पिता सहमत हो गए। उन्होंने पिंजरे के द्वार खोल दिए। लेकिन कई सालों से पिंजरे में बंद होने की वजह से तोता उड़ नहीं पा रहा था। सभी को उसकी सुरक्षा की चिंता होने लगी। अतः उसकी सुरक्षा के लिए उसे पुनः पिंजरे में रखना पड़ा। रामेश्वर जी द्वारा बच्चों और पक्षियों के साथ किए गए कामों को देखकर फाउंडेशन के सदस्य के.आर.शर्मा ने उनके लिए खरगौन से तीन किताबें भेजीं। रेंजर कृष्ण कुमार नामदेव ने भी वन विभाग द्वारा स्कूली बच्चों के लिए तैयार गई की गई पुस्तिकाएं उन्हें उपलब्ध करवाईं। रामेश्वर जी अब इनकी मदद से बच्चों में पर्यावरण अध्ययन विषय के कौशल विकसित करने में लगे हुए हैं।

बच्चों ने अपने घर के आँगन में बनाए पक्षी दर्शन

स्कूल में रामेश्वर जी द्वारा बनाए गए पक्षी दर्शन से प्रेरित होकर बच्चे भी अपने घरों में पक्षी दर्शन प्रोजेक्ट को तैयार करने लगे हैं। अब तक 10 से अधिक बच्चों ने अपने परिवार के सदस्यों के सहयोग से अपने–अपने घरों के आँगन में पक्षी दर्शन बनाए हैं। कुछ बच्चे अभी इन्हें तैयार कर रहे हैं। पक्षियों के संरक्षण के लिए बच्चों के कामों और उत्साह को देखकर परिवार के सदस्यों को भी अच्छा लग रहा है। रामेश्वर जी बच्चों के घर जाकर उनके पक्षी दर्शन को देखते हैं और उनके परिवार के सदस्यों से चर्चा करते हैं। बच्चों ने स्कूल से मिले सकोरों को अपने पक्षी दर्शन में लगाया है और उसे अपने सुन्दर रंगीन चित्रों से सजाया है। बच्चों द्वारा बनाए पक्षी दर्शन देखने के उद्देश्य से रामेश्वर जी और शाला की प्रधानाध्यापिका श्रीमती वीणा राय के साथ गाँव में बच्चे शैक्षणिक भ्रमण भी करते हैं। स्कूल में लौटकर उनके अवलोकनों के बारे में शिक्षक उनसे चर्चा भी करते हैं। शाला परिवार अब आगे तितलियों और जानवरों को लेकर भी इसी तरह के प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए तैयारी कर रहा है। फाउंडेशन सदस्य और रेंजर कृष्ण कुमार नामदेव इसमें सहयोग कर रहे हैं।

ग्रामीणों का सहयोग

शिक्षक रामेश्वर जी और प्रधानाध्यापिका श्रीमती वीणा राय के बेहतर प्रयासों को देखकर गाँव की वॉटरशेड समिति ने स्कूल की बाऊंड्री वाल का एक हिस्सा तैयार करवाया है। इसी कड़ी में राहतगढ़ के व्यापारी राकेश जैन और मणिक जैन ने भी स्कूल के बच्चों के लिए फिसलपट्टी और

झूले लगवाने के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई है। एक अन्य व्यापारी द्वारा भी स्कूल के लिए कारपेट और वॉटर कन्टेनर भेंट किए गए हैं । गाँव के सरपंच द्वारा स्कूल को गमले भेंट किए गए हैं। साथ ही गाँव के लोग भी स्कूल के कामों में अलग–अलग तरह से सहयोग करते रहते हैं।

रामेश्वर जी के स्कूल को 2016 में ब्लॉक स्तरीय और 2018 में जिला स्तरीय स्वच्छता पुरस्कार तथा 2017 और 2018 में स्कूल प्रबंधन में शैक्षणिक स्तर पर उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। वे बताते हैं कि बचपन में अभिव्यक्ति के पर्याप्त मौके न मिल पाने की वजह से वे अच्छी तरह अपने विचारों और कामों की अभिव्यक्ति नहीं कर पाते थे। इस समस्या से उबरने में उन्हें बहुत समय लगा। वे चाहते हैं कि उनके स्कूल के सभी बच्चों को पढ़ाई के साथ–साथ खुद करके सीखने और अभिव्यक्ति के भरपूर मौके मिलें ताकि वे जीवन में सभी तरह की चुनौतियों का हल बिना निराश हुए खोजते रह सकें। वे कहते हैं कि बच्चों के साथ काम करते हुए उन्होंने भी बहुत सीखा है। सभी बच्चों को उनकी आवश्यकता के अनुसार सीखने के मौके दे पाना शिक्षक के लिए चुनौती होती है। बच्चों को जब उनके नजरिए से रोचक और सार्थक काम दिए जाते हैं तो उनमें खुद करके सीखने का उत्साह पैदा होता है, जिससे उनमें कई कौशलों का विकास साथ–साथ होता है। पक्षी दर्शन के माध्यम से कई बच्चों ने कविता, कहानी, निबंध लिखने शुरू किए हैं। कई बच्चों ने चित्र बनाना और रंग भरना शुरू किया है। कई बच्चे स्कूल के पास के जंगल में पक्षी दर्शन के लिए जाने की जिद करने लगे हैं। शैक्षणिक भ्रमण के दौरान बच्चे कुछ पंख और पुराने घोंसले भी जमा करते हैं। कुछ अन्य बच्चों ने मिट्टी, पत्ते और पक्षियों के पंख लेकर खिलौने बनाने शुरू कर दिए हैं। सीखने–सिखाने के इन तरीकों से ही बाल केन्द्रित शिक्षा की सच्ची अनुभूति हुई है। रामेश्वर जी का कहना है कि शाला प्रभारी वीणा राय, सी.ए.सी. विनोद ताम्रकार और ग्रामवासियों के सहयोग के बिना शाला परिसर को सुन्दर बनाना असंभव था।

लेख से संबंधित वीडियो लिंक्स–

बंसल न्यूज चैनल

https://www.youtube.com/watch?v=ycMcq_3ZpYI&t=4s
https://www.youtube.com/watch?v=4_UaaR9D-gE&t=7s

वीणा देवी यूट्यूब चैनल

https://www.youtube.com/watch?v=CcesxmsdWss

खुरई ब्लॉक के मुकारमपुर स्कूल के शीर्षक नीरज वर्मा का neeraj.verma lodhi नाम से से यूट्यूब पर चैनल है। इस पर उन्होंने अपने शैक्षणिक कार्यों की कुछ वीडियो डाली हैं जिसमें नाटक दयालु सिद्धार्थ

https://www.youtube.com/watch?v=Pbu3AXZqwj4&t=5s और अंधेर नगरी, चौपट राजा

https://www.youtube.com/watch?v=Pbu3AXZqwj4&t=5s भी शामिल हैं

(रामेश्वर प्रसाद लोधी की हिमांशु खोले से हुई बातचीत पर आधारित)

सपनों को लगाए पंख

गीता नौटियाल
सहायक अध्यापिका
राजकीय उच्च प्राथमिक बैनोली, तुनेटा
जखोली, रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड

प्रधानाध्यापक	–	**राजेन्द्र सिंह पंवार**
सहायक अध्यापिका	–	**अमीता रौथाण**
भोजन माता	–	**चंपा देवी**
नामांकन	–	**18**

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बैनोली ब्लॉक जखोली जिला रुद्रप्रयाग में स्थित है। रुद्रप्रयाग जनपद मुख्यालय से इसकी दूरी लगभग 18 किलोमीटर है। बैनोली गाँव से होते हुए विद्यालय जाने का रास्ता है। गाँव के साफ सुथरे वातावरण से मन ताजगी का अहसास करता है। अधिकांश घरों के सामने माल्टा के पेड़ फलों से लदे हुए हैं। जैसे ही आप विद्यालय में प्रवेश करते हैं बच्चों द्वारा बनाई गई क्यारियाँ आपका ध्यान खींचती हैं, जिनमें रंग–बिरंगे खिले फूल मानो हर आने वाले का स्वागत कर रहे हों। विद्यालय प्रांगण साफ–सुथरा और वृक्षों से आच्छादित है। सुबह की प्रार्थना सभा में संगीतमय गीत की प्रस्तुति विद्यालय के वातावरण में ताजगी ला देती है। इन सभी प्रयासों के पीछे शिक्षिका गीता नौटियाल की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आपके प्रयासों और शिक्षक बनने की यात्रा के बारे में जब जान पाया तो आपने बताया कि मेरा बचपन से ही शिक्षक बनने का सपना था। जब मैं अपने पिताजी से जानना चाहती थी कि शिक्षक बनने के लिए क्या करना पड़ता है? तो वह कहते कि खूब पढ़ना पड़ता है। फिर मैंने हिंदी विषय से एम.फिल.की डिग्री प्राप्त की और एक प्राइवेट विद्यालय में शिक्षक के रूप में काम करने लगी। इसी बीच मेरा नाम अंशकालिक शिक्षक के रूप में सरकारी सेवा में आ गया। पिता जी को मेरी नियुक्त का पत्र प्राप्त हुआ तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह पत्र देने के लिए मेरे स्कूल आ रहे थे, वह अपनी खुशी मुझसे कह भी न पाए और रास्ते में ही उनका एक्सीडेंट हो गया। मुझे सूचना मिली की आपके पिता जी का एक्सीडेंट हो गया है। मेरे पहुँचने से पहले ही पिता जी नहीं रहे। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि पिता जी नहीं रहे। किन्तु इस घटना के बाद शिक्षक बनना मेरा सपना नहीं लक्ष्य बन गया। मैंने अपने सपने को 1995 में पंख लगा दिए। अब मेरा लक्ष्य है मेरे विद्यालय का हर बच्चा सीखे इसके लिए निरंतर प्रयत्नशील रहती हूँ। शिक्षा जगत ने मेरे प्रयासों पर मुझे शिक्षक जीवन की अनमोल उपलब्धि दी और 5 सितम्बर 2014 को शिक्षक दिवस पर राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया।

वर्तमान में सरकारी स्कूलों के प्रति सामाजिक नजरिये में बदलाव एवं गिरते नामांकन के कारणों पर जब चर्चा की तो आपने बताया, बैनोली गाँव में लगभग 40 से 42 परिवार रहते हैं। मुझे इस बात का दुःख है कि पिछले दो तीन सालों में गाँव से लगभग 10–12 परिवार आजीविका के लिए पलायन कर चुके हैं। जिसका प्रभाव गाँव पर तो पड़ा ही उससे हमारा स्कूल भी अछूता नहीं रहा। जहाँ विद्यालय में 35 से 40 बच्चों की संख्या होती थी, वह संख्या 18 बच्चों की हो गई है। गाँव से

पलायन एक महामारी की तरह पहाड़ों को अपनी चपेट में ले रहा है। जिससे मेरे पहाड़ों के गाँव और स्कूल खाली होते जा रहे हैं। मैंने पूछा कि आपका मूल शिक्षण विषय हिंदी भाषा है, भाषा को लेकर आपका क्या मानना है? आपका मानना है कि भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि दुनिया को जानने समझने का माध्यम भी है। मेरा विषय हिंदी भाषा है तो इस विषय से विशेष लगाव भी है। भाषा पर काम करते हुए देखा कि भाषा बच्चों से प्रेम करने का माध्यम है। भाषा ही है जो बच्चों को हमारे करीब लाती है और दूर भी ले जाती है। हमारी भाषा बच्चों को दोस्त बना लेती है जिससे वह अपनी बात बेझिझक कहते हैं। बैनोली गाँव नहीं मेरा घर है, जिसके कारण सभी बच्चों के परिवार के बारे में जानती हूँ। मैं बच्चों से बातचीत को बहुत महत्व देती हूँ। जिससे उनके घर, सुख–दुःख के बारे में जानने पर एक लगाव बनता है। बच्चा अगर ठीक से नहीं बोलता तो मुझे पता लग जाता है कि इसे कुछ दिक्कत है। फिर मैं उसकी समस्या जानकार उसका निवारण करने का प्रयास करती हूँ। ऐसी ही एक घटना है, जुलाई में पूजा नाम की एक लड़की कक्षा 6 में आई। वह बात करने में भी डरी रहती थी। मेरी चिंता पूजा के गुमसुम रहने से बढ़ती थी। मैंने कारणों का पता लगाना शुरू किया तो पता लगा कि घर के हालात ठीक नहीं थे। घर में उसे पढ़ने का वक्त ही नहीं मिलता था। स्कूल की पढाई में भी उसका मन नहीं लगता था। पूजा का आत्मविश्वास कैसे लौटे यह मेरी बड़ी चिंता थी। उसके लिए मैंने प्रयास करना शुरू किया। पूजा को स्कूल में ही काम पूरा करने का समय और प्रोत्साहन देना शुरू किया। हमारा स्नेह पाकर उसमें एक नई चमक आई। उसमें तेजी से बदलाव आना शुरू हुआ, आज वह एक होशियार बच्ची के रूप में आगे की पढ़ाई कर रही है।

बच्चे अर्थपूर्ण एवं आनंददायक तरीके से सीखें इसके लिए आपका क्या प्रयास रहता है? आपने बताया कि सुबह की सभा से इसकी शुरुआत हो जाती है जिसमें बालगीत, चुटकुले, पहेलियाँ, स्थानीय समाचार आदि को बच्चों द्वारा अपने शब्दों में पिरोकर सुनाया जाता है। इससे बच्चों की झिझक दूर होती है और अपनी बात रखने की कला भी निखरती है। मेरा प्रयास रहता है कि बच्चे सिर्फ पढ़ें ही नहीं उसके अर्थ को भी समझ पायें। इसके लिए उन्हें व्यावहारिक जीवन के अनुभव से जोडती हूँ। जिन बच्चों को पढ़ने–लिखने में दिक्कत होती है उनके साथ कहानी कविता को लेकर काम करती हूँ। कहानी को हावभाव के साथ सुनाना फिर मेरे द्वारा पढ़ना, सीखी गई ध्वनि से नए शब्द एवं वाक्य बनवाना। इसके साथ ही प्रत्येक दिन हिंदी की अलग–अलग गतिविधियां करवाती हूँ जैसे– कविता पाठ, कहानी सुनाना, अन्ताक्षरी, सुलेख प्रतियोगिता इत्यादि। इसके साथ ही बच्चों को अपनी बात रखने के लिए चंदामामा नाम से मासिक पत्रिका निकालते हैं। जिसका सम्पादकीय लिखने से लेकर सामग्री जुटाने का कार्य बच्चे ही करते हैं। हमारे बच्चों की कई रचनाएँ फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित 'छपाक' पत्रिका का हिस्सा भी बनती हैं। इसके साथ ही हमारे विद्यालय में बच्चों के लिए भाषा का कोना बनाया गया है। पुस्तकालय का उपयोग बच्चों के लिए सुलभ बनाया है। बच्चे ही पुस्तकालय का संचालन करते हैं और किताबें इश्यू कर घर भी ले जाते हैं। जिसके कारण बच्चों के शब्द भंडार, कल्पना, तर्क करने की क्षमता में वृद्धि हुई है। मैंने अपने घर पर भी पुस्तकालय

बनाया है जिसका उपयोग मैं तो करती ही हूँ मेरे बच्चे भी करते हैं। बच्चों के उपयोग के लिए हमने ऐसी व्यवस्था बनाई कि जब भी उनको समय मिले वे आएं, पढ़ें और किताब को घर भी ले जाएं। इसके साथ स्कूल की उपलब्धि में देखा जाय तो राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में हमारे बच्चों ने भाग लिया जैसे– सुलेख, कविता पाठ, अन्ताक्षरी आदि।

बच्चों से जब बातचीत हुई तो अधिकांश बच्चों का प्रिय विषय भाषा के साथ गणित भी है। इसके बारे में मैंने जब आप से जाना, तो आपने बताया कि गणित एक कठिन विषय है ये एक सर्वमान्य कथन यत्र–तत्र सुनाई देता है। प्रायः देखा जाता है कि गणित विषय का शिक्षण अन्य विषयों के शिक्षण से इत्र देखा या समझा जाता है। शिक्षक हो या शिक्षार्थी सभी गणित विषय को पढ़ने–पढ़ाने या सीखने–सिखाने में अनुशासन एवं शांत वातावरण की दुहाई देते हैं। शायद यही बिन्दु गणित शिक्षण में भय उत्पन्न कर आत्मविश्वास को विचलित कर देता है। वास्तव में अधिकांश बच्चे गणित शिक्षण में रूचि नहीं ले पाते, यही कारण है कि गणित में कुछ बच्चे महारत हासिल कर लेते हैं और कुछ परीक्षा पास करना ही अपना मुख्य ध्येय समझ बैठते हैं। मेरा मन्तव्य है कि गणित की कक्षा को ऐसा जीवंत बनाया जाये कि बच्चा स्वयं सीखे, स्वयं सामान्यीकरण करे तथा स्वयं ही निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास करे। गणित की कक्षा एक विशेष प्रकार की प्रयोगशाला या ज्ञान निर्माण शाला बने जहां शिक्षक व विद्यार्थी समान रूप से सक्रिय भागीदार हों, कोई भी किसी पर सीखने व सिखाने की जिम्मेदारी न थोपे। उदाहरण स्वरुप यदि हम बच्चे को रूपये पैसे की जानकारी देना चाहते हैं तो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की पैकिंग कवर को इकठ्ठा करें और इससे आभासी मुद्रा बनायें। बच्चे लेन–देन की प्रक्रिया को खेल–खेल में सीखते हैं और सहज ही रूपये पैसे की अवधारणा पर समझ बना लेते हैं। इस क्रम को और आगे बढ़ाते हुए हम विद्यालय में मध्यान्ह भोजन में लगने वाली वस्तुओं की सूची तैयार कराते हैं। जिससे नाप–तोल की समझ, आकड़ों की सारणी बनाने आदि पर रुचिपूर्ण गणित शिक्षण कार्य किया जाता है। इस प्रकार की गणित की कक्षा भय, तनाव दबाव से कोसों दूर होती है। वास्तव में गणित शिक्षण, मात्र एक विषय नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग भी है। हमारे दैनिक जीवन को गणित किस प्रकार प्रभावित करता है इसको सार्थक करने के लिए हमारी कक्षा बच्चों के लिए एक आनंददायक मंच तैयार करती है जहाँ बच्चा अनुमान व कल्पना को पंख लगाकर मूर्तता से अमूर्तता

की खोज में निकल पड़ता है। गणित की कक्षा जितनी रुचिकर एवं आनंददायी व खुली सोच पर आधारित होगी उतना ही छात्र गणित से नजदीकियां बनाकर अपने ज्ञान को समृद्ध व तार्किक बनायेंगे।

आप बच्चों के साथ जो भी प्रयास करती हैं वह बच्चों के माध्यम से समुदाय तक पहुँचता है। विद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्षा विनीता देवी स्नातक तक शिक्षा प्राप्त हैं, वह विद्यालय के विकास में सदैव तत्पर रहती हैं। समिति के साथ मिलकर योजना बनाती हैं और उसे लागू करने का प्रयास करती हैं। समुदाय के प्रयास से विद्यालय को बेहतर करने में काफी सहयोग मिला है। समिति ने मिलकर यह नियम बनाया है कि बच्चे के जन्म दिन पर अभिभावक द्वारा विद्यालय में वृक्षारोपण किया जायगा जिसके कारण आज हमारा विद्यालय पेड़–पौधों से हरा–भरा है।

गीता जी इन सभी कार्यों का श्रेय प्रधानाचार्य श्री राजेन्द्र सिंह को देती हैं। पर प्रधानाचार्य जी का मानना है कि गीता नौटियाल जी नित नये–नये नवाचार करती हैं जिससे विद्यालय के बच्चों को काफी लाभ मिला है। आप इसका श्रेय टीम भावना को भी देते हैं। हम सभी के प्रयासों से अधिकांश बच्चों के सीखने का स्तर अच्छा हुआ है। जिसका परिणाम है कि हमारे बच्चे विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान बना पा रहे हैं।

(गीता नौटियाल से अनूप शुक्ला की बातचीत पर आधारित)

आसान नहीं था पढ़ाई का सफर

रीता माहेश्वरी
प्रधानाध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
भाटियों की ढाणी, कपरऊ
बाड़मेर, राजस्थान

सहायक अध्यापिका – सुनीता मीणा
भोजन माता – इंदिरा देवी
नामांकन – 32

'उम्मीद ही तो थी जिसका दामन थामे–थामे यहाँ तक आ पहुंची हूँ।' चिलचिलाती गर्मी में इतवार के दिन कुछ नया सीखने की इच्छा के चलते शिक्षिका रीता माहेश्वरी को सुनना किसी फिल्म की रील का खुलते जाना सा मालूम हो रहा था। वो शिक्षिका हैं, बाड़मेर के प्राथमिक विद्यालय भाटियों की ढाणी में। सर पर पल्ला लिए वो बहुत आत्मविश्वास से अपनी बात रखती हैं। महानगरों में रहने वाले लोगों को, फेमिनिज्म की बातें करने वालों को, कहानियाँ–कवितायें लिखने वालों को ध्यान लगाकर रीता माहेश्वरी की कहानी सुननी चाहिए।

रीता माहेश्वरी अपनी कहानी सुनाना शुरू करती हैं, 'बात 1989 की है, मैंने इस साल दसवीं पास की थी। मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता था। मै खूब पढ़ना चाहती थी। लेकिन दसवीं के बाद आगे की पढ़ाई के लिए पापा ने मना कर दिया। पापा के कारण भी वाजिब ही रहे होंगे। हम सात बहनें थीं। दादी काफी बीमार रहा करती थीं। कमाने वाले पापा अकेले थे। पापा को लगा कि अगर मुझे पढ़ाया तो बाकियों को भी पढ़ाना होगा, और एक अकेले पापा भला किस–किस के पीछे भागते फिरेंगे। लेकिन मेरे मन में भी यही बात थी कि अगर मैंने पढ़ाई छोड़ दी तो बाकी बहनों की पढ़ाई छूटना भी निश्चित ही है। इसलिए मुझे कुछ तो करना था। मैंने मन ही मन ठान लिया कि चाहे कुछ भी हो, कितनी ही मुश्किलें आये, मैं पढ़ना तो जारी रखूंगी ही, अपने लिए भी और अपनी बहनों के लिए भी।

यह आसान तो नहीं था लेकिन मुश्किलें मुझे डराती नहीं थीं, लुभाती थीं। मैंने आगे पढ़ने की इच्छा रखने वाली अपनी जैसी लड़कियों से बात की और उनकी कच्ची इच्छाओं को हिम्मत दी। ज्यादातर लड़कियां घरवालों के दबाव में थीं। लेकिन उनकी आँखों में आगे पढ़ने का सपना चमकता था। इसी बीच मेरी मुलाकात मंजू दीदी से हुई। मंजू दीदी दो साल पहले हाई स्कूल पास कर चुकी थीं। उनकी भी पढ़ाई बंद थी। उनकी पढ़ाई बंद होने का कारण था बचपन में हुआ पोलियो। लेकिन जब उन्होंने मुझसे आगे पढ़ने की योजना के बारे में सुना तो उनकी आँखों में जो चमक आई उसे देखकर मुझे लगा कि ये साथ जरूर देंगी। असल में, मैं पढ़ने की इच्छा रखने वाली लड़कियों का एक ग्रुप बना रही थी। हमने इस ग्रुप में 19 लड़कियों को शामिल कर लिया। हमने पास की तहसील श्री माधोपुर में एक स्कूल में एडमिशन लिया और तय किया कि इस बात को गुप्त रखा जायेगा और परिवार पर इसका बोझ नहीं डाला जायेगा। स्कूल दूर था तो एक जीप की व्यवस्था की गयी जो सब लड़कियों को स्कूल ले जाने और वापस लाने के लिए थी। जीप की व्यवस्था के बावजूद हमें कई बार स्कूल पहुँचने में देर हो जाती थी। हमें अगर स्कूल पहुंचने में देर हो जाती तो विजयलक्ष्मी मैडम हमारा इंतजार करती थीं। उन्हें हमारे हौसलों को देख बहुत खुशी होती थी। मुझे अकसर मंजू के साथ आने की वजह से देर हो ही जाती थी क्योंकि बचपन में हुए पोलियो की वजह से उसे चलने में परेशानी थी। यह हमारे हौसलों की ही बात रही होगी कि अब बस वाले भी हमारा साथ देने लगे और 50 पैसे में हम स्कूल पहुँचने लगे। कुछ लोग थे जो हमारा साथ दे रहे थे, न सिर्फ स्कूल पहुँचाने में बल्कि गाँव वालों से यह बात छुपाने में भी कि गाँव की 19 लड़कियां पढ़ने जा रही हैं।

लेकिन सब कुछ अच्छा ही अच्छा चले तो काहे की कहानी। ग्यारहवीं की फाइनल परीक्षा का पहला परचा था उस दिन। हमने समय पर परीक्षा देने पहुँचने के लिए जीप बुक की। हम कुछ दूर ही आगे बढ़े थे कि रस्ते में पड़ने वाले महरौली गाँव के लड़कों ने जीप पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। ये राजपूतों का गाँव था और यहाँ के लड़कों को यह सहन नहीं हो रहा था कि लड़कियां पढ़ने जा रही हैं। उन लड़कों के हाथों में लाठियां भी थीं। पत्थर तो लगातार बरस ही रहे थे। जीप की स्पीड खूब बढ़ाकर ड्राइवर अंकल ने किसी तरह हमें बचा तो लिया लेकिन परीक्षा देने लायक मन की स्थिति बची नहीं थी हमारी।

सामने परीक्षा पत्र था और मन में सौ सवाल कि अब तो घरवालों को पता चल ही जाएगा। क्या होगा तब? हमारी मैडम ने हमारी परेशानी भांपते हुए कहा, बेटा तुम लोग आराम से पेपर दो, सब ठीक हो जाएगा। तुम लोगों के अभिभावक आ गए हैं, वो बाहर हैं।

मैडम तो हमें समझा रही थीं लेकिन हमारे होश ही उड़ गए यह सुनकर जैसे–तैसे पेपर दिया। बाहर पिताजी खड़े थे साथ में पुलिस वाले भी थे। पुलिस वाले ने पिताजी से कहा, पुलिस की गाड़ी जीप के साथ जाएगी। आप चिंता न करें। लड़कियां सुरक्षित घर पहुँच जाएँगी। लेकिन वो बेचारे पुलिस वाले क्या जानें कि हमें असली डर तो पिताजी का ही था, लडकों से तो हम निपट ही लेते यह कौन कहे पुलिस वाले अंकल जी से। लौटते समय फिर पत्थरों की बरसात हुई लेकिन इस बार पुलिस साथ थी तो काफी लड़के पकड़े गए। लेकिन हम लड़कियों की असली लड़ाई तो घर जाकर शुरू होनी थी। जब घरवालों से डांट पड़नी थी कि पूरे साल छुपकर पढ़ाई कैसे की हमने। लेकिन शायद हमारे घरवालों ने कुछ समझा हमें और ज्यादा कुछ कहा नहीं। बल्कि अगले दिन के पेपर के लिए हर लड़की के घर से एक व्यक्ति पेपर दिलाने साथ गया। उसके बाद सारे पेपर घरवालों ने दिलवाए। हमारे लिए यह एक बहुत बड़ी लड़ाई जीतने जैसा था। मन से छुपकर पढ़ने जाने का भार हट गया था।

परीक्षाएं तो हो गयीं। लेकिन जिन्दगी की परीक्षायें तो बाकी ही थीं। कुछ लड़कियों के घरवालों ने परीक्षा के बाद लड़कियों की शादी करने की योजना बना ली। आसपास हमारे बारे में काफी बातें बनायी जाने लगी थीं। मेरे पिता जी ने भी मुझसे कहा कि बेटा प्राइवेट फॉर्म भर दे, रेगुलर तो न पढ़ा पायेंगे। लेकिन मैं मानने वाली नहीं थी। मेरे साथ मंजू दीदी भी थीं और कुछ लड़कियां भी शामिल थीं। गाँव वालों को यह समझ में आ गया था कि इन लडकियों में पढ़ने की इच्छा काफी है। कुछ

लोगों ने इस इच्छा का सम्मान किया और गाँव में ही कक्षा 12 की कक्षाएं चल सकें इसकी व्यवस्था की। इसके चलते गाँव की बाकी लड़कियों को भी पढ़ने की सुविधा मिल गयी। जिसमें मेरी छोटी बहनें भी शामिल थीं। आगे चलकर गाँव में इंटर कॉलेज बन गया और गाँव की लडकियों को हमारी तरह भागकर, झूठ बोलकर जाने की जरूरत नहीं पड़ी।

पिताजी को लगा इंटर पास कर लिया अब बहुत हुआ। लेकिन मैं कहाँ मानने वाली थी। मुझे तो कॉलेज जाना था, आगे की पढाई करनी थी। जैसे मेरे जीवन का एक ही लक्ष्य था पढ़ाई करना। मुझे लग रहा था मैं पढूंगी तो बहुत सारी लड़कियों के लिए रास्ते खुलेंगे। कॉलेज की पढ़ाई के लिए मुझे जयपुर जाना था। जो हमारे गाँव रीगस से 60 किमी दूर था। यक्ष प्रश्न यह था कि जब 17 किमी दूर पढ़ने जाने पर इतने पंगे हुए तो भला 60 किमी कौन जाने देता। मैं गाँव की पहली लड़की थी जो कॉलेज की पढाई करने की इच्छुक थी। मेरे सामने भी समस्या थी कि कैसे आगे बढ़ा जाए। कुछ पता नहीं, क्या विषय लें, कौन सा कॉलेज चुनें, किससे बात की जाय, पैसे कहाँ से आयेंगे आदि।

मुझे विद्या आंटी की याद आई। विद्या आंटी पापा के एक दोस्त डॉ. हरिलाल हैं, उनकी पत्नी हैं। पापा बताया करते थे कि कैसे हरि अंकल ने विद्या आंटी को शादी के बाद पढ़ाया। इन दिनों जयपुर में विद्या आंटी एक स्कूल चलाया करती थीं। विद्या आंटी जो उन दिनों गाँव में थीं, उनसे हमने बात की तो उन्होंने हमें ही समझाया कि तुम्हारे पिताजी तुम्हारी शादी करने वाले हैं, तुम्हारा कॉलेज बीच में छूट जायेगा इसलिए तुम आगे पढ़ने की बात को रहने दो। उनकी बात से मैं निराश नहीं हुई। जाने क्यों मैं किसी की भी नकारात्मक बात से निराश नहीं होती थी, ऐसा लगता था मैंने कुछ सुना ही नहीं।

लेकिन सब के बीच मुझे ध्यान आया कि मेरी तो सगाई हो चुकी है। वो तो 1987 में ही हो चुकी थी। और अब लड़के वालों की तरफ से शादी का दबाव बन रहा था। शायद लड़के वालों के मन में वो पत्थरबाजी वाले काण्ड का भी असर हुआ हो जिसके चलते वो शादी की जल्दी मचाये हों।

मेरी शादी के साथ मेरी बहन की शादी भी होनी थी। सगाई चोह्टन गाँव के एक परिवार में हुई थी। इन सब बातों के बीच मेरा दिमाग पढाई के पीछे भाग रहा था। हमने विद्या आंटी से बहुत जिद की। इतनी जिद कि उन्हें मानना ही पड़ा। उन्होंने जयपुर में भवानी निकेतन कॉलेज की प्रिंसिपल से बात करने को कहा। यह हमारे लिए राहत की सांस थी। हमारा कॉलेज में एडमिशन हो गया। अब अगली चुनौती थी घर। हमने प्रिंसिपल मैडम को सारे हालात बताये और कहा कि हम सप्ताह में एक दिन कॉलेज आया करेंगे और सारे नोट्स ले जाया करेंगे। इधर माँ को मनाया कि कुछ भी हो जाए वो पिताजी को कॉलेज के बारे में कुछ न बताएं।

पिताजी को कॉलेज के बारे में पता तो था नहीं, एक दिन वो प्यार में भरकर बोले, 'रीता बिटिया, तुम्हें आगे पढ़ने का मन था न, तुम ऐसा करो प्राइवेट फॉर्म भर लो।' उस समय फार्म निकले हुए थे। वो ये कहते हुए खुश थे कि बच्ची खुश हो जाएगी। उन्हें क्या पता कि बच्ची तो कॉलेज में एडमिशन लिए बैठी है। मैं पिताजी की बात पर चुप रही। जब मैं चुप रही तो वो चौंके, 'बोले उतर गया पढ़ने

का भूत? पहले तो पढ़ाई के पीछे जान देती थी।' उनके ऐसा कहने में कुछ परिहास भी था। तब मैंने पिताजी को सच बता दिया कि हम रेगुलर कॉलेज जा रहे हैं और पढ़ाई जारी है। अब पिताजी के सदमे में आने की बारी थी, हालाँकि वो चुप रहे।

सेकेण्ड इयर में मेरी शादी का राग फैल गया और मेरा शादी न करने का क्योंकि मुझे तो पढ़ना था। पढने की लगन देखकर मेरे मामा जी ने पापा से कहा, आप इन बच्चियों की सगाई तोड़ दो और इन्हें पढ़ने दो। शादी–वादी की टेंशन न लो मैं देख लूँगा लेकिन पापा कहाँ मानने वाले थे।

पापा की जिद के आगे मैं आखिर हार गयी। लेकिन मैंने यह जरूर किया कि पापा से कहा मेरी शादी तो ठीक है छोटी बहन जो अभी 17 साल की है उसकी शादी मत करो। पापा चाहते थे एक साथ शादी हो तो खर्च बचे। मैंने उन्हें बोला अगर आपने छोटी बहन की शादी की तो मैं पुलिस में रिपोर्ट करूंगी क्योंकि छोटी बहन नाबालिग है। हालाँकि यह धमकी चली नहीं और हम दोनों बहनों की शादी हो गयी।

अब एक तरफ शादी थी और दूसरी तरफ सेकेण्ड ईयर की परीक्षा। जिस दिन मेरी शादी थी, 26 अप्रैल को, उसी दिन पहला पेपर था सेकेंड ईयर का। मेरे मन में दुविधाओं का तूफान उठ रहा था। क्या होगा मेरा भविष्य, मेरी बहनें आगे कैसे पढ़ेंगी। बहरहाल, मैं इधर से पेपर देने जा रही थी सामने से बारात की गाड़ियाँ आ रही थीं। मेरा मन एकदम उचाट था। कलेजा धुकुर धुकुर कर रहा था। चाचा साथ थे जो पेपर दिलाने ले गए थे वो भी सबसे छुपकर।

जैसे–तैसे पेपर दिया, लौटकर शादी की और ससुराल रवाना हुई। दो दिन बाद मेरा अर्थशास्त्र का पेपर था इसलिए वापस मायके लौटना जरूरी था लेकिन इतनी जल्दी वापस भेजने को ससुराल वाले राजी नहीं थे। एक तो नया घर, अनजाने लोग, मन में अशांति, घर से छूटने का दुःख, मैं इतना रोई इतना रोई कि आज भी सोचकर हिल जाती हूँ। आखिर मेरे रोने से ससुराल वाले पिघले और उन्होंने चाचा के साथ वापस मायके भेज दिया। उन बेचारों को आज तक नहीं पता कि वह सारा रोना मायके की याद का नहीं पेपर देने के लिए था।

खैर, अब आगे की लड़ाई थी। आगे की पढ़ाई के बारे में तो सोचना भी गुनाह था। ससुराल वाले आगे पढ़ाने को कहाँ मानने वाले थे। पढ़ाई के चक्कर में कितनी बार मायके जाती मैं। एक दिन मैंने अपने पति से कहा, 'अगर आप हमें पढ़ने दोगे तो मैं मायके नहीं जाऊंगी और अगर पढ़ने नहीं दोगे तो मैं रहूंगी भले ही इस घर में लेकिन आपसे कोई रिश्ता नहीं रखूंगी।' जैसे तैसे मेरे पति माने।

इसके बाद मैंने अपने संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी बहनों की पढ़ाई की जिम्मेदारी और पढ़ाई सब संभाली। बीए किया, एमए किया, बीएड किया और प्राथमिक विद्यालय भाटियों की ढाणी में बतौर शिक्षिका काम करना शुरू किया।

2001 से, मैं राजकीय प्राथमिक विद्यालय भाटियों की ढाणी में बतौर शिक्षिका हूँ। मैं यहाँ इस स्कूल की पहली शिक्षिका हूँ और तबसे मैं यहीं हूँ, इसी स्कूल में। जब मैंने यहाँ ज्वॉइन किया था तब यहाँ कोई बिल्डिंग नहीं थीं। मैंने सबसे पहले एक काम किया कि घर–घर जाकर लोगों से मेल–जोल बढ़ाया। इसके चलते लोगों ने बच्चों को स्कूल भेजना शुरू किया। गाँव के लोगों का मुझ पर भरोसा जम गया था पहले साल का नामांकन 33 बच्चों का था। स्कूल के लिए सिर्फ नामांकन होना तो काफी होता नहीं। हमारे पास तो बिल्डिंग भी नहीं थी और मैं थी एकल शिक्षक। गाँव के लोगों ने ही मेरी मुश्किलें आसान कीं। गाँव में एक ओतारा होता है जहाँ भाटियों के मेहमान रुका करते हैं। जब मेहमान नहीं होते थे तब वह ओतारा हमें स्कूल के लिए मिल जाता था। लेकिन जब मेहमान आते तो हमारा स्कूल पेड़ के नीचे लगा करता था। मैंने देखा बच्चों को पढ़ने में मजा आ रहा है। गाँववालों के भरोसे और बच्चों की लगन ने मुझे बहुत हौसला दिया।

शिक्षिका के तौर पर स्कूल आने वाली बच्चियों के संघर्ष को खूब अच्छी तरह से समझ पाती हूँ। मुझे अपने स्कूल की बच्चियों को देखकर वही जिम्मेदारी महसूस हुई जिसे मैंने ग्यारहवीं की परीक्षा देते समय महसूस किया था कि यह सिर्फ एक व्यक्ति की नहीं सभी लड़कियों की लड़ाई है। हर किसी को खासकर बच्चियों को पढ़ने के समान अवसर मिलने ही चाहिए। कितनी गर्मी में रेगिस्तान के बड़े–बड़े मैदान पैदल, कभी–कभी बिना चप्पल के पारकर जो लड़कियाँ पढ़ने आती हैं, उनमें मैं खुद को देख पाती हूँ। कोशिश करती हूँ इन लड़कियों का पढ़ना रुके नहीं। वो आगे भी पढ़ें और अपने सपनों को साकार कर सकें।

शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन अभी भी यह हर किसी को उतनी आसानी से मुहैय्या नहीं है जितनी आंकड़ों में नजर आती है। अपनी मर्जी से आगे पढ़ने, अपनी मर्जी के विषय लेने जैसी छोटी दिखने वाली बातें आज भी बड़ी चुनौती हैं। रीता माहेश्वरी ने विकट हिम्मत और मेहनत से अपना सफर तय किया है और नयी पीढ़ी का हौसला बनकर खड़ी हैं। जो स्कूल आ गया उसे तो वो मन से पढ़ाती ही हैं जो स्कूल नहीं आया उसे लेने उसके घर तक जा पहुँचती हैं। 7 साल तक मैं यहाँ सिंगल टीचर रही। जाने कैसे कैसे दौर आये गये लेकिन स्कूल चलता रहा। गाँववाले मुझे अपनी बेटी की तरह मानते हैं। जब भी मैं किसी अभिभावक से मिलती हूँ वो मेरे सर पर हाथ रखकर खूब आशीर्वाद देते हैं। जब मैं स्कूल में लड़कियों को पढ़ते देखती हूँ तो लगता है खुद को ही देख रही हूँ।'

(रीता माहेश्वरी की प्रतिभा कटियार से हुई बातचीत पर आधारित)

आनन्ददायी शिक्षण

रेखा शर्मा

सहायक अध्यापिका

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कैलाशपुरा
टोडारायसिंह, टोंक, राजस्थान

प्रधानाध्यापक – हेमराज दरोगा
भोजन माता – संतरा देवी
नामांकन – 49

विद्यालय की भौगोलिक परिस्थिति

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कैलाशपुरा ब्लॉक टोडाराय सिंह में है, ब्लॉक से इस विद्यालय की दूरी 20 किलोमीटर है। यह मुख्य सड़क से दो किलोमीटर दूर कच्चे रास्ते पर है। जाने के लिए अपने साधन के द्वारा ही जाया जा सकता है। इस विद्यालय की स्थापना 2013 में हुई थी। विद्यालय में कुल 62 बच्चों का नामांकन है। शिक्षकों के प्रयास से यहाँ से एक भी बच्चा गाँव के बाहर किसी निजी विद्यालय में पढ़ने नहीं जाता है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा के बाद ही बच्चे अन्य विद्यालयों में पढ़ाई के लिए जाते हैं। यहाँ खारोल जाति के लोग रहते हैं। गाँव के लोग अधिकतर खेती और पशुपालन के व्यवसाय से जुड़े हैं। इस विद्यालय भवन मे तीन कमरे व एक रसोई घर है जिनमे से एक कमरे में क्लास 4 व 5 व दूसरे कमरे में क्लास 1, 2 व 3 एक साथ बैठती है और एक रूम स्टॉफ रूम के रूप में उपयोग में लिया जाता है। विद्यालय के चारों ओर चार दीवारी है। पानी पीने के लिए हेंडपंप है। बालकों व बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय हैं। जिनकी साफ सफाई शिक्षक व बच्चे मिलकर करते हैं। इस विद्यालय में अभी रेखा जी के साथ में एक साथी शिक्षक हेमराज कार्य कर रहे हैं।

शिक्षिका का परिचय

यह केस स्टडी ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ी हुई शिक्षिका, रेखा शर्मा के कार्यों पर आधारित है। जो कि अपने स्पष्टवादी नजरिये, और बच्चों के साथ शिक्षण कार्य के लिए जानी जाती हैं। शिक्षिका रेखा जी ने अपने कार्य की शुरुआत पैरा टीचर के रूप में 2001 में राजकीय प्राथमिक विद्यालय हमीरपुर से की थी और स्थायी नियुक्ति 2008 में हुई थी। उनका पिछले 17 वर्षों का शिक्षण कार्य का लम्बा अनुभव रहा है। इस विद्यालय में वे 2016 से नियुक्त हुई हैं। इससे पहले दो विद्यालयों में कार्य कर चुकी हैं। पिछले समय में बच्चों के साथ सीखने–सिखाने से उनका गहरा लगाव रहा है। साथ ही अपने अनुभवों को शिक्षक साथियों के साथ साझा करने और विभिन्न मुद्दों पर संवाद करने में उनकी रुचि रही है। बच्चों के साथ इनका सहज सम्बन्ध है और खुलकर बच्चे इनके साथ पढ़ते–लिखते हैं। उनकी सहयोग करने की प्रवृत्ति है। इनके इसी व्यवहार और शिक्षक समुदाय के साथ बेहतर संबंध के कारण वे विद्यालय में बच्चों के सीखने को और आनन्ददायी स्वरुप प्रदान करती हैं। विद्यालय में हर समय कुछ न कुछ नया करने को तत्पर रहती हैं। इनके कार्य करने में एक सबसे अच्छी बात ये है कि बच्चों के बीच बैठ कर ही कार्य करती हैं। जिस भी विद्यालय में वे रही हैं बड़ी मेहनत व लगन

के साथ कार्य किया है। रेखा जी को पेड़–पौधे लगाने में रुचि है इस वर्ष उन्होंने 62 पेड़ पौधे लगाए हैं।

सीखने के लिए खुलापन

रेखा जी अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन में आयोजित कार्यशालाओं व कार्यक्रमों मे समय–समय पर भागीदारी करती रही हैं। इनके द्वारा बच्चों को गीत–कविता–कहानी आदि को सुनने व सुनाने के अवसर प्रदान किये जाते हैं। क्लास में बच्चों को स्वतंत्र रूप से विचार रखने व सीखने का वातावरण बनाये रखती हैं। जिस भी विद्यालय को देखने जाती हैं या शिक्षक से मिलती हैं या फाउंडेशन के द्वारा आयोजित कार्यशाला में सीखे गए कार्य को क्लास रूम में लागू करती हैं। साथ ही बच्चों के द्वारा किए गए कार्य को क्लास रूम मे प्रदर्शित करती हैं। मैंने इनकी क्लास रूम में भाषा पर कार्य करते हुए अवलोकन किया। यह छोटी क्लास के सभी बच्चों के बीच में बैठकर मात्रा के शब्दों को पुस्तक में से छंटवाने का कार्य कर रही थीं व क्लास दो को ब्लैक बोर्ड पर शब्द पहेली पर कार्य करवा रही थीं। क्लास अनुशासित थी। पहले क्लास एक को काम करवाया व बाद में दो के लिये ब्लैक बोर्ड पर 5 वर्ण व एक मात्रा पर कार्य किया गया। जब तक क्लास तीन को कहानी की पुस्तकें दे रखी थी तो बच्चे स्वतंत्र रूप से कहानी पढ़ने व समझने का कार्य कर रहे थे। बच्चों के भाषा के स्तर की बात करें तो क्लास 1 में दो से तीन बच्चे पुस्तक पढ़ना जानते हैं व क्लास 2 से 5 तक के सभी बच्चे पुस्तक पढ़ना जानते हैं।

''विद्यालय अवलोकन के दौरान देखा गया कि आपके द्वारा बालकों के साथ भाषा शिक्षण का कार्य बहुत सरल एवं आनन्ददायी तरीके से किया जा रहा है। देखकर बहुत अच्छा लगा कि सभी बच्चे भाषा बोलने–पढ़ने में सहजता का अनुभव कर रहे हैं। आपका कार्य सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। हम आप से आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार से अपने शिक्षण को सहज एवं आनन्ददायी बनाये रखेंगीं।''

– जितेन्द्र कुमार जैन, प्रधानाचार्य/पीईईओ, रा.उ.मा.वि. हमीरपुर

(रेखा शर्मा की पुष्पा शर्मा से हुई बातचीत पर आधारित)

आदिवासी बच्चों को अंग्रेजी सिखाने का सफर

अंजली गर्ग
सहायक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, आदिवासी बस्ती 2
निचला घंटाला, बांसवाड़ा, राजस्थान

प्रधानाध्यापिका	**–**	**कविता शाह**
सहायक अध्यापक	**–**	**जितेन्द्र पंचोली**
भोजन माता	**–**	**बबली चरपोटा**
नामांकन	**–**	**61**

कठिन परिश्रम हेतु भारतीय शिक्षा परंपरा में अक्सर छात्रों को शिक्षक द्वारा कहा जाता है कि कार्य करने से सफल होंगे मन की इच्छा से नहीं। ठीक इसी सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए एक शिक्षिका ने वो कर दिखाया जो साधारणतः किसी को भी हैरत में डाल दे। यह कहानी राजस्थान के आर्थिक रूप से पिछड़े परंतु प्राकृतिक संपदा से सम्पन्न बांसवाड़ा की है, जहाँ के एक गाँव के (आदिवासी बस्ती) स्कूल में अंजली जी पिछले कुछ सालों से अध्यापन कार्य कर रही हैं। वो किसी सामान्य शिक्षक जैसी ही हैं, पर उनकी हरदम कुछ नया करने की इच्छा और रचनात्मकता उन्हें दूसरों से अलग बनाती है। स्कूल शिक्षण के दौरान जहां ज्यादातर शिक्षकों का यह अटूट विश्वास बनता चला जाता है कि बच्चों को केवल वर्ण पद्धति से ही पढ़ाया जा सकता है, वहीं इन्होंने स्कूल में नवाचारों के साथ बच्चों का सर्वांगीण विकास कार्य करने का विश्वास दिखाया है। उनका मानना है कि बच्चे स्कूल में केवल हिन्दी, गणित या इंग्लिश सीखने नहीं आते हैं, बल्कि जीवन को सहज व सरल बनाने के तरीकों को सीखने आते हैं। इस सीखने की प्रक्रिया को स्कूल में पढ़ाए जाने वाले अन्य विषय समृद्ध बनाते हैं। इसलिए वो बच्चों के साथ चित्र, नृत्य, नाटक आदि विधाओं पर कार्य करने के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा का शिक्षण कार्य कर रही हैं। उनके लिए यह सब कुछ इतना आसान कभी न था।

वो बताती हैं कि नियुक्ति के साथ ही उनका यह पूर्वाग्रह मजबूत होने लगा था कि स्कूल आने वाले आदिवासी बच्चों के घर पर पढ़ने–लिखने का कोई माहौल न होने से इनका पढ़ना बहुत मुश्किल है। इस सोच के पीछे का कारण यह रहा कि शुरुआती दिनों में बच्चों की स्थिति ऐसी थी कि बच्चे हिन्दी में कुछ बोलते ही नहीं थे। उनसे उनकी बोली 'वागड़ी' में ही बात करनी पड़ती थी। इनके साथ कार्य करने में सर दर्द हो जाता था। पर धीरे–धीरे बच्चों के साथ किए जा रहे कार्यों का असर दिखने लगा। बच्चे मेरी बात सुनने लगे, मेरे दिए हुए कार्यों को करने लगे। हालांकि बच्चे सर दर्द तो अब भी करते हैं, पर अपने सवालों से करते हैं। अब वो स्कूल में 'वागड़ी' के साथ–साथ हिन्दी का भरपूर प्रयोग करते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि बच्चों के साथ शिक्षण कार्य अपने आप में चुनौतियों से भरा होता है। उसमें भी ऐसे बच्चों के साथ कार्य करना जो न तो ठीक से आपकी भाषा ही समझ पाते हैं और उनके तरीके और आदतें आप से अलग हों तो वास्तव में उनके साथ काम करना मुश्किल होता है। अंजली जी बताती हैं कि जब पहली बार उनकी नियुक्ति आदिवासी बस्ती स्कूल में हुई तो वो यह

देख के पशोपेश में थीं कि बच्चों के साथ शिक्षण कार्य कैसे करें क्योंकि बच्चे हिन्दी बिलकुल भी नहीं समझते थे। अंग्रेजी की शिक्षिका होने के कारण उन्हें यह बहुत बड़ी चुनौती लगी। अंजली जी इस बात को भी स्वीकार करती हैं कि नियुक्ति के कुछ सालों तक उनका यह विश्वास था कि अगर बच्चों को हिन्दी नहीं आती तो इंग्लिश कैसे सीखेंगे?

शुरुआत के कुछ दिन तो बड़ी ही मुश्किलों से गुजरे, बच्चे आपस में खूब झगड़ा किया करते थे। एक–दूसरे को गालियां दिया करते थे। हद तो तब हो जाती थी जब बच्चे लंच में भी हमारे पास आकर उन गालियों को पुनः दोहराते जो उन्हें दी गई थीं, वो सब सुनने में बहुत बुरी लगती थीं। वो बिना नहाए स्कूल आते थे, उनके कपड़े भी बहुत गंदे हुआ करते थे, नाखून मैल से भरे मिलते। शुरुआत का सारा समय उन्हें 'वागड़ी' से हिन्दी पढ़ाने में गुजरा ताकि वो हिन्दी समझ सकें। यह मेरे लिए बहुत अजीब स्थिति थी कि मुझे बच्चों के साथ कार्य अंग्रेजी में करना था और बच्चे 'वागड़ी' में बोलते–समझते थे। यह स्पष्ट है कि भाषा सीखने के लिए माहौल की आवश्यकता होती है पर समस्या यह थी कि बच्चों को वो माहौल मिले तो मिले कैसे? वो स्कूल में 5 घंटे ही रहते हैं, जहाँ उन्हें सिर्फ हिन्दी का माहौल मिलता है, पर अपना ज्यादातर समय वो अपने घर पर ही बिताते हैं, जहाँ वो सिर्फ 'वागड़ी' में ही बात करते हैं। जिस कारण उन्हें हिन्दी और अंग्रेजी का कोई माहौल नहीं मिल पाता है। इस वजह से हिन्दी में बोली चीजें उन्हें समझ नहीं आती, फिर उनके साथ अंग्रेजी में कैसे कार्य किया जाए? इन चिंताओं के अतिरिक्त एक चिंता यह भी थी कि बच्चों का सिलेबस पूरा कैसे हो?

बहरहाल बच्चों के साथ काम तो शुरू कर ही दिया था फिर चुनौतियों से क्या घबराना? मैं बच्चों को मध्याह्न तक पढ़ाती और जब वो सब खेल कर वापस आते थे तो उन्हें नल पर ले जाकर उनके हाथ मुंह धुलवाती और फिर सबके नाखून कटवाती। यह कार्य उनके साथ कई दिनों तक चला। इसके साथ ही लड़कियों को मेहँदी कैसे लगाएँ यह भी कार्य करना शुरू किया। मैंने पाया कि बच्चे खुद से मुंह धोने लगे हैं और हर सप्ताह खुद से ही नाखून भी काटने लगे हैं। धीरे–धीरे छात्राओं में मेहंदी बनाने के प्रति रुचि भी पैदा होने लगी है। पहले मैं उनके लिए मेहंदी के कोन लेकर आया करती थी, अब वो लेकर आने लगी हैं और कैसे बनायें यह सिखाने के लिए कहने लगी हैं। पर यह बस शुरुआत भर थी, बच्चों के साथ और भी कार्य किया जाना बाकी था। बच्चे जब लघुशंका के लिए जाया करते थे, तो बिना पूछे ही ग्रुप बनाकर निकल जाते थे। अंग्रेजी के किसी भी तरह के शब्द से वो परिचित नहीं थे, पर बच्चों को यह आदत डलवाई कि जब हम कमरे से बाहर जाएं तो पूछ के जाएं जैसे – मे आई गो टू टॉयलेट ?

इन बुनियादी कार्यों को करते हुए देखा कि बच्चे प्रार्थना भी ठीक से नहीं कर रहे हैं। बच्चे लय में प्रार्थना कैसे गाएं यह सिखाने में काफी समय लगा पर वो थोड़ा–थोड़ा ठीक से गाने लगे। उनके लिए प्रार्थना में झाल और ढ़ोल आदि लाकर रख दिया गया, पर बच्चे थे कि उसे छूते नहीं थे। उनकी इस झिझक को दूर करने के लिए उनके साथ मैं प्रार्थना में बजाने लगी, मुझे देख कर बच्चे भी धीरे–धीरे बजाने लगे। इस प्रकार बच्चों के साथ यह बुनियादी कार्य करने के साथ, उनकी

मौखिक भाषा पर भी कार्य स्कूल में शुरू हुआ और यह जरूरी भी था क्योंकि बच्चे स्कूल में पढ़ाने के दौरान बहुत कम बोलते (सवाल–जवाब) थे। वहीं उनसे 'वागड़ी' में कुछ पूछा जाए तो उसका जवाब तो दे दिया करते थे पर हिन्दी में बात करते समय एक दम चुप हो जाया करते थे। बच्चों के साथ 'वागड़ी' भाषा में कार्य करते हुए हम उन्हें हिन्दी तक तो ले आए पर इसमें हमें एक साल का समय लग गया।

अंजली जी एक बच्ची की माँ होने के साथ–साथ घर परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए स्कूल को अपना पूरा समय देती हैं। स्कूल में आयोजित होने वाले सभी तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी बड़े मन से करती हैं। इनके कोमल स्वभाव के कारण बच्चे खुद को अंजली जी के बहुत समीप पाते हैं। स्कूल में छोटे बच्चों के साथ कार्य करना अपने आप में बहुत कठिन होता है, पर अंजली जी कक्षा 1 और 2 के बच्चों के साथ कार्य करने में बहुत सहज नजर आती हैं। इस वर्ष (2018–19) बच्चों के किए कार्यों को समुदाय के लोगों के बीच दिखाया जाना चाहिए, इसका समर्थन न सिर्फ अंजली जी ने किया बल्कि कक्षा 5 के बच्चों की विदाई समारोह की भी उन्होंने पैरवी की। यह अपने– आप में एक नया और अलग तरह का प्रयास था। जिसके लिए उन्होंने स्कूल के अन्य शिक्षक साथियों को भी सहयोग हेतु तैयार किया। यह अंजली जी के प्रयासों का ही नतीजा है कि स्कूल में अलग–अलग मौकों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन संभव हो पाता है। जिन्हें देखने के लिए अब अभिभावकों की अच्छी–खासी संख्या स्कूल में आने लगी है। कहना गलत न होगा कि स्कूल और समुदाय के बीच अंजली जी के प्रयास ब्रिज का काम कर रहे हैं।

अंजली जी की यह विशेषता ही कही जा सकती है कि वो बच्चों को सिखाने के साथ–साथ स्वयं भी कुछ–न–कुछ नया सीखने के लिए उत्साहित रहती हैं। शिक्षण कार्य हेतु नए तरीकों को सीखने के प्रति वो इतनी उत्सुक रहती हैं कि विगत गर्मियों की छुट्टियों में उनके स्कूल में आयोजित शिविर में उन्होंने अपना ज्यादातर समय स्कूल और बच्चों को दिया। मगर इतना सब कुछ करने के बाद भी अंजली जी के सामने यह समस्या जस की तस बनी हुई थी कि बच्चों को इंग्लिश कैसे सिखायी जाए।

आम बोलचाल में प्रयोग होने वाले इंग्लिश के शब्दों को या वाक्यों को सिखाने भर से बच्चों को सब आ गया, यह तो नहीं कहा जा सकता है, जब तक कि बच्चे किताब पढ़ने और उसमें लिखे को भी समझने न लगें, तब तक कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। इसी ऊहापोह में अंजली जी ने अज़ीम

प्रेमजी फाउंडेशन में इंग्लिश भाषा में कार्य कर रही सदस्या की सहायता से एवं फाउंडेशन में इंग्लिश टीम द्वारा आयोजित की जा रही ईपीसी–1 (इंग्लिश प्रोफिसियन्सी कोर्स लेवेल – 1) के माध्यम से अपने बच्चों को इंग्लिश सिखाने के तरीके ढूंढ निकाले। उन्होंने अपने बच्चों को सिखाने के लिए, हर कक्षा में इंग्लिश भाषा के शिक्षण हेतु सहायक सामग्री निर्मित की। आज बच्चे इनके द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री से उनकी उपस्थिति एवं अनुपस्थिति में भी पढ़ते हैं एवं रोज थोड़ा नया, कुछ नया सीखने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। उनके काम का असर उनकी कक्षा तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा आयोजित किए गए गणित कान्फ्रेंस में अपने कक्षा–अनुभव को केंद्र में रख के उन्होंने अपना पर्चा पढ़ा, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने बच्चों को गणित पढ़ाने के लिए बहुत सरल अवधारणाओं को लिया है। जिसमें वो गणित की शुरुआती अवधारणाओं जैसे छोटा–बड़ा, अंदर बाहर, ऊपर–नीचे को बच्चों के बीच रख के उस पर बात करती हैं। अपनी चर्चा को विस्तार देते हुए वे बच्चों को कक्षा स्कूल व गाँव में ऐसी अवधारणाओं को मूर्त रूप में, परिवेश में ढूँढने का कार्य देती हैं ताकि बच्चे रटें नहीं बल्कि समझ बनाएं।

(अंजली गर्ग की राय बहादुर सिंह से हुई बातचीत पर आधारित)

शिक्षण एक सामाजिक जिम्मेदारी भी है

रेखा पुरोहित
सहायक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय सौंराखाल
जखोली, रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड

प्रधानाध्यापक – सुर्जन लाल
भोजन माता – प्रमिला देवी
नामांकन – 45

सामाजिक बदलाव को गतिशील बनाने में सबसे अहम रोल एक विद्यालय का होता है जो समाज और शिक्षा को एक साथ जोड़ता है। वैसे तो एक समाज या एक संस्कृति के विकास और संवर्धन में विद्यालय की महती भूमिका होती है फिर भी सापेक्ष तौर पर एक विद्यालय, बच्चों के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जहाँ बच्चे न सिर्फ भाषा, गणित और विज्ञान जैसे विषय सीखते हैं बल्कि उसके साथ–साथ जिन्दगी जीने के हुनर और व्यावहारिकता को भी आत्मसात करते हैं। वैसे तो शिक्षा और समाज हमेशा से एक दूसरे पर निर्भर रहे लेकिन समय के साथ–साथ इनके बीच तालमेल में अनेक परिवर्तन आये। शिक्षा ने जहाँ व्यवसायीकरण का रूप लिया वहीं समाज ने अच्छी शिक्षा के लिए नए मानक तय किये और समाज का एक बड़ा हिस्सा सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को पुराना और अपर्याप्त समझने लगा। लेकिन आज जिस सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के बारे में समाज अनेकानेक भ्रांतियों से ग्रसित हैं, उसी शिक्षा प्रणाली में बहुत सारे ऐसे विद्यालय भी हैं जो कि अपनी अलग छवि के लिए जाने जाते हैं और ये सब संभव है शिक्षक/शिक्षिकाओं की अलग तरह की सोच के कारण। ऐसा ही एक विद्यालय है, रुद्रप्रयाग जनपद मुख्यालय के लगभग 50 किमी दूर, जखोली विकासखण्ड का, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सौंराखाल जिसमें दो शिक्षक/शिक्षिका हैं, उनमें से एक नाम है श्रीमती रेखा पुरोहित, जिन्होंने अपने घर से दूर समुदाय के बीच में रहकर अपनी गहरी पैठ बनायी है। प्राथमिक विद्यालय सौंराखाल के परिसर में प्रवेश करते ही आपका ध्यान स्कूल में बच्चों द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों पर चला जाता है जिसमें बच्चे अपने छोटे–छोटे समूह में मिट्टी से विभिन्न आकृतियाँ बनाने, चित्रकारी करने, क्राफ्ट का कार्य करने, अक्सर आस–पास के पेड़–पौधों का अवलोकन करने, पत्थरों के साथ खेलने व समूह में एक दूसरे के साथ पढ़ने में व्यस्त दिखाई देते हैं। अलग–अलग समूह में बच्चों के साथ रेखा जी का गहनता के साथ काम करना इस बात को इंगित करता है कि उनका बच्चों के साथ किस तरह का रिश्ता है।

विद्यालय में सबसे खास बात जो हमें देखने को मिलती है और वो है सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान मैत्रीपूर्ण वातावरण। शिक्षकों का बच्चों के प्रति स्नेह और प्रत्येक बच्चे के स्तर को समझना और बच्चों के स्तरानुसार अपनी पाठ योजना बनाना। इस बात का गहरा संकेत है। इस प्रकार शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षकों द्वारा विभिन्न प्रकार की सह–शैक्षणिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं तथा बच्चों के ज्ञान को कक्षा की चारदीवारी के अन्दर सीमित न रखकर उन्हें विभिन्न प्रकार की बाह्य गतिविधियों से भी जोड़ा जाता है। एक और बात आपका ध्यान आकर्षित करती है, इसके पुस्तकालय की जो बच्चों की लम्बाई के अनुरूप है और किताबों का पुराना सा दिखना, फटा होना इस बात का प्रमाण है कि इनका इस्तेमाल कैसे किया गया होगा।

हमने अभिवादन के साथ श्रीमती रेखा पुरोहित से उनके विद्यालय के बारे में जानने और बातचीत करने की इच्छा जाहिर की। श्रीमती रेखा पुरोहित से बातचीत के अंश इस लेख में शामिल हैं। शिक्षिका से बातचीत के दौरान पता चला कि 2012 में उनकी नियुक्ति से पहले यह एक एकल विद्यालय था उनके आने के बाद दोनों शिक्षकों ने मिलकर विद्यालय में कई परिवर्तन और नवाचार किये जिसमें प्रार्थना सभा में वंदना, समूहगान, प्रतिज्ञा और राष्ट्रगान के साथ–साथ सामान्य ज्ञान,

समाचार, आज का विचार, कहानी और कविता सुनना–सुनाना जैसी अनेक गतिविधियाँ शामिल की गयीं और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया गया। स्कूल में स्वच्छता को लेकर पुरोहित मैम ने हमें बताया "जब मैंने यह स्कूल ज्वॉइन किया तो देखा बच्चे साफ–सफाई से स्कूल नहीं आ रहे हैं तो मैंने बच्चों के अन्दर स्वच्छता लाने को लेकर

प्रयास शुरु किये। धीरे–धीरे हमारा प्रयास सफल हुआ और स्वच्छता की प्रक्रिया बच्चों के अन्दर व्यावहारिकता में दिखने लगी। यहाँ स्वच्छता का विशेष ध्यान दिया जाता है और प्रार्थना सभा के दौरान ही बच्चों की साफ–सफाई का निरीक्षण किया जाता है और अगर कोई बच्चा सफाई के साथ स्कूल नहीं आता तो इसको लेकर अभिभावकों को भी सूचित किया जाता है।"

आगे हमने रेखा जी से उनकी शिक्षा और विशेषकर प्रारंभिक शिक्षा के बारे में जानना चाहा। अपने बचपन को याद करते हुए उन्होंने बताया "तब गाँव का वातावरण बिलकुल अलग था और लड़कियों को पढ़ाई के लिए बाहर छोड़ने का चलन नहीं था। गाँव के रहन–सहन और समाज में लड़कियों की पढ़ाई–लिखाई को बहुत कम महत्व दिया जाता था। मेरा परिवार भी इतना संपन्न नहीं था मगर पढ़ाई का शौक और पढ़ाई को लेकर मेरी जिद्दी होने की वजह से घरवालों ने मुझे हाईस्कूल में जाने के लिए हामी भर दी। गाँव की मैं पहली लड़की थी जिसने हाईस्कूल में दाखिला लिया था। काफी संघर्ष के साथ मैंने अपना दसवीं पास किया। पढ़ाई करना मेरे लिए एक जुनून था ताकि मेरा समाज मुझे आगे चलकर अनपढ़ न कहे। एक ऐसा समय भी आया जब दसवीं के बाद मेरा आगे पढ़ने का रास्ता बंद हो गया क्योंकि मेरा परिवार अम्बाला (हरियाणा) पलायन कर गया। मगर मैंने अपनी उम्मीद नहीं छोड़ी और राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली से इंटरमीडिएट पास किया। शादी के बाद मुझे ससुराल की तरफ से पूरा सहयोग मिला और मेरी आगे पढ़ने की रुचि को देखते हुए मेरे ससुर जी ने मुझे आगे पढ़ने के लिए हां कह दिया। इसके बाद मैंने गढ़वाल यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया।

शिक्षक बनने की अपनी यात्रा के बारे में उन्होंने बताया कि मुझे शुरू से ही पढ़ने का शौक था। बचपन में बहुत सारी कठिनाईयों के बाबजूद, अपनी प्रबल इच्छाशक्ति से मैंने इंटरमीडिएट तक की शिक्षा पूरी की थी। बचपन में कभी सोचा नहीं था कि टीचर बनूँगी, मगर शादी के बाद भाग्य ने मेरा साथ दिया और मैंने अपनी बची हुई पढाई पूरी की। ग्रेजुएशन करने के बाद मैंने अपना बी.एड. पूरा कर लिया। मैं अपने घर में अपने बच्चों को खुद ही पढ़ाती थी फिर मेरे पति की प्रेरणा से मुझे इस पेशे में आने की इच्छा हुई। 2008–2012 तक मैं एक निजी विद्यालय में शिक्षिका थी। 2012 में मेरी

पहली नियुक्ति इसी विद्यालय में हुई तब से मैं यहीं कार्यरत हूं।

मेरे अनुसार शिक्षण एक पेशा ही नहीं बल्कि एक सामाजिक जिम्मेदारी भी है क्योंकि इसके साथ समाज और समाज का भविष्य जुड़ा हुआ है। आज भी एक विद्यालय से और एक शिक्षक से प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों के भविष्य को लेकर उम्मीदें रखता है। एक अच्छा शिक्षक होने के लिए बच्चों के साथ बच्चे जैसा व्यवहार करना और उनके स्तर पर जाकर उन्हें सिखाना जरूरी है। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को पढ़ाने के लिए हर एक बच्चे को समझना जरुरी है साथ ही पहले हम खुद सीखें फिर बच्चों को सिखाएं। मेरा बचपन एक गाँव में गुजरा है मगर मैंने इन बच्चों के साथ अपने बचपन को फिर से जिंदा किया। बहुत सारी चीजें मैं खुद बच्चों से सीखती रहती हूँ। मेरा मानना है कि हर एक व्यक्ति के पास ज्ञान का एक भंडार होता है। हम कभी–कभी बच्चों को छोटा समझकर उन्हें अनदेखा कर देते हैं लेकिन यहाँ बच्चों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हर बच्चा सीख सकता है। कोई पढ़ाई में बेहतर होता है, कोई कला में तो कोई व्यापार में, मगर एक शिक्षक होने के नाते बच्चों की रुचि और अभिव्यक्ति को पहचानना और उसके साथ–साथ उन्हें प्रेरित करना सबसे अहम बात है।

रेखा जी का मानना है कि शिक्षा तो सही मायने में वह है जो हमें जीवन जीना सिखाये। जो हमने सीखा है उसको हम अपने व्यवहार में ला पायें। नौकरी पाना अच्छी शिक्षा का उद्देश्य नहीं है बल्कि एक इन्सान सीखी हुई चीजों को अपने जीवन में प्रयोग कर पाये तब शिक्षा सफल होगी। यह जरूरी नहीं है कि हर बच्चा उच्च पद पर आसीन हो बल्कि वह एक अच्छा नागरिक बनकर समाज निर्माण में भागीदार बने यही अच्छी शिक्षा से आशय है।

अपने विद्यालय का उदाहरण देते हुए रेखा जी ने हमें बताया कि जब किसी बच्चे के पास पेंसिल या रबर नहीं होता है तो दूसरे बच्चे अपने आप ही मदद करते हैं। मदद की यह भावना उनमें आपसी सहयोग, सम्मान, संवेदनशीलता और प्रयत्न की भावना को सीखने–सिखाने का हिस्सा बनाने में सहयोग करती है। कभी–कभी जब बच्चे आपस में लड़ते हैं तो वे आपस में ही एक–दूसरे के झगड़ों को सुलझाते हैं। आपस में झगड़े सुलझाने का एक मकसद ये भी होता है कि वे आपस में कुछ तर्क–वितर्क कर पाएं और उनमें तार्तिकता का विकास हो सके। विद्यालय में भी बच्चों में अनुशासन को लेकर जब हमने बात की, तो उन्होंने अपने जवाब में कहा कि, "सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में दण्ड और भय की कोई जगह नहीं है। हमारे विद्यालय में छात्र अपनी बात और अपना काम बिना झिझक और निडर होकर कहते और करते हैं। गलतियाँ तो सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा होती हैं। अगर हम बच्चों द्वारा की गयी चीजों को गलत ठहराएंगे तो इससे उनकी क्रिएटिविटी मर जायेगी और उनके मन में डर पैदा हो जायेगा। बच्चों के कामों को प्रोत्साहित करने से उन्हें नयी चीज करने के लिए मोटिवेशन मिलता है। पढ़ाई मार कर या पिटाई करके नहीं की जा सकती। अगर बच्चा सीख नहीं पा रहा तो इसमें शिक्षक की कमी मानी जानी चाहिए"। इसके अलावा हमने रेखा जी से समाज के कुछ अन्य मुद्दों पर बात की। खुद के काम को ईमानदारी और अच्छे से करना उनकी बड़ी

ताकत है। उनका मानना है कि आगे बढ़ने के लिए अपने आप से ही प्रतिस्पर्धा करो। दूसरों के साथ खुद की प्रतिस्पर्धा करने से हीनता पैदा होती है।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुर्जन लाल जी से और बच्चों से बातचीत करके विद्यालय में विभिन्न कार्यकलापों को जाना और समझा। विद्यालय में बच्चे आत्मविश्वास से भरपूर हैं। अपनी बात को बेझिझक कहना एवं निसंकोच मन से अपने शिक्षक से बात करना, विभिन्न प्रश्न पूछना हमारे अवलोकन का हिस्सा रहा। हमें लगा कि इस विद्यालय का एक मजबूत पक्ष यहाँ पर शैक्षिक एवं अकादमिक वातावरण का निर्माण भी है। दोनों शिक्षक मिलजुल कर शैक्षिक योजना के साथ काम करते हैं। प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति और स्तर के अनुसार पाठ्य योजना बनाई जाती है। बच्चों का सर्वांगीण विकास विद्यालय का ध्येय वाक्य है। शैक्षिक पंजिका के अनुसार अकादमिक गतिविधि के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के सह–शैक्षणिक क्रियाकलापों के माध्यम से कक्षा–शिक्षण, बच्चों के अन्दर एक विशेष ऊर्जा पैदा करता है। अलग–अलग कबाड़ की चीजों से रस्सी बनाना, पेपर क्राफ्ट, रंगोली, राखी, ग्रीटिंग्स आदि बनाना बच्चों को सृजनात्मकता और सौन्दर्यबोध का एहसास कराता है। इस प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियों का उपयोग करके कैसे बच्चों का अधिगम स्तर बढाया जा सकता है इसका एक बेहतरीन उदाहरण यह विद्यालय पेश करता है।

एस.एम.सी. के एक सदस्य जयेंन्द्र सिंह नेगी जिनके दोनों बच्चे पहले पास के ही एक निजी विद्यालय में पढ़ते थे और बाद में उन्होंने अपने बच्चों का नामांकन सरकारी विद्यालय में कराया, इसका कारण उन्होंने इस विद्यालय के शिक्षकों की लगन और मेहनत को बताया। जयेंद्र जी ने बताया कि विद्यालय की छुट्टी के पश्चात पुरोहित मैम का बच्चों को अतिरिक्त समय देना और नवोदय व सैनिक स्कूल की तैयारी करवाना आस–पास के समुदाय का विश्वास जीत गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि कई बच्चे निजी विद्यालय से सरकारी विद्यालय में दाखिला ले पाए। उनके इसी प्रयास के दम पर पिछले साल उनके विद्यालय से 3 बच्चे नवोदय विद्यालय में चयनित हुए। इस दौर में भी जब आज निजी विद्यालय फल–फूल रहे हैं सौराखाल के पास का एक निजी विद्यालय है जो कि कमोवेश बंद होने की कगार पर है और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है और वहाँ से बच्चों का राजकीय प्राथमिक विद्यालय सौराखाल में दाखिला लेना इस बात का द्योतक है कि इस विद्यालय में और वहाँ के शिक्षक/शिक्षिकाओं में कुछ तो अलग है।

(रेखा पुरोहित की नमदिप्त और दीपक रावत से हुई बातचीत पर आधारित)

मुश्किल जैसा कुछ भी नहीं

विजय प्रकाश जैन
सहायक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मेदिया डिंडोर
बांसवाड़ा (राजस्थान)

प्रधानाध्यापक	**–**	**धनजी बुज**
सहायक अध्यापक	**–**	**भूरा लाल बघेल**
भोजन माता	**–**	**पानू देवी**
नामांकन	**–**	**179**

हमारे समाज में सामान्यतः मान्यता यह है कि अकेला व्यक्ति किसी भी तरह के परिवर्तन को या बदलाव को लाने में कोई खास योगदान नहीं दे सकता है। इसलिए हमारे यहाँ यह कहा भी जाता है कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' है हालांकि हमारे पास ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जिन्होंने अपने कार्यों से जमाने को हैरत में डाला है। इसी देश में एक अकेले व्यक्ति ने पहाड़ काट कर लोगों के लिए रास्ता भी बनाया है। मरने और मारने के सिद्धांतों के समानान्तर अहिंसा को अपना हथियार बनाने वाले बापू भी अकेले ही थे, बहरहाल यह और बात है कि उस रास्ते को बनाने के सफर में बहुतेरों ने उनका उपहास बनाया होगा। ठीक इसी तरह की एक घटना राजस्थान के सुदूर बांसवाड़ा जिले में भी देखने को मिल रही है। जहाँ एक अकेले शिक्षक ने उम्मीद की लौ जलाई हुई है। बिना यह परवाह किये कि लोग क्या कहेंगे?

यह कहानी है मेदिया डिंडोर की जो कि बांसवाड़ा (राजस्थान) का एक गाँव है। यह जिला पिछड़ा एवं आदिवासी बाहुल्य इलाकों में आता हैं। इस इलाके में शिक्षा का खासा अभाव नजर आता है। ग्रामीणों में नशीले पदार्थों का यहाँ सेवन आम है। जिस कारण गाँव के स्कूल के शिक्षक उनसे दूर रहना ज्यादा पसंद करते हैं। यही कारण है कि यहाँ के शिक्षकों एवं ग्रामीणों में संवाद स्थापित करने का स्कूल एक बेहतर साधन बन नहीं पाया और शिक्षकों द्वारा यह मान लिया गया है कि यहाँ के लोगों का कुछ हो ही नहीं सकता है। ठीक इसी तरह की सोच रखने वाले एक शिक्षक रहे हैं विजय जैन। जिन्होंने न सिर्फ अपनी सोच बदली है बल्कि दूसरों को भी बदलने का कार्य किया है। विजय जी ने न केवल ग्रामीणों को स्कूल से जोड़ा है बल्कि स्टॉफ और ग्रामीणों के बीच, स्कूल को संवाद का सशक्त माध्यम भी बनाया है। विजय जी बताते हैं कि वो जब 2016 में मेदिया डिंडोर में आए तो स्कूल की स्थिति देख कर दंग रह गए। यह उन्हें स्कूल कम सार्वजनिक स्थल ज्यादा जान पड़ रहा था। स्कूल में जगह–जगह पर ग्रामीणों द्वारा मल किया गया था। स्कूल की हालत जर्जर थी। एक बार को लगा कि मैं जाने कहाँ आकर फंस गया हूँ।

स्कूल में बच्चों का नामांकन देखा तो काफी कम था और ऊपर से बच्चे अनियमित भी थे। स्कूल में थोड़ा समय बिताने के बाद में समझ आया कि स्कूल गाँव में तो था पर गाँव और स्कूल में किसी तरह का आत्मीय संबंध नहीं था या यूं कहें कि इस प्रकार का संबंध, कभी स्कूल के कर्मचारियों और गाँव वालों में, विकसित ही नहीं हो पाया था। एक मात्र बच्चे ही थे जो स्कूल आते थे और पास होकर चले जाते थे। स्कूल अपनी जर्जर स्थिति में गाँव के मुहाने पर खड़ा था, जिसके रसोई और

प्रांगण को गाँव वालों ने सार्वजनिक शौचालय बनाया हुआ था। यह मेरे लिए बड़ी समस्या थी कि जब तक स्कूल का ही विकास नहीं होगा तो स्कूल बच्चों का विकास कैसे करेगा? मैंने स्कूल की समस्या से निपटने के लिए स्टाफ से सहयोग माँगा पर निराशा हाथ लगी तो स्वयं ही उन बच्चों के घर जाना शुरू किया, जो अनियमित थे। उनके अभिभावकों से बातचीत करना भी शुरू किया। यह वो काम था जो कभी हुआ ही नहीं था। इसके अलावा बच्चों के साथ मिलकर स्वयं झाड़ू लेकर स्कूल सफाई का कार्य शुरू किया। सफाई कार्य पूरा होने के बाद स्कूल परिसर में वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा और गाँव वालों को आमंत्रित किया। यह हमारे स्कूल के लिए बहुत महत्वपूर्ण कदम रहा। उन्हें स्कूल में बुलाने का मेरा उद्देश्य यह था कि हम गाँव वालों की चिंताओं को जान सकें और गाँव वाले स्कूल की समस्याओं से रू–ब–रू हो सकें। जब गाँव वाले स्कूल में एकत्र हुए तो उनकी आपसी चर्चा से ही स्कूल को काफी सहायता मिली। स्कूल की स्थिति को देख कर एक सज्जन ने स्कूल के रंग–रोगन के लिए अपने खर्चे से रंग, चूना देने का प्रस्ताव रखा तो स्कूल के रंग–रोगन के कार्य को मुकक्मल बनाने के लिए कई अभिभावक तैयार भी हो गए। मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, दिल बल्लियों उछल गया। यह एक छोटी मगर बहुत महत्वपूर्ण जीत थी। स्कूल के रंग–रोगन का कार्य शुरू हुआ इस दौरान थोड़ी जरूरी चीजें स्कूल ने भी उपलब्ध करवाई। इसके बाद स्कूल की खिड़की दरवाजे और शौचालय बना, रसोईघर अपने मूल रूप में तैयार होकर हमारे सामने आया। स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम से न सिर्फ गाँव वाले साथ आ गए बल्कि स्टॉफ के कुछ लोगों का भी सहयोग मिलने लगा।

विजय जी बताते हैं कि स्टॉफ के कुछ सदस्यों का और ग्रामीणों का सहयोग देख कर गर्मियों की छुट्टियों में समर कैम्प लगाने की योजना तैयार की गई, पर समस्या यह थी कि इन दिनों में गाँव में मुट्ठी भर बच्चे ही रह जाते थे। ऐसी स्थिति में भी 2016 में पहली बार समर कैम्प का आयोजन हमने किया और यह हमारे लिए आश्चर्य की बात रही कि हमारे स्कूल में बच्चों का नामांकन तो सिर्फ 122 का था पर समर कैम्प में 200 बच्चों का नाम हमने रजिस्टर किया। हमारे लिए खुशी की बात 200 बच्चों का स्कूल आना भर नहीं था बल्कि उनका 10 दिनों तक नियमित बने रहना भी था। यहाँ गौर करने वाली बात यह रही कि यह बच्चे केवल मेदिया डिंडोर से ही नहीं बल्कि आस–पास के अन्य गांवों से भी आ रहे थे। यह हमारे लिए जितनी खुशी की बात थी उतनी ही चिंता की भी बात थी कि जो बच्चे समर कैम्प में नियमित थे उन्होंने स्कूल खुलने के बाद से स्कूल आना बंद कर दिया था। उनसे बात करके पता चला कि वो कक्षा 4 से 8 के बच्चे हैं और उन्हें अभी तक लिखना–पढ़ना नहीं आता, जिस कारण कक्षा में वो अक्सर हँसी का पात्र बनते हैं। जब बच्चों से यह पूछा गया कि उनको यह समस्या है तो समर कैम्प में नियमित क्यों आए, उनके इस प्रश्न का उत्तर देते हुए एक छात्र ने कहा कि सर कैम्प में आप पढ़ाते थोड़ा थे वहाँ तो कविता, कहानी, खेल यही सब तो होता था। इसके बाद से हमने बच्चों के साथ लिखने–पढ़ने पर केन्द्रित होकर कार्य शुरू किया। कुछ गैर सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर बच्चों के लिए मेलों का आयोजन भी करवाया।

पढ़ने–लिखने की इसी प्रक्रिया में विजय जी की कक्षा में एक बड़ी असाधारण घटना घटी। उनकी

कक्षा के बच्चों ने उनसे कक्षा के दौरान दो सवाल पूछे? पहला सवाल यह था कि सरकार कौन होती है? और दूसरा सवाल था कि सरकार बनती कैसे है? यहाँ विजय जी ने दोनों सवालों के सैद्धांतिक जवाब बच्चों को न देकर उन्हें इसकी प्रक्रिया से गुजारने की कोशिश की। इसके लिए उन्होने अपने विद्यालय में ही बाल सदन के चुनाव का आयोजन करवा दिया। इस चुनाव के बाद बच्चे चुनाव प्रक्रिया को समझने के साथ–साथ सरकार कार्य कैसे करती है, यह भी समझने लगे। अब स्कूल में होने वाले हर कार्य को करने के लिए बाल सदन द्वारा कुछ मंत्रियों का समूह नियुक्त किया गया। यह तो हुई सरकार बनाने की प्रक्रिया और उसके कार्य वितरण की बात, पर इस बारे में शायद ही किसी ने सोचा था कि बच्चे इस प्रक्रिया को देखने और समझने के साथ ही साथ एक नागरिक की जिम्मेदारियों को भी समझने लगेंगे। जैसे अगर कक्षा में चॉक या डस्टर नहीं हो तो इसके लिए बच्चे शिक्षा मंत्री या उसके मंत्रियों को इसकी सूचना देने लगे। अगर स्कूल के पौधों को पानी नहीं दिया गया है तो इसकी जिम्मेदारी पर्यावरण मंत्रालय की होगी। स्कूल के खाने में साफ–सफाई या अन्य किसी तरह की समस्या हो तो उसकी शिकायत खाद्य मंत्रालय को की दी जाने लगी आदि। इस तरह का कार्य अपने आप में अनोखा है जिसकी पहल विजय जैन जी ने अपने विद्यालय में की।

मेदिया डिंडोर स्कूल के साथ शुरू हुए अपने सफर के एक नए अध्याय के बारे में वो बताते हैं कि जिसने न सिर्फ मेदिया डिंडोर बल्कि आस–पास के कई गांवों के लोगों की सोच सरकारी स्कूलों के प्रति बदल के रख दी। वो बताते हैं कि हमारे स्कूल के बच्चे आज तक कभी बांसवाड़ा (शहर) तक नहीं गए थे, पर यह पहला मौका था, जब एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मुझे अपने स्कूल के बच्चों के साथ दिल्ली जाना था। समस्या बस जाने भर की नहीं थी बल्कि उससे ज्यादा थी वो सर्दियों के दिन थे और हमें बांसवाड़ा के एक गाँव से दिल्ली तक का सफर तय करना था और बच्चों के पास गर्म कपड़े तक नहीं थे। जानने वाले, जिनमें ज्यादातर शिक्षक थे, सभी ने मुझे इस जोखिम को उठाने से मना किया। पर बच्चों के घर वालों ने मुझ पर विश्वास जताया। कुछ जानने वालों ने बच्चों के गर्म कपड़े भी उपलब्ध करवाए और हम चल निकले। हालांकि इस सफर के बारे में जब मैं योजना बना रहा था तब मुझे वास्तव में दिल्ली बहुत दूर नजर आ रही थी, बच्चों के उत्साह और गाँव वालों का साथ पाकर अब दिल्ली बहुत दूर नहीं रह गई थी। हम तीन दिनों तक दिल्ली में रुके और कार्यक्रम में भाग लेने के साथ ही दिल्ली भी घूमे। दिल्ली से लौटकर बच्चों ने अपने अनुभव महीनों गाँव भर में सुनाए। इस बीच यह किस्सा भी कमाल का हुआ। लौटती ट्रेन में बच्चे जब एक दूसरे को कुछ देते तो 'थैंक यू' और गलती होने पर 'सॉरी' बोल रहे थे। जब मेरा इस ओर ध्यान गया तो बड़ी हैरानी हुई। मैंने तो बच्चों को न तो यह शब्द सिखाए थे और न ही कहाँ और कब प्रयोग करना है यह बताया था। यह जो परिवर्तन हुआ दिल्ली से लौटने बाद हुआ जान पड़ा। जो मेरे बच्चों ने दिल्ली के छात्रों के साथ रह कर सीखा था। मैं कुल मिलाकर कहूँ तो बच्चों के साथ काम करते हुए मेरा यह यकीन बनने लगा है कि बच्चों के साथ सीखना–सिखाना सिर्फ किताब तक सीमित होकर नहीं हो सकता। हमारी कक्षाएँ दुनिया भर के ज्ञान का एक छोटा सा हिस्सा भर हैं और शेष ज्ञान तो कक्षाओं के बाहर है। जहां बच्चे आचार–व्यवहार और सामाजिक मूल्यों के साथ

जाने क्या–क्या सीखते हैं। इस सीखने की प्रक्रिया में मैंने अपने बच्चों पर सिर्फ विश्वास किया है और उनके सीखने के रास्ते में आने वाली हर तरह की बाधाओं को दूर करने का प्रयास भर किया है।

स्कूल में हो रही इस तरह की गतिविधियों को लेकर अभिभावक बताते हैं कि हमारे गांव से बहुत कम लोग ही जिले तक गए हैं और आमतौर पर जिले में जाना हमारे लिए बड़ी बात मानी जाती है। ऐसे में स्कूल हमारे बच्चों को दिल्ली में हो रहे कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए ले गया, यह हमारे लिए और आस–पास के कई गांवों के लिए बहुत अलग घटना है, हम खुद कभी इतनी दूर नहीं जा पाए हैं। ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ पर अब यह देख के अच्छा लगता है कि लोग बाहर से आते हैं और हमारे बच्चों के लिए सामान लाते हैं। हम से जितना होता है उतना तो करते हैं पर स्कूल के लोग हमारे बच्चों के साथ ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा कि वो अपने बच्चों के लिए करते हैं।

विजय जी अपने पढ़ाने के तरीके बारे में बताते हैं कि शुरुआती दिनों में जब उन्होने कक्षा में बाल गीत गाना शुरू किया, तब बच्चों के घर वाले बच्चों से कहने लगे कि यह कैसा मास्टर स्कूल में आया है जो गाना सिखा रहा है? पर बच्चों को शिक्षण का यह अंदाज बहुत अच्छा लग रहा था। बच्चों के लिए गीत गाना भर था पर मेरे लिए इसमें सुनना–बोलना और लिखना–पढ़ना छुपा था। विजय जी की ही कक्षा 5 में पढ़ने वाले विनोद के पिता बताते हैं कि इन दिनों तो स्कूल में पढ़ाई हो रही है। देख के अच्छा लगता है कि मेरा बेटा किताब पढ़ रहा है और लिख भी लेता है। पर यह स्थिति हमेशा से नहीं थी। मैं भी इसी विद्यालय में पढ़ा हूँ पर 5 साल यहाँ देने के बाद मुझे कुछ भी नहीं आया, तो मैं वीरपुर पढ़ने गया और फिर से कक्षा 1 से पढ़ा। वो आगे कहते हैं कि अगर मुझे भी इस तरह का पढ़ने–लिखने का अवसर मिला होता, जो आज–कल इस स्कूल में दिये जाते हैं, तो संभवतः में भी आज अच्छी नौकरी में होता। हमारे समय में पढ़ाने का तरीका तो बहुत अजीब था, तब बहुत मारते थे पर यहाँ के शिक्षकों के पास क्या जादू है समझ नहीं आता कि बिना मारे सब कुछ सिखा देते हैं। देश के सुदूर इलाके में बसे मेदिया डिंडोर के बच्चों को हर तरह का एक्सपोजर देने के लिए विजय जी अलग–अलग तरह की गतिविधियाँ स्कूल में करते हैं। इसी क्रम में उन्होने बच्चों को अपने अनुभवों से या कहें कि

खुद से करके सीखने के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सदस्यों के साथ मिलकर स्कूल में बाल शोध मेले के आयोजन की योजना बनाई। जिसके लिए उन्होने बच्चों के बीच इस बात को रखते हुए इस मेले के आयोजन पर बच्चों के विचार जाने और उनकी सहमति पाने के साथ ही उन्होने बच्चों को अलग–अलग समूहों में बाँट दिया। इन सभी समूहों को गाँव के बसने की कहानी, स्कूल बनने की कहानी, खेती के औजारों और लोक गीतों आदि अन्य विषयों पर जानकारी इकट्ठी करनी थी। बच्चों द्वारा संग्रहीत जानकारी को बच्चों के साथ मिलकर व्यवस्थित किया गया। जिसके बाद स्कूल में 'होदवा नू मेरु' (बाल शोध मेला) करवाया गया। आज इन तमाम कवायदों का ही असर है कि 2016 से अब तक स्कूल में बच्चों का नामांकन काफी बढ़ा है। एक तुलनात्मक आधार पर वो बताते हैं कि साल 2016 में स्कूल में बच्चों की संख्या 122 थी जो वर्तमान में 179 हो गई। स्थिति यह है कि दूसरे स्कूलों से और गांवों से जो हमारे स्कूल से दूर हैं, बच्चे यहाँ नाम लिखवाने आ रहे हैं। बच्चे स्कूल में नियमित हैं और जो किसी कारण से स्कूल नहीं आ पा रहे हैं उनकी पूरी जानकारी हमारे पास होती है। अपनी तमाम बातों के बीच विजय जी इस बात को भी रखते हैं कि मेदिया डिंडोर में काम करते हुए कुछ मैं बदला हूँ, कुछ बच्चे, कुछ गाँव वाले और कुछ मेरे स्कूल वाले। बदलने की इस प्रक्रिया में हम सभी अपनी पूरी क्षमता के साथ एक बेहतर कल की ओर बढ़ रहे हैं।

(विजय प्रकाश जैन की राय बहादुर सिंह से हुई बातचीत पर आधारित)

बालजीवन संवारता शिक्षक

हेमंत चौकियाल
प्रभारी प्रधानाध्यापक
राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय
डांगी गुनाऊ, रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड

सहायक अध्यापक – मंगल लाल शाह, गोपाल दत्त सेमवाल
भोजन माता – सुशीला देवी
नामांकन – 14

शिक्षक का अपने जीवन में काफी बच्चों से सामना होता है और बच्चों के जीवन में भी शिक्षक काफी अहम् भूमिका रखते हैं। ज्यादातर बच्चे अपने शिक्षकों का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं। आपको पता भी नहीं चलता कि कब आपकी कौन सी बात किसी छात्र के जीवन को एक नया मोड़ दे देती है। रुद्रप्रयाग जिले में शायद ही कोई शिक्षक या विद्यालय होगा जहाँ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, डांगी–गुनाऊ में कार्यरत शिक्षक हेमंत चौकियाल जी को कोई नहीं जानता होगा। अभी हाल ही में राष्ट्रीय स्तर पर हुई विज्ञान प्रदर्शनी में चौकियाल जी व उनके छात्र रोहित रौतेला ने अपने विद्यालय का नाम देशभर में जो रोशन किया है। सौम्य व सरल स्वभाव के चौकियाल जी पिछले तीन वर्षों से डांगी–गुनाऊ विद्यालय में कार्यरत हैं। रुद्रप्रयाग बाजार से विद्यालय की दूरी लगभग 15 किमी. है। सड़क से विद्यालय लगभग 1 किमी. की दूरी पर है। विद्यालय में दो और शिक्षक हैं तथा बच्चों की संख्या 14 हैं। चौकियाल जी ने पिछले 28 सालों के अपने शिक्षण काल में विभिन्न विद्यालयों में सेवायें दी हैं। स्यांसू, जाल–मल्ला, लडियासु विद्यालयों में अपनी सेवा देने के बाद वे 2015 में डांगी– गुनाऊ आये। वे अपनी बातचीत में बताते हैं कि 1991 में वे मृतक आश्रित शिक्षक के बतौर लगे थे। 1991–95 तक वे अप्रशिक्षित शिक्षक के रूप में काम करते रहे। परिवार में सबसे बड़े थे तो घर के काम और अन्य जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए उन्होंने 1995 में बी.एड. किया।

अपने अनुभवों को याद करते हुए चौकियाल जी बताते हैं कि उन्होंने अपने काम की शुरुआत समुदाय से रिश्ते बनाकर की। हालांकि यह इतना आसान नहीं था। समुदाय का अपने बच्चों और विद्यालय की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं था। ऐसे में उन्होंने विद्यालय में अभिभावकों की कई बैठकें बुलाई और इसी का नतीजा रहा कि वे संकुल स्तर पर मेले का आयोजन कर पाए। यह मेला उस समय काफी चर्चा में आया। इस मेले में लिए गये विषय पाठयक्रम आधारित थे जैसे– पारंपरिक वेशभूषा, गहने, बर्तन, औजार, पकवान आदि की प्रदर्शनी बच्चों द्वारा लगाई गयी। इस प्रकार चौकियाल जी ने ना सिर्फ एनसीएफ 2005 के उद्देश्य को साथ लेते हुए बच्चों को उनके वातावरण से जोड़ा बल्कि लोक संस्कृति को बढ़ावा देते हुए उनका अकादमिक पक्ष भी मजबूत किया। समुदाय का चौकियाल जी पर विश्वास इस कदर था, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता था कि लोगों ने प्रदर्शनी में अपने सोने से बने गहने (बुलाक, गुलोबंद) तक दे दिए। डांगी–गुनाऊ विद्यालय में आने के बाद एक बार फिर से समुदाय को साथ लेने एक चुनौती उनके सामने खड़ी थी। उनके अनुसार, जब वे शुरुआत में उस विद्यालय में आये तो उन्हें समुदाय का इतना सहयोग नहीं मिला। इसका उदाहरण उन्होंने कुछ इस प्रकार दिया– खेल प्रतियोगिताओं में जब बच्चे जिले के लिए चयनित हुए (जिनमें बालिकाएं भी शामिल थी), तो बच्चों के माता–पिता ने उन्हें शिक्षक के साथ भेजने से मना कर दिया। शायद वे अपने बच्चों की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त नहीं थे। परन्तु समय के साथ बच्चों के माता–पिता को भी समझ आ गया कि सर उनके बच्चों की भलाई के लिए ही ये सब कर रहे हैं। उनका समुदाय के साथ बहुत अच्छा सम्बन्ध है। एसएमसी मीटिंग हो या विद्यालय में होने वाला कोई कार्यक्रम, समुदाय के लोगों ने हमेशा से ही बढ़–चढ़कर भाग लिया है।

इस पर चौकियाल जी का मानना है, बच्चों पर परिवार और उसके सदस्यों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

कक्षाओं की विशेषता

विद्यालय में विषयवार घंटी नहीं लगती। सर का कहना है, घंटी बजाना विषयों के बीच एक अंतर विषयी दीवार खड़ा करना है। ऐसा करने से विद्यालय के अन्य शिक्षकों को भी कोई आपत्ति नहीं होती। कक्षा में आते ही वे अपना तकिया कलाम बोलते हैं– "आज क्या पढ़ना चाहते हो?'' ऐसा करें या वैसा? इस पर बच्चे एक आपसी सहमति बनाते हुए विषय का चयन करते हैं। बच्चों को अपने शिक्षक का उनके साथ नीचे बैठना आश्चर्यजनक नहीं लगता। कक्षा का वातावरण काफी रोचक और सौहार्दपूर्ण होता है। बच्चों को वे ज्यादातर समूह में ही बैठाते हैं। किसी विषय पर बातचीत करने के बाद बच्चों को उस विषय से आधारित प्रश्न दे दिए जाते हैं। बच्चों की कोशिश होती है कि वे खुद से ही प्रश्नों को हल करें। जरूरत पढ़ने पर बच्चे आपस में एक–दूसरे की सहायता करते हैं और फिर खुद से ही प्रश्न बनाकर उनको हल करते हैं। इस प्रकार से वे बच्चों के बीच एक सुगमकर्ता के रूप में काम करते हैं। उनका मानना है कि सारे बच्चे पढ़–लिख सकते हैं और ये भी कि यदि कोई बच्चा पढ़ नहीं पा रहा है तो शिक्षक को प्रत्येक बच्चे के स्तर की पहचान कर उनके स्तरानुसार गतिविधिधियों का चयन करना होगा।

विद्यालय की दीवारें बच्चों और उनके शिक्षक की मेहनत का प्रमाण देती हैं। चौकियाल जी विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान लगभग सभी विषय पढ़ाते हैं। उनका अकादमिक पक्ष काफी मजबूत नजर आता है। हॉल में थर्मामीटर के साथ टंगा, दो साल के तापमान को दर्शाता चार्ट (जिसमें बच्चे सुबह, दिन और छुट्टी के वक्त का तापमान नोट करते हैं), राज्यसभा और लोकसभा को दर्शाता चार्ट, पुरानी मुद्राओं से आच्छादित चार्ट (जिसमें सर और बच्चों द्वारा संकलित पुराने सिक्कों और नोटों को चिपकाया गया है), विज्ञान के विभिन्न आविष्कार वाला चार्ट तथा बच्चों के सवालों से भरा चार्ट, जिससे उनकी चीजों को जानने की उत्सुकता तथा जिज्ञासा झलकती है, इस बात का प्रमाण हैं। कक्षाओं में भी पाठ आधारित चार्ट्स लगे हैं जिनका समय–समय पर पुनरावलोकन किया जाता है। चौकियाल जी की कोशिश ज्यादातर यही रहती है कि बच्चों की तरफ से ज्यादा प्रतिक्रियाएं आये। फिर चाहे सवालों का पहाड़ ही क्यों न खड़ा हो जाए। बच्चों के सवालों के लिये उन्होंने एक चार्ट लगाया है, जिसमें बच्चे अपने सवालों को लिखते हैं। ये सवाल किसी भी विषय के होते हैं।

समय–समय पर वे इन सवालों के जवाब ढूँढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

कुछ सवालों के जवाब बच्चों को विषय सम्बन्धी टीएलएम से मिल जाते हैं। चौकियाल जी ने काफी टीएलएम जुटाया है, जिसके रखरखाव की जिम्मेदारी बच्चों की ही है। समय–समय पर इन TLM में परिवर्तन भी होता है। वे टीएलएम भी आस–पास के परिवेश से ही लाते हैं। इससे वे बच्चों को यह भी संदेश देते हैं कि भले ही गाँव में लोग पढ़े–लिखे नहीं थे, परन्तु उन्हें आस–पास की चीजों को उपयोग करना आता था, भले ही फिर वे उसके पीछे के कारणों को नहीं जानते हों। वे पढ़ाते समय अधिकतर उदाहरण, स्थानीय परिवेश से लेते हैं। उदाहरण के तौर पर, विज्ञान में अम्ल, क्षार और लवण पढ़ाने के दौरान प्रयोगों के बाद उन्होंने कुछ उदाहरण स्थानीय परिवेश के दिए, जैसे– मधुमक्खी के डंक मारने पर, गांव–घरों में राख, टूथपेस्ट आदि क्षारों का प्रयोग करना। ऐसा ही एक उदाहरण है, प्रत्येक महीने बच्चों द्वारा उनके वजन और लम्बाई में बढ़ोत्तरी को चार्ट पर दर्ज करना। इस प्रकार वे अपने वजन और लम्बाई में अंतर देख पाते हैं। उसके अनुसार वे अपने खानपान में चौकियाल जी से चर्चा कर बदलाव भी लाते हैं। इससे बच्चे आंकड़ों का विश्लेषण करना भी सीखे हैं। इन सबसे बच्चे चीजों को जल्दी समझ जाते हैं। जब लगता है कि किसी बच्चे को किसी विषय को समझने में ज्यादा समय लगेगा तो वे खाली समय में उस बच्चे के साथ उस विषय पर काम करते हैं। जिन बच्चों में आत्मविश्वास की कमी है, उन बच्चों को वे अधिक काम सौंपते हैं, जिससे बच्चे में आत्मविश्वास आये और जिम्मेदारियां लेना सीखे। 2–3 बच्चों के उदाहरण देते हुए वे बताते हैं कि जिम्मेदारियां देने पर इन बच्चों में आत्मविश्वास के साथ–साथ नेतृत्व की भावना की बढ़ोतरी हुई है।

समय–समय पर वे बच्चों के कमजोर पक्षों पर काम करते रहते हैं। बच्चों के मन को और अधिक जानने के लिए उन्होंने 2–3 बॉक्स रखे हैं, जिनके नाम अलग–अलग हैं। जैसे 'मन की बात'– जिसमें बच्चों को कुछ भी लिखने की आजादी है। बच्चे ज्यादातर इसमें एक–दूसरे की कमियां और खामियां लिखते हैं। एक और चीज जो बच्चों ने खुद से ईजाद की, वो ये कि बच्चों को यदि घर में कोई बात परेशान कर रही है तो बच्चे इस बॉक्स के जरिये साझा करते हैं। इसके अलावा एक और बॉक्स का नाम है 'नींद में मेरा सपना'– जिसमें बच्चे सपनों के बारे में लिख कर उसे बॉक्स में डाल देते हैं। इसके बाद वे एक–दूसरे से चर्चा भी करते हैं। और तीसरे बॉक्स का नाम है– 'मुझे कुछ कहना है'– यह भी बहुत कुछ 'मन की बात' वाले बॉक्स की ही तरह है। यदि बच्चों

को शिक्षकों की कोई बात अच्छी नहीं लगती तो बच्चे एक कागज पर लिखकर उस बॉक्स में डाल देते हैं। इन सभी बॉक्स की मदद से सर बच्चों के बारे में काफी कुछ जानकारी जुटा पाए हैं। खासकर उन बच्चों के बारे में जो बहुत कम बोलते हैं। सर की हमेशा यही कोशिश रहती है कि बच्चे हमेशा साथ में मिल–जुलकर काम करें और इसका परिणाम बच्चों में दिखता है। इसके अलावा सर बच्चों को अलग–अलग चीजें करते रहने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। उनमें शामिल है–स्वेटर बुनना (सिलाइयों की सहायता से), मिट्टी के बर्तन बनाना, डायरी लिखना (मासिक और वार्षिक)। कभी–कभी बच्चों के साथ खेलते भी हैं। कैरम, लूडो, क्रिकेट ये सारे खेल बच्चे सर के साथ खेलते हैं। खेल के दौरान लड़के और लड़कियों को समान अवसर मिलता हैं और बच्चों के बीच लड़ाई होने पर पहले तो बच्चे उसे खुद से सुलझाते हैं, वरना सर की मदद भी ली जाती है।

समय–समय पर विद्यालय में कार्यक्रम होते रहते हैं, इनमें हर साल होने वाला वार्षिकोत्सव, विज्ञान मेला, शैक्षिक भ्रमण, 'मन्दाकिनी की आवाज रेडियो स्टेशन पर' बच्चों द्वारा प्रस्तुति और अभी हाल ही में महिला दिवस पर कार्यक्रम आदि। चौकियाल जी का कहना है बच्चों को यदि समय–समय पर अपनी बातों को रखने के लिए मंच मिलता रहे तो बच्चे आगे का रास्ता खुद ही तैयार कर लेते हैं। इन कार्यक्रमों के जरिये भूतपूर्व छात्र को भी विद्यालय में आने का अवसर मिलता है और इसी बहाने वे अपने अनुभव बाकी बच्चों से साझा करते रहते हैं। कुछ दिन पहले उन्होंने अमर उजाला की 'अपराजिता मुहिम' के साथ मिलकर एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें विभिन्न विभागों से आई महिला अधिकारियों ने शिरकत की तथा महिलाओं से जुड़े विषयों पर खुलकर बातचीत की गयी जिसमें महिलाओं की सुरक्षा, अपने अधिकारों के प्रति सजगता, माहवारी से जुड़ी बातचीत शामिल थी। उनकी यह पहल उनमें समाज के संवेदनशील मुद्दों के प्रति सजगता दिखाती है। शिक्षकों को समाज का एक अभिन्न अंग मानते हुए वे अपनी बात रखते हैं कि "एक शिक्षक के जीवन में उनका काफी बच्चों से सामना होता है और बच्चों के जीवन में शिक्षक काफी अहम् भूमिका रखते हैं। ज्यादातर बच्चे अपने शिक्षकों का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं। आपको पता भी नहीं चलता कि कब आपकी कौन सी बात किसी छात्र के जीवन को एक नया मोड़ दे देती है।" साथी शिक्षकों को भी वे प्रोत्साहित करते रहते हैं। उनके विद्यालय में अन्य शिक्षक भी उनके विचारों से सहमत रहते हैं। शिक्षकों के बीच उन्हें 'एक आदर्श शिक्षक' के रूप में जाना जाता है। सर ज्यादा से ज्यादा शिक्षक संगोष्ठी में शिरकत करने के लिए तत्पर रहते हैं और नयी–नयी चीजों को सीखकर अपने विद्यालय में जरूर प्रयोग करते हैं।

(हेमंत चौकियाल की अंकिता डोंगरियाल से हुई बातचीत पर आधारित)

बच्चों के नामांकन बढ़ाने की पहल करता एक स्कूल

विश्वजीत सिंह कुशवाह
सहायक अध्यापक
माध्यमिक विद्यालय ठिबगांव बुजुर्ग
खरगोन, मध्यप्रदेश

प्रधानाध्यापक	–	**राजेश कुशवाह**
सहायक अध्यापिका	–	**वर्षा प्रजापति**
भोजन माता	–	**रक्षा, सेवन्ती, किरन**
नामांकन	–	**113**

इन दिनों सरकारी स्कूल एक तरफ बच्चों की अनुपस्थिति व नामांकन से जूझ रहे हैं और दूसरी ओर बेहतर शिक्षा से। हालांकि इन दोनों चीज़ों में गहरा रिश्ता है। अगर स्कूल में बेहतर सीखना–सिखाना होता है तो वहां बच्चे टिकते हैं। अगर स्कूल वक्त में बच्चों की मनपंसद चीज़ें हों तो फिर वे दोपहर बाद भी रहते हैं। यह मानना है विश्वजीत सिंह कुशवाह का। आदिवासी क्षेत्र के खरगोन जिले के गोगांवा विकास खंड में माध्यमिक विद्यालय ठिबगांव बुजुर्ग के शिक्षक व स्टॉफ ने मिलकर जिस कार्ययोजना को अंजाम दिया है वह अनुकरणीय पहल है। उल्लेखनीय है कि विश्वजीत सिंह कुशवाह 2017 से इस स्कूल में बतौर सहायक शिक्षक पदस्थ हैं। विश्वजीत सिंह कुशवाह को 2016–17 में बच्चों को सीखने–सिखाने के संदर्भ में राज्य स्तरीय पुरस्कार मिल चुका है।

एक स्कूल की संकल्पना में शामिल है बच्चों को आनन्ददायी वातावरण उपलब्ध कराना जिसकी छांव में बच्चों का सीखना–सिखाना बेहतर होता है। विश्वजीत सिंह कहते हैं कि स्कूल में हम बच्चों के लिए वे तमाम साधन–सुविधाएं मुहैया करवाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं जो सीखने–सिखाने के लिए जरूरी हैं। उनका यह भी मानना है कि बच्चों के लिए वे तमाम चीज़ें स्कूल का हिस्सा होनी चाहिए जो वे चाहते हैं, केवल पाठ्यपुस्तकों के भरोसे यह संभव नहीं।

अगर आप ठिबगांव बुजुर्ग स्कूल में जाएं तो वहां की कक्षाएं नीरस व उबाऊ नहीं दिखेंगी। बच्चों की कक्षायें बच्चों द्वारा रची गई सामग्री से ओतप्रोत हैं। एक कमरे में बच्चे कैरम खेलते हुए दिख जाएंगे। वहीं दूसरी कक्षा में बच्चे शतरंज खेलते हुए देखे जा सकते हैं। जब मैं कमरे में घुसा तो एक शिक्षक व एक छात्र शतरंज का खेल खेल रहे थे। बच्चों व शिक्षक के बीच शतरंज एक जरिया बन जाता है आपसी संबंध बनाने का। बाकी तो शतरंज के खेल के जरिए सोचने, रणनीति बनाने के हुनर विकसित होंगे ही।

स्कूल का एक कमरा कबाड़ से जुगाड़ (विज्ञान शिक्षण) को समर्पित है। वाकई यह कमरा अपने नाम को सार्थक करता दिखता है। यह कमरा बच्चों द्वारा रचे गए प्रयोग व टीचिंग लर्निंग मटीरियल से भरा पड़ा है। प्लास्टिक की बोतलों, ढक्कनों, तीलियों, चूड़ियों, चिंयों, आइस्क्रीम की स्टिक से बनाए गए मॉडल व प्रयोग यहां सजाकर रखे गए हैं। जो भी बच्चे निर्मित करते हैं वे स्कूल में प्रदर्शित किए जाते हैं। बच्चों को इस बात की खुशी होती है कि उनकी बनाई चीज़ों को ससम्मान स्थान दिया जाता है। यह बच्चों में आत्मविश्वास भी पैदा करता है।

'पढ़ना' तो पढ़ने से ही आता है। यह कहते हुए विश्वजीत सिंह बताते हैं कि बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर पढ़ने–लिखने के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की गई है। पुस्तकालय बच्चों के लिए स्कूल वक्त में हमेशा खुला होता है। एक तरह से बच्चे ही इस पुस्तकालय का संचालन करते हैं। पुस्तकालय में कम से कम 300 किताबें हैं जिसमें हर तरह की किताबें हैं। बच्चे अपनी मर्जी से किताबें स्वयं ही इश्यू करते हैं और पढ़ते हैं।

संदर्भ से सीखना व संदर्भ में सीखना ही बेहतर होता है। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि वे बच्चों को लिखने के लिए अपने संदर्भ से जोड़ते हैं। बच्चों को दैनिक जीवन की घटनाओं पर लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है। पिछले दिनों जब दिलीप दाहोद्र नामक छात्र ने कहानी लिखी तो उसे बाल विज्ञान पत्रिका चकमक को भेज दिया। चकमक में उस बच्चे की कहानी छपी। उस बच्चे को खुशी हुई जो अन्य बच्चों के लिए प्रेरणा बनी। बच्चे तभी लिखने की ओर अग्रसर हो पाते हैं जब उन्हें कोई बात जरूरी लगती है कि इसे तो लिखना ही चाहिए। बच्चों को ऐसे तमाम अवसर उपलब्ध कराने की कोशिश की जाती है। पढ़ने के लिए कक्षा में एक बोर्ड स्थापित किया गया है जहां बच्चे खुद ही अखबारों के लेख व खबर चस्पां करते हैं। यहां बच्चे अपने मन से लिखकर भी चस्पां करते रहते हैं। विश्वजीत सिंह ने बताया कि बच्चों को एक बार विषय दिया कि वे स्कूल आने में क्या–क्या समस्याएं आती है, इस पर कुछ लिखें। और बच्चों ने लिखा। बच्चों को अब सुझाव दिया कि इसे आप एक शीट पर चित्रात्मक ढंग से प्रस्तुत करें। फिर क्या था! एक छात्रा ने जो संकलन किया उसे यहां देखा जा सकता है। शिक्षक कहते हैं कि मौलिक लेखन तभी संभव होता है जब बच्चों के दिल से आवाज़ निकले और वे उसे लिखें।

शिक्षा सत्र 2018–19 में ठिबगांव स्कूल की पहल पर विज्ञान मेले का आयोजन किया गया जिसमें आसपास के स्कूलों सुरपाला व ठिबगांव खुर्द के बच्चे भी शामिल हुए। इसी प्रकार से स्कूल में नियमित रूप से बालसभाओं का आयोजन किया जाता रहा है जिसमें अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से सहायता मिलती है।

बच्चे कक्षा की चारदीवारी में बैठकर बोर हो जाते हैं। अगर वयस्कों के साथ भी ऐसा रोजाना हो तो हम भी परेशान हो जाएंगे। बच्चे कक्षा की चारदीवारी में मजबूरन ही बैठेंगे। इसका एक और निहितार्थ है। एनसीएफ कहता है कि बच्चों को पाठ्यपुस्तकों से परे ले जाकर कक्षा की चारदीवारी से बाहर की दुनिया से जोड़ने की जरूरत है। इसके लिए हम कोशिश करते रहते हैं। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि जब अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की ओर से हमें एक्सपोजर विजिट के लिए ले जाया गया तो मेरे दिमाग में यह बात आई कि क्यों न हमें भी बच्चों को अपने स्कूल से बाहर ले जाना चाहिए। अक्सर स्कूलों में एक किस्म का प्रतिरोध है कि बच्चों को लेकर बाहर जाना मुश्किल है। कुछ इस तरह की बातें दिमाग में आती हैं कि बच्चों को स्कूल से बाहर ले जाने पर कोई दुर्घटना घट सकती है या कि प्रशासन से इजाजत नहीं मिल सकेगी। लेकिन जैसा कि हमारी शिक्षा की नीतियां अगर कहती हैं तो फिर इसे अपनाने का ही मामला है।

फाउंडेशन की ओर से मुझे कुछ एक्सपोजर विजिट में जाने का मौका मिला तो मुझे एहसास हुआ कि आखिर मैं बच्चों के साथ इसे क्यों नहीं कर सकता! और मैंने ऐसा ही किया। इस वर्ष बच्चों को विकास खंड मुख्यालय पर ले जाकर विविध सार्वजनिक संस्थानों से रूबरू कराने की पेशकश की। इसके लिए सबसे पहले हमने स्टॉफ में बातचीत की और प्रधानाध्यापक ने सहमति दी। हमारे सामने असल चुनौती थी बच्चों के पालकों को राजी करना। चाहे आप कहते रहें कि ग्रामीण माता–पिता अपने बच्चों की ओर ध्यान नहीं देते। लेकिन यह पूरी तौर पर गलत है। इस धारणा का कोई आधार नहीं है।

जब मैं बच्चों के माता–पिता से एक्सपोजर विजिट पर ले जाने के लिए मिलने गया तो उन्होंने मुझसे कईं सवाल किए। बच्चे छोटे हैं, उनकी देखभाल कौन करेगा, बच्चों को कुछ हो गया तो...! मैंने उन्हें विश्वास दिलाया, मैं उनके साथ रहूंगा। अपनी जिम्मेदारी पर बच्चों को लेकर जा रहा हूं। आखिर बच्चों के माता–पिता तैयार हो गए। अगले दिन बच्चों से बातचीत की। बच्चों के साथ मिलकर तैयारी की और अगले दिन हम गोगांवा विकास खंड मुख्यालय पर बस के जरिए पहुंच गए। बच्चों में उत्साह था। हर कोई सहज था। विकास खंड मुख्यालय पर सामुदायिक अस्पताल, थाना, बैंक और विकास खंड शिक्षा कार्यालय पर बच्चे गए और उन्होंने वहां की कार्यप्रणाली को जाना–समझा। बच्चों से विकास खंड शिक्षा अधिकारी ने बातचीत की। यह पहला मौका था जहां विकास खंड शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में बच्चे पहुंचे। विकास खंड शिक्षा अधिकारी के अनुसार उनके कार्यकाल में ऐसा कभी नहीं हुआ कि जो कार्यालय स्कूली शिक्षा को सुचारू रूप से चलाने के लिए बनाया गया है वहां स्कूली बच्चे आएं। बच्चों ने विकास खंड शिक्षा अधिकारी के सामने अपनी मांग रखी कि हमारे स्कूल में गणित के शिक्षक नहीं हैं। आप गणित के शिक्षक की व्यवस्था करें। विकास खंड शिक्षा अधिकारी ने बच्चों को आश्वस्त किया। इसे अनूठी पहल कहा जाना चाहिए।

मैंने पाया कि बच्चे आत्मविश्वास के साथ सहजतापूर्वक सवाल–जवाब कर रहे थे। आखिर सवाल करना भी तो शिक्षा का एक अहम् उद्देश्य है। आगे विश्वजीत सिंह बताते हैं कि अगले दिन बच्चे स्कूल में एक कक्ष में एकत्र हुए और अपने–अपने अनुभवों का आदान–प्रदान किया। बच्चों को अपने–अपने अनुभव लिखने के लिए कहा गया और यह दिलचस्प है कि प्रत्येक बच्चे ने एक्सपोजर विजिट के अनुभवों को लिखा जिनका संकलन स्कूल में रखा गया है।

एक स्कूल में बच्चों के लिए बुनियादी सुविधाएं तो होनी ही चाहिए। पानी, शौचालय और खेलने का मैदान आदि। ये सब ठिबगांव स्कूल में आपको देखने को मिल जाएंगे। पानी चौबीसों घंटे उपलब्ध हो सके इसके लिए स्कूल की ओर से पहल की गई। गांव की सार्वजनिक जल व्यवस्था से स्कूल को जोड़ा गया। पानी की एक टंकी स्कूल के मध्यान्ह भोजन कक्ष में थोड़ा ऊपर को रखी गई ताकि पानी नल के जरिए बच्चों की पहुंच में हो। स्कूल को हरा–भरा करने की जो पेशकश की गई उसमें बच्चों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। स्कूल कैंपस में लगभग 200 से अधिक पौधे लगाए गए जो अब लहलहा रहे हैं। इन पौधों की नियमित देखभाल जरूरी है। इसे बच्चों व स्टॉफ ने अच्छे से समझा और उनकी देखभाल की जाती है। पौधे लगाना तो आसान है मगर उनकी परवरिश का इंतजाम जरूरी है। स्कूल में बच्चे व स्टॉफ के सदस्य मिलकर पौधों की नियमित देखभाल करते हैं। विश्वजीत सिंह कहते हैं कि एक गर्मी का मौसम अगर इन पौधों ने झेल लिया तो इन्हें फिर कोई दिक्कत नहीं होगी। कुछ लोग कहते हैं कि फलदार पौधे लगाने का क्या तुक? स्टॉफ के सदस्य बताते हैं कि फलों मसलन अमरूद, आम व सहजन आदि के पेड़ों से हरियाली तो होगी ही साथ ही फल भी मिलेंगे। क्यों न बच्चे व गांव के लोग फलों का लुत्फ भी उठाएं।

स्कूल में बच्चों का नामांकन बढ़े इसके लिए तो शिक्षकों को ही कोशिश करनी होगी। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि पिछले दो वर्षों से आसपास के फीडर गांवों से सपंर्क किया जाता है। इसके लिए पेंफलेट छपवाकर पालकों तक पहुंचाना, बैनर बनाकर गांव के सार्वजनिक स्थल पर चस्पां करने जैसी कोशिशों के चलते बच्चों का नामांकन बढ़ा है। "जब मैं इस स्कूल में पदस्थ हुआ तो ग्राम सभा में मैंने अपनी ओर से बात रखी थी कि सरकारी स्कूल में बच्चों को जरूर भर्ती करवाना चाहिए। सरकारी स्कूलों में जहां इतनी सुविधाएं आम समाज के बच्चों को दी जा रही है, इसका फायदा उठाना चाहिए।"

पिछले वर्ष की ही तरह इस वर्ष स्कूल की ओर से पेंफलेट का वितरण किया गया। पेंफलेट में शिक्षा विभाग, शासन की ओर से जो सुविधाएं दी जा रही है उनका जिक्र तो किया ही है साथ ही स्कूल में शिक्षक स्टॉफ द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, उनका भी जिक्र है। यह पेंपलेट सरकारी स्कूलों को लेकर बनी उस धारणा को तोड़ता है जो समाज में व्याप्त हैं। ऐसा नहीं कि सरकार की ओर से कोशिशें नहीं हो रही हैं। शासन द्वारा स्कूलों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में भी समाज में सही जानकारी का अभाव है। जो जानकारी समाज में है भी तो वह नकारात्मकता का लबादा ओढ़े हुए हैं। ठिबगांव बुजुर्ग स्कूल का स्टॉफ उन सुविधाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करके एक मिसाल भी रचता दिखता है। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि स्कूल में बच्चों के नामांकन को लेकर किए जा रहे प्रचार–प्रसार को देखते हुए बच्चों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। वे यह भी कहते हैं कि अगर निजी संस्थान अपना प्रचार–प्रसार व विज्ञापन करते हैं तो सार्वजनिक स्कूलों को इसे लेकर क्यों चुप बैठना चाहिए?

– बीईओ, गोगांवा

श्री विश्वजीत सिंह कुशवाह समय के पाबंद हैं। आप बच्चों के मन की बात को पढ़ लेते हैं। आपने स्कूल में बच्चों के लिए अनेक कम लागत के टीएलएम बनाए हैं और उनका इस्तेमाल कक्षा शिक्षण में करते हैं। बच्चों की जिज्ञासा को भलिभांति समझते हुए आप कक्षा–शिक्षण की व्यूहरचना करते हैं। आपने न केवल सीखने–सिखाने को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य किया बल्कि स्कूल में बच्चों के नामांकन बढ़ाने में आपकी महती भूमिका रही है।

– भूपेंद्र सिंह चौहान, विकास खंड शिक्षा अधिकारी, गोगांवा

(विश्वजीत सिंह कुशवाह की कालू राम शर्मा व प्रीति वर्मा से हुई बातचीत पर आधारित)

जैसे कोई सपना जी रहा था मैं

वंशीधर जोशी
प्रधानाध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोहाला
बागेश्वर, उत्तराखण्ड

सहायक अध्यापक – **अशोक कुमार**
भोजन माता – **मोहनी देवी**
नामांकन – **48**

जीवन में कुछ कर गुजरने व विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के बाद मंजिल की ओर कदम बढ़ाते हुए एक शिक्षक की कहानी, जिनका एक मात्र उद्देश्य नौनिहालों का वर्तमान व भविष्य संवारने का रह गया हो, जो मानते हैं कि लक्ष्य की ओर चल पड़ना ही लक्ष्य पाने की शुरुआत होती है, ऐसे ही शिक्षक हैं वंशीधर जोशी जो राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोहाला में कार्यरत हैं।

यह विद्यालय बागेश्वर मुख्यालय से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सड़क से करीब दो किलोमीटर की चढ़ाई चढ़ते हुए हम विद्यालय पहुंचते हैं। इस रास्ते में एक बड़ा सा सुंदर गांव दिखाई देता है जिसका नाम बोहाला है। गांव काफी सुंदर है। रास्ते में चलते हुए बहुत सारे लोगों से परिचय भी होता है एक–दूसरे का हालचाल पूछना आम बात है। पलायन की मार ने इस गाँव को भी नहीं छोड़ा धीरे–धीरे यह गांव भी खाली होता जा रहा है। गांव के बुजुर्गो व बच्चों ने बदलते हालात और गांव के खाली हाते जाने की दास्तान सुनाई तो दुःख और हैरत से मन भर उठा।

गाँव का रास्ता समाप्त होते ही थोड़ी दूरी पर स्थिति है राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोहाला, यहाँ पर वंशीधर जोशी प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। विगत तीन वर्षों से वे इस विद्यालय में सेवा दे रहे हैं, वे इससे पहले विवेकानंद प्राइवेट विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय जांठा में कार्यरत रहे। 2016 में प्राथमिक विद्यालय बोहाला आए तो यहां की स्थिति को देखकर उनका मन उदास हो गया। अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि प्राइवेट विद्यालय में एक कक्षा में 30 से ज्यादा बच्चे रहते थे तो पढ़ाने मे मजा आता था किन्तु यहाँ पर स्थितियाँ उसके उलट थीं। विद्यालय में कुल 11 बच्चे थे। गांव के अधिकांश बच्चे नजदीक के प्राइवेट विद्यालय मे जाते थे। कहीं पर एक कक्षा में तीस बच्चों के साथ काम करना और कहीं पर पूरे विद्यालय में 11 बच्चों के साथ काम करने की शुरुआत करना चुनौती पूर्ण कार्य था।

उन्होंने ने बताया कि गाँव में काफी बच्चे हैं किन्तु वह सरकारी विद्यालय में नहीं आते हैं। इसका क्या कारण है इसकी तह में जाना उनकी जिम्मेदारी बन गई। विद्यालय काफी दूरस्थ है, मूलभूत सुविधाओं का अभाव है, पीने के लिए पानी नहीं है व भवन भी टूटा हुआ है ।बरसात में बच्चों को बैठने के लिए स्थान नहीं मिल पाता है। सामने पहाड़ जैसी चुनौतियाँ अपनी बाहें फैलाए खड़ी थीं और इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अकेले" थोड़ी निराशा भी हुई किन्तु यदि मन में कुछ

करने की ठान ली हो तो सभी कठिनाइयों से निजात मिल जाती है। अब शुरुआत हुई सीढ़ियाँ चढ़ने की, सबसे पहले विद्यालय की सफाई की गई, लगभग तीन–चार दिन साफ सफाई मे लगे। बंद पड़े हुए बक्सों के तालों को खोला गया जिस सामान का उपयोग कर सकते हैं उनको उपयोग के लिए रखा गया। इसके बाद दूसरा काम था समुदाय को

विद्यालय से जोड़ना, उन्हें विश्वास दिलाना कि सरकारी विद्यालय में बच्चे पढ़ सकते हैं और यहाँ के शिक्षकों में इतनी काबिलियत है कि बच्चों को पढ़ा सकते हैं। अब शुरुआत हुई गाँव के प्रत्येक घर में संपर्क करने की साथ मे आंगनबाड़ी शिक्षिका की सहायता ली गई। उनके साथ बैठकर पूरी योजना बनाई गई, और गाँव–गाँव घर–घर जाकर लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया गया। समुदाय को विश्वास दिलाया गया कि यदि आप अपने बच्चों का नामांकन इस विद्यालय में करते हैं तो मेरी जिम्मेदारी है आपको बेहतर रिजल्ट दिलवाने की। आपको वर्ष के शुरुआती दिनों मे बताया जाएगा कि आपका बच्चा कहाँ पर है, वह क्या–क्या जानता है। प्रत्येक बच्चे के बारे मे महीने के अंत में बताया जाएगा कि इस बच्चे में किस प्रकार का बदलाव आया है तथा आने वाले महीने में किस पर काम करने की जरूरत है। इस प्रकार का वादा समुदाय के साथ किया गया, इसमें एक सवाल प्रत्येक अभिभावक से आ रहा था कि प्राइवेट स्कूल के शिक्षक ज्यादा मेहनत करते हैं वहाँ अच्छी पढ़ाई होती है?

सर ने अपनी बातचीत में बताया कि इसका उत्तर तो नहीं दे सकता था किन्तु मैंने कहा कि इस विद्यालय में आने से पहले मैंने विवेकानंद प्राइवेट विद्यालय में पढ़ाया है। मुझे पता है कि प्राइवेट विद्यालय में किस प्रकार की पढ़ाई होती है, आप लोगों को एक बात समझनी पड़ेगी हम वही शिक्षक हैं जो प्राइवेट विद्यालय में पढ़ा चुके हैं और आज हम वही सरकारी विद्यालय में पढ़ा रहे हैं। समुदाय को थोड़ा विश्वास हुआ और उनके विश्वास को कायम रखना अब मेरी जिम्मेदारी बन गई थी। 2017 में यहाँ पर बच्चों की संख्या 11 से बढ़कर 46 हो गई। शिक्षक प्रत्येक बच्चे की जिम्मेदारी लेने लगे। प्रत्येक बच्चे के बारे लिखना शुरू कर दिया। महीने के अंत में अभिभावकों के साथ बच्चों के सीखे हुए को साझा किया। बच्चे कैसे सीखते हैं? इसका विवरण अभिभावकों को बताया गया। धीरे–धीरे समुदाय का विश्वास बढ़ने लगा। वैसे तो शिक्षा में प्रतियोगिता करना नकारात्मक है किन्तु यदि लोगों का इस बात पर विश्वास है कि प्रतियोगिता होनी चाहिए और सरकारी विद्यालय की अपेक्षा प्राइवेट विद्यालय काफी बेहतर हैं। आज हमारी प्रतियोगिता प्राइवेट विद्यालय से है।

समुदाय को विश्वास दिलाया गया यदि हमारी योग्यता अन्य विद्यालय से कम रही तो आप अपनी मर्जी से अपने बच्चों का नामांकन किसी भी विद्यालय में करवा सकते हैं इसके लिए हम आपको कभी नही रोकेंगे। किन्तु एक बार आपको हमें यह मौका देना पड़ेगा। शिक्षक विद्यालय जाते हुए या छुट्टी के बाद घर आते हुए अभिभावकों से मिलते हैं। बच्चों के बारे में बातचीत करते

हैं आज स्थिति इस प्रकार है कि– जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती है वैसे ही अभिभावक अपने घर से बाहर निकल जाते हैं और अपने बच्चों के बारे मे चर्चा करते हैं। छुट्टी के बाद भी शिक्षकों को अभिभावकों से बातचीत करने मे काफी समय लगता है। कभी–कभी तो एक घंटे से अधिक समय लग जाता है। इस सब प्रक्रिया मे आंगनबाड़ी की शिक्षिका ने मेरी बहुत सहायता की। यदि उनकी मदद नहीं मिलती तो आज मैं अपने काम को इतने अच्छे तरीके से नहीं कर पाता। छुट्टी के बाद जितना अतिरिक्त समय मै बच्चों के साथ विद्यालय में रहता था उतना ही समय वे भी विद्यालय में रुकती और बच्चों के पढ़ने–लिखने में मदद करती। आज आंगनबाड़ी शिक्षिका का उद्देश्य भी बच्चों का भविष्य संवारना बन गया है।

उन्होंने ने 2017 मे वार्षिक उत्सव रखा जिसमें विभिन्न लोगों को आमंत्रित किया गया तथा समुदाय के लोगों को बुलाया गया। बच्चों ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए, स्वतंत्र रूप से अपनी बात को लोगों के सामने रखा। समुदाय को अच्छा लगा कि उनके बच्चे इतने लोगों के सामने अपनी बात रख पा रहे हैं। इतने दूरस्थ गाँव में ये बच्चे इतने विश्वास के साथ अपनी बात कह पा रहे हैं ये किसी उपलब्धि से कम नहीं था। इन बच्चों को देखकर मेरी आँखें छलक पड़ी शायद मेरा उद्देश्य पूरा हो रहा था इन नन्हें बच्चों के लिए जो सपना मैने देखा था उसको अपने सामने पूरा होते हुए देखना मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। एक शिक्षक के लिए इससे से बढ़कर क्या उपहार हो सकता है कि उसके बच्चे अपनी बात कह पा रहे हैं। इस गाँव मे कुछ ही समय पहले सड़क बनी है कुछ बच्चों को तो यह भी पता नही था की सड़क पर गाड़ी कैसे चलती है, या गाड़ी क्या होती है।

वार्षिक उत्सव के दिन मैंने अतिथियों एंव समुदाय के लोगों के सामने प्रत्येक बच्चे के बारे में अपना लिखा हुआ रिकॉर्ड प्रस्तुत किया, जिसमे था कि बच्चा जब विद्यालय मे आया था तो वह कैसा था और कुछ समय के उपरांत बच्चे में क्या बदलाव आया। एक साल में बच्चे ने क्या–क्या सीखा है। इस बात से समुदाय काफी प्रभावित हुआ और 2018 शैक्षणिक सत्र में अभिभावकों ने अपने बच्चों का प्राइवेट स्कूल से निकालकर इस विद्यालय में नामांकन किया। करीब 35 बच्चों का इस सत्र में

नामांकन किया गया। विद्यालय में अब छात्र/छात्रा संख्या 46 हो गई। एकल होने के कारण लगातार आंगनबाड़ी शिक्षिका का सहयोग मिलता रहा और सीखन–सिखाने की प्रक्रिया बेहतर होती गई। सभी बच्चों के पास व्यक्तिगत रूप से जाना होता है। यह काफी बड़ी चुनौती होती है, किन्तु छुट्टी के बाद भी अतिरिक्त समय इन बच्चों को दिया जाता है। बच्चे समय–समय पर होने वाली ब्लॉक स्तरीय व जनपद स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हैं और हर बार प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करते हैं।

सत्र 2018 में उन्होंने ने समुदाय की मदद से बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न विषयों पर जानकारी एकत्र की ताकि अभिभावकों को पता हो कि बच्चों के सीखने–सिखाने में उनकी भूमिका व उनके अनुभव कितने महत्वपूर्ण हैं। यदि वह खुद को पढ़ा–लिखा नहीं मानते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह शिक्षा में योगदान नहीं दे सकते हैं। उनके अनुभव बच्चों के सीखने में मददगार साबित होंगे। बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न विषयों की जानकारी का विश्लेषण किया। उसे व्यवस्थित किया और एक दिन 'बाल मेले' का आयोजन किया जिसमें समुदाय के लोगों को बुलाया गया उनको बताया गया कि बच्चों के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।

समुदाय को काफी अच्छा लगा जब बच्चों ने बताया कि आपके द्वारा प्राप्त जानकारी को हमने चार्ट के इस कोने पर लिखा है। समुदाय को विद्यालय से कैसे जोड़ सकते हैं, इसका एक उदाहरण यहाँ देखने को मिलता है। वे एकल शिक्षक होने के कारण प्रशिक्षण में प्रतिभाग नहीं कर पाते हैं किन्तु एक दूसरे शिक्षक की सहायता से अपडेट होने का उन्हें मौका मिला है। शिक्षक, शिक्षिका व समुदाय की कठिन मेहनत व लगन के कारण यहां पर बच्चों की संख्या 48 हो गई है। बच्चे पुस्तकालय में अपने पसंद की किताबें, कहानियां, कविताएं पढ़ते हैं, समूह में कार्य करते हुए सीखते हैं। विद्यालय में बच्चों के लिए पीने के लिए पानी एंव बैठने के लिए कुछ कक्षा–कक्ष हैं जो काफी व्यवस्थित एंव आकर्षक हैं। ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन अवकाश में बच्चों के सीखने–सिखाने के लिए कैम्प का आयोजन किया जाता है, छुट्टी के बाद अतिरिक्त कक्षाएं संचालित की जाती हैं।

''जब से वंशीधर सर आए हैं तब से हमारे बच्चों में बहुत बदलाव हुये हैं, उनके आने से विद्यालय का माहौल ही बदल गया है। शिक्षक काफी मेहनती हैं मन लगाकर काम करते हैं। जब भी गाँव मे कोई समारोह होता है उसमें शिक्षक प्रतिभाग करते हैं। अपने जीवन काल में इतने मेहनती शिक्षक हमने

कम देखे हैं। वास्तव में शिक्षक क्या और कौन होता है यह हमें वंशीधर जी से सीखने को मिला। जैसे हमारे बच्चे इस विद्यालय में सीख रहे हैं वैसे प्राइवेट विद्यालय में नहीं सीख सकते हैं।

– गिरि सिंह उपाध्याय, अभिभावक

वंशीधर जी का शिक्षक का काम करने का तरीका अन्य शिक्षकों से थोड़ा अलग है और इसका अलग होने का कारण यह है कि जब भी कोई बच्चा इस विद्यालय में प्रवेश लेता है तो शिक्षक उसके परिवार, माता–पिता व उसके बचपन के बारे मे पूरा रिकॉर्ड लिखते हैं, कहाँ पर बच्चे को सहायता की जरूरत है, किन–किन पक्षों पर काम करने की जरूरत है। इसके बाद इन मुद्दों पर योजना बनाई जाती है और वह रिकॉर्ड आपको दीवार पर कहीं टंगा हुआ मिल जाएगा। जब बच्चों के साथ योजना के अनुसार काम किया जाता है तो उसकी प्रोग्रेस रिपोर्ट बनाई जाती है। उनका व्यक्तित्व सहज है, बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार है, समुदाय के साथ काफी घनिष्ठ संबंध हैं जो उनका मजबूत पक्ष है और यह बातें उनको अन्य शिक्षकों से अलग करती हैं। उनकी मेहनत का परिणाम रहा कि इस दूरस्थ विद्यालय के बच्चे विभिन्न ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं मे प्रथम एंव द्वितीय स्थान पर आते हैं। बच्चों की संख्या काफी बढ़ी है। पहले की अपेक्षा आज स्कूल की व्यवस्था एंव बच्चों मे काफी बदलाव आया है।

–हेम लोहानी, बी.आर.पी.

(वंशीधर जोशी की मीमांशा गोदियाल से हुई बातचीत पर आधारित)

मुद्रक तथा प्रकाशक प्रदीप चन्द्र डिमरी द्वारा अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट, आनंद टावर, 2 सहस्त्रधारा क्रांसिग, अधोईवाला, देहरादून-248001, उत्तराखण्ड की ओर से प्रकाशित एवं शब्द संस्कृति प्रकाशन प्रा.लि., 117 चुक्खूवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा मुद्रित।

सम्पादक : कैलाश चन्द्र काण्डपाल

''उम्मीद जगाते शिक्षक'' अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का लोक शिक्षा व्यवस्था में कार्यरत समर्पित और जुनूनी शिक्षकों के कामों को जानने का प्रयास है जिससे कि उनके कार्यों को सभी तक पहुंचाया जा सके। उनके काम साधारण से प्रतीत होते हैं लेकिन यदि इनको गहराई से देखा जाय तो शिक्षा में योगदान के रूप मे इनका असर व्यापक है। वे उपलब्ध सीमित संसाधनों से चुनौतियों को भी चुनौती देते हैं।

उम्मीद जगाते शिक्षक के अगले अंक हेतु आपसे अनुरोध है कि शिक्षकों की उम्मीद जगाती स्टोरी, 2000 से 2500 शब्दों में अच्छी गुणवत्ता के फोटोग्राफ्स (गतिविधियों और शिक्षक साथी के एक क्लोजअप फोटो सहित) तथा एसएमसी सदस्यों/स्कूल के अन्य शिक्षकों/शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों की टिप्पणियों सहित, 30 सितम्बर 2020 तक निम्न पते पर भेजें।

'उम्मीद जगाते शिक्षक' आनद टॉवर, 2 सहस्त्रधारा रोड, सहस्त्रधारा क्रासिंग के समीप, देहरादून, उत्तराखंड 248001

या

ujs@azimpremjifoundation.org **पर ई-मेल करें.**

 # उम्मीद जगाते शिक्षक के अभी तक प्रकाशित अंकों को निम्नलिखित लिंक पर पढ़ा जा सकता है
https://azimpremjifoundation.org/foundation-publication

निःशुल्क वितरण हेतु

Towards a just, equitable, humane and sustainable society